Vol.20, Issue 3 | Annual Subscription ₹420

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

January 2021

रोटरी समाचार

INDIA
www.rotarynewsonline.org

Rotary

FEEL
THE
ENERGY
12-16 JUNE 2021 | TAIPEI, TAIWAN
Register today at convention.rotary.org | #Rotary21
Rotary
TAIPEI
2021

विषयसूची

10

10 आशा और अवसर का मौसम
रो ई निदेशक भरत पांड्या कोविड-19 संकट पर अपने विचार साझा करते है।

20

20 एक शोक संतप्त दंपत्ति चार अन्य को जीवनदान देता है
रोटेरियन बिक्कीना चक्रवर्ती और भानु द्वारा उनके दिमागी तौर पर मृत बेटे श्रीकांत के अंग दान करने का एक मार्मिक वृत्तान्त।

22

22 अंग्रेजी भाषाई थिएटर भारतीय रंगमंच की भव्यता को अभिव्यक्त नहीं कर सकता: विजय पादकी
बैंगलोर लिटल थिएटर के संस्थापक न्यासी के साथ एक साक्षात्कार, जो एक रोटेरियन भी है।

30 आभासी बैठकें, नए सामान्य... रोटरी ई-क्लब रास्ता दिखाता है
रो ई अध्यक्ष होल्गर नैक और सुज़ैन द्वारा संबोधित वैश्विक ई-क्लबों की बैठक में छह महाद्वीपों के 28 देशों के अस्सी ई-क्लबों ने लिया हिस्सा।

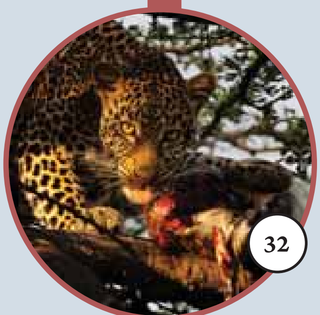

32

32 जब तस्वीरें बोलती है
रो ई मंडल 3040 के इंटरेक्टरों द्वारा आयोजित एक फोटो प्रतियोगिता को मिली वैश्विक भागीदारी।

44

44 अफगानिस्तान: जवाब से ज्यादा सवाल
2005 में एक दौरे के बाद युद्ध से तबाह हुए देश से एक वृत्तान्त।

58 रोटरी क्लब बोलपुर शांतिनिकेतन ने खोला वयस्क साक्षरता केंद्र
100 वयस्क निरक्षरों को शिक्षित करने के लिए रोटेरियनों ने दो गांवों में साक्षरता केंद्र खोले।

62

62 मोहम्मद रफ़ी एक पूर्ण गायक
उन्हें बॉलीवुड संगीत का स्वर्ण-मान समझा जाता था।

कवर पर: रो ई मंडल 3040 के इंटरेक्टरों द्वारा आयोजित ग्लोबल ग्रीन फोटो प्रतियोगिता से एक बंदर और उसके बच्चे की पुरस्कार विजेता तस्वीर।

चित्र : इंटरेक्टर विशाल नवीन।

चेन्नई के फूल विक्रेता हमारी मदद के हकदार है

चेन्नई के फूल विक्रेताओं पर कवर स्टोरी बहुत ही अच्छी तरह लिखी गई थी! यह मुझे चेन्नई की फूल कन्याएं नामक एक विशेष परियोजना को करने के लिए प्रेरित करता है। देखते है कि क्या समान विचारधारा वाले रोटेरियन इसमें शामिल हो सकते है।

डॉ बी दक्षायिनी,
रोटरी क्लब मीनम्बक्कम - मंडल 3232

दिसंबर अंक प्रशंसा का हकदार है क्योंकि यह गरीबों की दुर्दशा एवं लॉकडाउन के दौरान उनके द्वारा झेली गई कठिनाइयों को उजागर करता है। मुझे यकीन है कि हमारे पाठक जो अपने आरामदायक अपार्टमेंट से बाहर निकलते है अब हमारे फूल विक्रेताओं को अलग ढंग से देखेंगे और उनके साथ सम्मान एवं सहानुभूति का व्यवहार करेंगे। अगर खरीदार मोलभाव किए बिना उनके द्वारा मांगी गई कीमत चुका देंगे, तो इससे अपने आप ही बहुत बड़ी मदद हो जाएगी।

अन्य अच्छे लेखों में शामिल है PRIP के आर रविन्द्रन की टीआरएफ कोष के लिए अपील, और उनके द्वारा स्पष्ट रूप से बताई गई विभिन्न श्रेणियाँ। गुजराती व्यंजनों को तैयार करने पर लिखे गए लेख से हमारे परिवार की महिलाएं बहुत प्रसन्न थी।

नन नारायणन
रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट - मंडल 3000

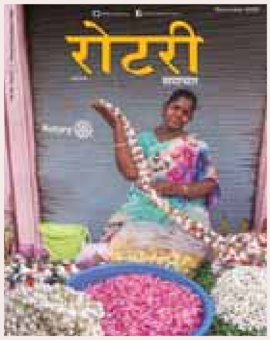

चेन्नई के फूल विक्रेता पर खींची गई कवर तस्वीर साधारण परंतु आकर्षक है और किरण ज़ेहरा द्वारा तस्वीरों के साथ लिखी गई कवर स्टोरी मर्मभेदी है। रो ई अध्यक्ष होल्गर नैक का संदेश हमें साहस के साथ आगे बढ़ने की सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है क्योंकि इस महामारी में उनके सामने अनेक नए अवसर आए है और वह वर्ष 2020 को रोटरी की ताकत के वर्ष रूप में चिह्नित करते है।

संपादक रशीदा भगत कोविड के बाद कम आय वर्ग के लोगों के आर्थिक पुनर्वास की मांग करती है, जिसके लिए माइक्रोफाइनैन्स एक उचित उपाय होगा। रोटरी क्लब पुणे साउथ, जिसने अपने 50 वर्ष पूरे कर लिए है, के द्वारा कार्यान्वित विभिन्न प्रमुख परियोजनाओं के बारे में पढ़कर बहुत खुशी हुई। के आर रविन्द्रण द्वारा लिखित *कोविड-बाद की दुनिया में रोटेरियनों के समक्ष चुनौती एवं अवसर, और रैलियाँ, जागरूकता अभियान विश्व पोलिओ दिवस को चिन्हित करते है* जैसे सभी लेख पढ़ने योग्य है।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि रोटरी पत्रिकाएं 129 देशों में 25 भाषाओं में प्रकाशित हो रही है। मन्ना डे पर लेख अनुकरणीय था। कुल मिलाकर, दिसंबर अंक बहुत ही आकर्षक है और उनके अच्छे काम के लिए संपादकीय हमारी बधाई की अधिकारी है।

फिलिप *मुलाप्पोने एम टी*
रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211

दिसंबर अंक में संपादक का संदेश आँखें खोल देने वाला है, जिसमें रोटेरियनों, जिन्होंने बहुत से कोविड राहत कार्य किए है, से गरीबों के लिए आर्थिक राहत और पुनरूद्धार का आग्रह किया गया है।

चेन्नई के फूल विक्रेताओं और इस महामारी के दौरान उनकी दुर्दशा पर कवर स्टोरी के लिए किरण को बधाइयाँ। मन्ना डे पर एस आर मधु की रिपोर्ट और रोटेरियनों के महामारी राहत कार्यों पर वी मुथुकुमारन का लेख दोनों ही शानदार थे। अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए टीम रोटरी न्यूज को बधाइयाँ।

डेनियल चित्तिलापिल्ली
रोटरी क्लब कल्लूर - मंडल 3201

बढ़िया, रोटरी क्लब पुणे साउथ!

समुदाय की सेवा करने और आसपास के लोगों की ज़िंदगियों को परिवर्तित करने के 50 स्वर्णिम वर्षों को पूरा करने पर रोटरी क्लब पुणे साउथ को बधाइयाँ। सफाई कर्मियों को नैतिक समर्थन देकर और उपयोगिता किट प्रदान करके सम्मानित करना एक उल्लेखनीय परियोजना है। इस परियोजना ने *उद्योगक मित्र* के माध्यम से समुदाय को सशक्त बनाया है जिसने बकरी के दूध के साबुन बनाने और उसका विपणन करने में चरवाहों को प्रशिक्षित किया है। इसके अलावा, उन्होंने इथियोपिया में डॉक्टरों और मेडिकल छात्रों को प्रशिक्षित किया है और स्वर्ण जयंती वर्ष में गरीब लड़कियों की उच्च शिक्षा में मदद करने के लिए सावधि जमा की शुरुआत की है। रोटरी क्लब पुणे साउथ के रोटेरियनों को हमारी हार्दिक बधाई; क्लब को और अधिक अभिनव तरीकों से समुदाय की सेवा करने के लिए अपनी यात्रा जारी रखने दें।

वीरन्ना ए हुग्गी
रोटरी क्लब शिमोगा - मंडल 3182

दिसंबर अंक में दो लेखों को पढ़ना बहुत ही दिलचस्प था। पहला, एस आर मधु द्वारा मन्ना डे पर लिखा गया लेख, जिन्होंने 4,000 से अधिक गाने गए और जिन्हें उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिए लता मंगेशकर से प्रशंसा मिली। एक उत्कृष्ट जीवनी के लिए लेखक को मेरा अभिवादन।

दूसरा लेख रोटरी क्लब पुणे साउथ ने ज़ोरदार धमाके के साथ 50 वर्ष पूर्ण किए ध्यान देने योग्य है क्योंकि इसने स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा और कौशल जैसे क्षेत्रों को शामिल करने वाली अनेक परियोजनाएं की है। क्लब को मेरा सलाम।

डॉक्टर पोन मुथइया,
रोटरी क्लब आडुदुराई
मंडल 2982

नव वर्ष के लिए रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक के संदेश ने वर्ष 2020 के बारे में मेरी पूरी सोच को बदलकर रख दिया है। सभी रोटेरियनों को उन्होंने कितना शानदार संदेश दिया है। उन्होंने समझाया कि कैसे जब पूरी दुनिया थम गई थी, रोटरी तब भी सक्रिय थी। बल्कि हम प्रगतिशील होते जा रहे है।

डॉ महेश कावले,

रोटरी क्लब कारैकल सेंटेनियल - मंडल 2982

नवंबर अंक की कवर स्टोरी *एक समृद्ध भारत के लिए सामुदायिक खेती* वाकई में प्रेरक थी। मयंक गांधी का कार्य सराहनीय एवं आश्चर्यजनक है, विशेषरूप से विमुद्रीकरण के बाद के दिनों में। उनके कठिन परिश्रम ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बदल कर रख दिया है। उन्हें सलाम।

विनायक एन उपाध्ये

रोटरी क्लब औरंगाबाद - मंडल 3132

नवंबर अंक में, रोटरेकटर जया सागर पर लेख को पढ़ना रोचक था जिन्हें रोटरी क्लब मनाली, रो ई मंडल 3070 से मदद मिली थी। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि यूके में उच्च शिक्षा हासिल करने के लिए मनाली क्लब ने उन्हें एक उच्चस्तरीय कंप्यूटर दान किया है। साथ ही, डीजी दविंदर सिंह ने उनके लिए ब्रिस्टल के रोटेरियनों से संपर्क करने की व्यवस्था की है; कितना अद्भुत है कि इस प्रकार से इस रोटरेकटर की मदद की गई।

इस अद्भुत काम के लिए क्लब अध्यक्ष जी सी ठाकुर और उनके दल को सलाम। इस परियोजना के लिए डीजी सिंह के प्रयास प्रशंसनीय है। आइए हम रोटरेकटरों को यह एहसास कराए कि जरूरत पड़ने पर रोटरी उनकी मदद के लिए मौजूद है।

एन जगथीसन

रोटरी क्लब एलुरु - मंडल 3020

एक प्रेरक सच्ची कहानी

झऊॠ राजन देशपांडे का लेख *(एक रोटेरियन डॉक्टर कोरोना वायरस के साथ अपने संघर्ष को याद करते है)* ना केवल महामारी को हल्के में लेने की चेतावनी थी, बल्कि एक प्रेरक सच्ची कहानी भी थी। उन्होंने घटनाओं को एक सरल तरीके से याद करते हुए यह सुनिश्चित किया कि पाठक स्थिति से अच्छी तरह जुड़ पाए। यह लेख उचित रूप से बताता है कि महामारी ने लोगों की दैनिक ज़िंदगियों पर गहरा असर डाला है और स्वास्थ्य पेशेवरों द्वारा सावधानी बरतने के बावजूद भी उन्हें इस इन्फेक्शन के होने का खतरा अधिक है। रोटेरियनों को आशा की एक उजली किरण दिखाते हुए और मिसाल पेश करते हुए, देशपांडे प्रियजनों के साथ समय बिताने और हमारे सपनों को पोषित करने को महत्व देते है, जो रोटरी का एक मुख्य मूल्य भी है। यह लेख हमारे जीवन को महान भावना और जुनून के साथ जीने की एक बड़ी प्रेरणा था।

डॉक्टर जयशेखरन वी पी

रोटरी क्लब पय्यानूर - मंडल 3262

सबसे पहले, मैं संपादक रशीद भगत को इतने सारे उत्कृष्ट लेखों के साथ इतनी खूबसूरत मासिक पत्रिका लाने के लिए बधाई देना चाहता हूँ। नवंबर अंक में, झऊॠ डॉक्टर राजन देशपांडे ने कोविड वायरस की गंभीरता और इस बात को वर्णित किया है कि कैसे वह संक्रमित होने के बाद मौत के शिकंजे से बचकर वापस आए। मैं कोरोना से ठीक हुए उन सक्षम लोगों से अनुरोध करना चाहूँगा कि वे जीवन के प्रति आभार प्रकट करने के लिए प्लाज़्मा दान करें।

पीडीजी एन के मिश्रा - मंडल 3262

जानकारीपूर्ण प्लस

रोटरी न्यूज प्लस अच्छा और हमेशा की तरह जानकारीपूर्ण। संपादकीय टीम को शुभकामनाएं।

पीडीजी अरुण कपूर - मंडल 3070

अपने स्वास्थ्य आंकड़ों को जाने

रोटरी क्लबों को लोगों में नियमित रूप से वजन, बीपी और रक्त शुगर की जांच करने के लिए ङ्गअपने आंकड़ों को जानिएफ शिविर का आयोजन करना चाहिए और अपने तीन मुख्य स्वास्थ्य आंकड़ों को जानने हेतु हर वयस्क को प्रेरित करना चाहिए। ये शिविर सस्ते और आयोजित करने में आसान होते है।

शिविरों के दौरान, सही आँकड़े होने के महत्व से संबंधित स्वास्थ्य साहित्य - बीपी 120/80, 25 से कम बीएमआई, भूखे पेट रक्त शर्करा 100 से कम और दोपहर के बाद की रक्त-शर्करा 140 - पर जोर दिया जाना चाहिए। आइए हम एक स्वस्थ जीवन शैली के सुझावों के साथ मधुमेह, बीपी, हृदय रोग, स्ट्रोक और गुर्दे की विफलता को नियंत्रित करने के लिए सरल युक्तियों वाली पुस्तिकाएं वितरित करें।

गोविंददास अग्रवाल

रोटरी क्लब बेलूर - मंडल 3291

आशा की एक किरण

अपने संपादकीय के संदर्भ में, हमें उम्मीद है कि रोटेरियन वित्तीय संस्थानों और गरीब लाभार्थी के बीच एक पुल के रूप में कार्य कर सकते हैं। वे गरीबों को प्रशिक्षित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है और गरीबों की आजीविका में सुधार के लिए स्थानीय बैंक और सर्कार के साथ साझेदारी कर सकते है।

गोविंद शर्मा

रोटरी क्लब खंडवा - मंडल 3040

We welcome your feedback. Write to the Editor:
rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com.
Mail your project details, along with hi-res photos,
to **rotarynewsmagazine@gmail.com**

Messages on your club/district projects, information and links on zoom meetings/ webinar should be sent only by e-mail to the Editor at **rushbhagat@gmail.com** or **rotarynewsmagazine@gmail.com** WHATSAPP MESSAGES WILL NOT BE ENTERTAINED.

Click on **Rotary News Plus** in our website
www.rotarynewsonline.org to read about more Rotary projects.

रणनीतक योजना क्लबों के लिए महत्वपूर्ण

आखिरकार जनवरी आ गई। चूंकि हम 2021 की प्रतीक्षा में है, हमारी सोच को इन 365 दिनों के अंत तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। क्या आप आगे का सोच रहे है कि आप 2022, 2023 और उससे आगे क्या कर रहे होंगे?

मुझे लगता है कि प्रत्येक रोटरी क्लब के लिए साल में कम से कम एक बार रणनीतिक बैठक करना महत्वपूर्ण है। पूर्व रो ई निदेशक ग्रेग यांक, जिन्हें अपनी योजनाओं पर क्लबों के साथ काम करने का बहुत अनुभव है, अपना दृष्टिकोण साझा करते है।

रोटरी सहित जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने के लिए योजना बनाना आवश्यक है, और हम हर साल इसमें बेहतर हो रहे है।

रोटरी क्लब के लिए रणनीतिक योजना काम करती है। मैंने कई क्लबों का मार्गदर्शन करते हुए उनके साथ काम करके ब्लूप्रिंट बनाने में उनकी मदद की है, जो एक बहुवर्षीय योजना होती है जिसमें बुनियादी सवालों के जवाब होते है: हमारे क्लब के लिए हमारी क्या योजना है? मेरी नज़र में सबसे अच्छी योजनाएं वे है जो केंद्रित होती है, जब कोई क्लब अपने संसाधनों को अपने सर्वोत्तम अवसरों पर केंद्रित करता है। आपका रोटरी क्लब अपने सदस्यों और जिस समुदाय की वह सेवा करता है उसके लिए सब कुछ नहीं कर सकता है; इसके पास सीमित मानव, वित्तीय और समय संसाधन है। अपने सदस्यों के लिए वांछित मार्ग की रूपरेखा तैयार करने के लिए एक सफल योजना परिसंपत्तियों एवं परिसीमाओं के कारकों को सम्मिलित करती है।

अपने क्लब के साथ विचार-विमर्श करके एक बहुवर्षीय रणनीतिक योजना बनाना शुरू करें, पूछे कि अगले दो-तीन वर्षों के लिए हमारी पहल और प्राथमिकताएं क्या है? जिन लक्ष्यों को आप प्राप्त करना चाहते है उनके लिए विशिष्ट, ठोस और मापने योग्य कार्यवाही-उन्मुख भाषा का उपयोग करके अपने उत्तरों को दस्तावेज़ित करें।

इसके बाद, तीन से पांच प्राथमिकताओं वाले मूल सेट में अपनी पहल को सीमित करें। आपका क्लब तब प्रत्येक पहल के लिए विशिष्ट उद्देश्यों को विकसित करेगा, जिसमें इन बातों की रूप रेखा होगी कि कौन शामिल होगा, उपलब्धि के प्रमुख मील के पत्थर कौन से होंगे, कैसे प्रगति को ट्रैक किया जाएगा, और उन्हें पूरा करने की समयसीमा क्या होगी। अपनी योजना को छोटा और सरल रखें।

फिर जाइए और उन्हें पूरा कीजिए। रोटरी के पास क्लबों को उनकी योजना बनाने में सहायता करने हेतु एक ठोस टेम्पलेट है, जिसे आप my.rotary.org/document/strategic-planning-guide पर देख सकते है।

हम अपने क्लबों को नई चर्चाओं और विचारों के साथ समृद्ध और जीवंत बनाना चाहते है। लेकिन हम विभिन्न पृष्ठभूमियों, उम्र और अनुभवों के विभिन्न पेशेवरों को कैसे आकर्षित करते हैं, जो हमारी तरह ही अखंडता की एक मजबूत भावना लेकर चलते है?

रणनीतिक योजना के माध्यम से, हम अपने क्लब की प्रकृति और उसके सदस्यों और समुदाय को प्रदान किए जाने वाले मूल्य को परिभाषित करने के लिए इस प्रश्न का पता लगाते हैं। प्रत्येक क्लब अलग है, और प्रत्येक क्लब का मूल्य अद्वितीय होगा। नियोजन प्रक्रिया के दौरान, क्लबों को यह भी पता चल सकता है कि कुछ गतिविधियाँ जो वे करते थे अब प्रासंगिक या आकर्षक नहीं है।

ग्रेग यांक
2017-19
रो ई नदेशक

एक बार जब आपका क्लब एक रणनीतिक योजना बना लेता है, फिर समय कार्यवाही करने और आवश्यक परिवर्तनों को पूरा करने का होता है। जब हम ऐसा करते है – जैसा कि हम जीवंत और सक्रिय क्लबों में सदस्यों को शामिल करते है जो न केवल मज़ेदार होते है बल्कि अपने समुदायों को उन परियोजनाओं के साथ सेवा प्रदान करते है जिनका वास्तविक और स्थायी प्रभाव होता है – तब हमारे क्लब मजबूत होते है। और जब हम यह जान लेते है कि हमारे अपने क्लबों को क्या विशिष्ट बनाता है और हमारे सभी प्रयासों में उन प्रमुख मूल्यों अनुसरण करते है, तो रोटरी हम सभी के जीवन को समृद्ध बनाने का अवसर प्रदान करती है।

होल्गर नेक
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

संपादक
का संदेश

इस महामारी से हमने क्या सीखा

मेरी याददाश्त में, अभी तक का सबसे ख़ौफ़नाक, विध्वंसकारी, भयावह और अनिश्चितता वाला वर्ष जिस तरह समापन की ओर बढ़ रहा है, मुझे नहीं लगता कि इस दुनिया में मुट्ठी भर लोग भी 2020 के अंत को करीब आते देख दुखी होंगे। Time मैगज़ीन के दिसंबर अंक के कवर पर मोटे अक्षरों में 2020 छपा है और इस को काट रहा एक विशाल क्रॉस बिलकुल दुरुस्त इज़हार है। ठीक उसी समय, विश्वसनीय और सुरक्षित वैक्सीन के रूप में जब दुनिया को आशा की किरणें नज़र आ रही थीं, हमें कोविड -19 संक्रमण से प्रतिरक्षित करने के लिए, तभी यूरोप से, विशेषकर यूनाइटेड किंगडम से कोरोना वायरस के नए स्वरुप, संभवतः बेहद संक्रामक और अधिक खतरनाक म्युटेंट की खबर आई। एक बार फिर, आंशिक लॉकडाउन, यूके से उड़ानों पर प्रतिबंध, हाल ही में वहां से आए लोगों का कोरोना ही नहीं बल्कि उसके नए रूप का भी परीक्षण, इन सब की कवायद शुरु हो गई है। वो भी उसी वक़्त जब नया साल कुछ उम्मीद जगा रहा था, क्षितिज पर फिर से चिंता के बादल मंडराने लगे हैं।

और फिर भी, 2020, इस निराशाजनक वर्ष ने हम सभी को अपने जीवन में ठहर कर, अपने जीवन और जीवन शैली पर चिंतन करने का मौक़ा दिया है। यह साल अनगिनत कहानियों से भरा पड़ा था, आशा, साहस, उदारता, करुणा, निःस्वार्थ सेवा और ढेर सारे लोगों के मदद के जज़्बे की, जो संक्रमण का जोखिम उठा कर भी अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकले ताकि गरीबों और जरूरतमंदों की मदद कर सकें। जिस तरह से भारतीयों ने इसका जवाब दिया ... सूरत की आवासीय कॉलोनियों की महिलाओं से ले कर, जिन्होंने स्वेच्छा से हर रोज़ 5-6 अतिरिक्त रोटियां बनाई, इकट्ठी कर फंसे हुए प्रवासी मजदूरों में वितरित की, उन लोगों तक, जिन्होंने, बेघर और फंसे हुए लोगों का पेट भरने के लिए, अपने दिल और पर्स खोल कर रख दिए थे, बहुत सारे रोटरियनों सहित, इसने मानवता में हमारे विश्वास को पुन: स्थापित किया है।

तो नया साल हमारे लिए क्या लाएगा? क्या वो बेहतर होगा या इस से भी खराब होगा? वैसे, हमारे पास कोई क्रिस्टल बॉल नहीं है, इस ग्रह का भविष्य जानने के लिए। लेकिन महामारी, और इस छोटे से वायरस के अत्यंत भयानक और ज़बरदस्त खौफ ने इतना तो ज़रूर किया है कि इस भागती दौड़ती और अमूमन दिशाहीन ज़िंदगी, जिसका उद्देश्य हमारे करियर में नए लक्ष्य प्राप्त करना और बैंक बैलेंस बढ़ाना है, ने रुककर हमें सोचने पर मजबूर कर दिया है। रुकें और सोचें, हम जो कुछ भी कर रहे हैं, वह इसके लायक भी है। ये बताने के लिए केवल एक उदाहरण पर्याप्त है कि मनुष्य अत्याधिक लालची और स्वार्थी होते हैं, वो न केवल अपने लिए ज़्यादा से ज़्यादा धन एकत्रित करते हैं, बल्कि हमारे पृथ्वी ग्रह के जीव जन्तुओं की लूट मार में भी आगे है।

पीछे हट कर हमें वापस अपने घरों में घुसना पड़ा था और डर की वजह से अपने आप को अंदर बंद कर लिया, दुनिया भर के जेट विमान और ऑटोमोबाइल उनके हैंगर/गैरेज में खड़े कर दिए गए जिसने हमारे कार्बन फुटप्रिंट काफी कम कर दिए, फूल खिलने लगे, हरी वनस्पतियों में अपनी चमक वापिस लौटने लगी और धीरे-धीरे जंगलों में रौनक बढ़ने लगी और हमारे ग्रह पर अपना यथोचित स्थान पुनः प्राप्त करने के लिए जानवर वहां से प्रकट होने लगे जहां हमने उन्हें निर्वासित कर दिया था।

जो कुछ भी 2021 लाये, वैक्सीन से सुरक्षा, इस से या अन्य किसी वायरस से, और सर्वत्र उपलब्ध अधिक संख्या में उन्नत स्वास्थ्य सेवाएं, जीवन का 'सामान्यीकरण' जैसा हमने जाना और ढेर सारे अवसर जिनका इंतज़ार हमारी दुनिया बेताबी से कर रही है, अगर इस वायरस ने हमें कुछ सबक सिखाए हैं और हमें एक बेहतर इंसान बनने में मदद की है, तो फिर सर्वोच्च शक्ति की व्यवस्था के अंतर्गत, कई सन्दर्भों में इसे महान लेवलर (न्याय के लिए संघर्ष करनेवाला) के रूप में वर्गीकृत किया जाएगा।

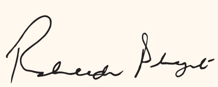

रशीदा भगत

Governors Council

RI Dist 2981	DG R Balaji Babu
RI Dist 2982	DG K S Venkatesan
RI Dist 3000	DG A L Chokkalingam
RI Dist 3011	DG Sanjiv Rai Mehra
RI Dist 3012	DG Alok Gupta
RI Dist 3020	DG Muttavarapu Satish Babu
RI Dist 3030	DG Shabbir Shakir
RI Dist 3040	DG Gajendra Singh Narang
RI Dist 3053	DG Harish Kumar Gaur
RI Dist 3054	DG Rajesh Agarwal
RI Dist 3060	DG Prashant Harivallabh Jani
RI Dist 3070	DG CA Davinder Singh
RI Dist 3080	DG Ramesh Bajaj
RI Dist 3090	DG Vijay Arora
RI Dist 3100	DG Manish Sharda
RI Dist 3110	DG Dinesh Chandra Shukla
RI Dist 3120	DG Karunesh Kumar Srivastava
RI Dist 3131	DG Rashmi Vinay Kulkarni
RI Dist 3132	DG Harish Motwani
RI Dist 3141	DG Sunnil Mehra
RI Dist 3142	DG Dr Sandeep Kadam
RI Dist 3150	DG Nalla Venkata Hanmanth Reddy
RI Dist 3160	DG B Chinnapa Reddy
RI Dist 3170	DG Sangram Vishnu Patil
RI Dist 3181	DG M Ranganath Bhat
RI Dist 3182	DG B Rajarama Bhat
RI Dist 3190	DG B L Nagendra Prasad
RI Dist 3201	DG Jose Chacko Madhavassery
RI Dist 3202	DG Dr Hari Krishnan Nambiar
RI Dist 3211	DG Dr Thomas Vavanikunnel
RI Dist 3212	DG P N B Murugadoss
RI Dist 3231	DG K Pandian
RI Dist 3232	DG S Muthupalaniappan
RI Dist 3240	DG Subhasish Chatterjee
RI Dist 3250	DG Rajan Gandotra
RI Dist 3261	DG Fakir Charan Mohanty
RI Dist 3262	DG Saumya Rajan Mishra
RI Dist 3291	DG Sudip Mukherjee

Printed by PT Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by PT Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced with permission and attributed to RNT.

रो ई निदेशकों

One-to-One

जब मैं रोटरी से जुड़ा, तो यह एक नए घर में आने जैसा था – एक घर जिसमें चार बड़ी, सुंदर खिड़किया थी। हर खिड़की से अलग एवं असाधारण दृश्य नजर आता था। एक खिड़की उस मार्ग पर खुलती थी जो सीधा मुझे मेरे नए दोस्तों – वकील, वास्तुकार, बैंकर, व्यापारी और अन्य – के पास ले जाता था। दूसरी खिड़की उस मार्ग पर खुलती थी जो सीधा मुझे समुदाय के बीच ले जाता था। तीसरी खिड़की एक चौड़ी सड़क पर खुलती थी जो मेरे समुदाय, मेरे देश को दुनिया के विभिन्न हिस्सों से जोड़ता था। लेकिन वो चौथी खिड़की थी जिसने मुझे मोहित किया। इस खिड़की का कांच एक दो-तरफ़ा शीशे की तरह था – एक तरफ से बाहर का नजारा दिखता था जिससे में मेरे क्लब एवं समुदाय को मेरी पेशेवर विशेषज्ञता प्रदान कर सकता था। इसने मुझे मेरे अपने अस्तित्व; मेरे नजरिए, सोच एवं कार्यों में झांकने का मौका भी दिया। जी हाँ, वे तीन खिड़कियां है क्लब, समुदाय और अंतरराष्ट्रीय सेवा खिड़की। लेकिन चौथी खिड़की अत्यंत महत्वपूर्ण है – रोटरी की व्यावसायिक सेवा। यह रोटरी के सार को प्रतिबिंबित एवं चित्रित करता है। यह रोटरी की आत्मा तक ले जाने वाली एक सच्ची खिड़की है जिसने रोटरी के लिए विश्वसनीयता स्थापित की है।

जब मैं क्लब अध्यक्ष था, बॉब बार्थ रो ई के अध्यक्ष थे। उन्होंने एक बार कहा था कि रोटरी की पिन को उसे पहनने वाले के बारे में यह कहना चाहिए – 'आप मुझ पर विश्वास कर सकते है, मैं भरोसेमंद हूँ, विश्वसनीय हूँ, मैं जितना लेता हूँ उससे अधिक देता हूँ, मैं उपलब्ध हूँ।' ये शब्द रोटरी के सभी पहलुओं पर लागू होते है और विशेषरूप से हमारी व्यावसायिक सेवा पर।

जनवरी व्यावसायिक सेवा का महीना है। यदि एक चीज है जो स्पष्ट रूप से और तीव्रता से रोटरी को अन्य सेवा संगठनों से अलग करती है, तो वह यह है कि हमारी सदस्यता हमारे पेशों पर आधारित होती है। व्यावसायिक सेवा का अर्थ है साझा करना और एक दूसरे के व्यवसायों के बारे में सीखना; सेवा करने के लिए हमारे पेशेवर कौशल का उपयोग करना; एक युवा व्यक्ति को परामर्श देना, हमारे व्यक्तिगत, पेशेवर और रोटरी जीवन में उत्कृष्ट व्यक्तियों एवं अखंडता को पहचानना। व्यावसायिक उत्कृष्टता और अखंडता रोटरी की व्यावसायिक सेवा के दो अन्तर्निहित भाग है। व्यावसायिक पुरस्कार इन दोनों पहलुओं के साथ न्याय करते हैं। ऐसे व्यक्ति जो अपने पेशे/व्यवसाय का जुनून, उत्कृष्टता, दृढ़ता और अखंडता के साथ अभ्यास करते है उनकी पहचान करके रोटरी उन्हें प्रोत्साहित और प्रेरित करती है और दूसरों के अनुसरण के लिए एक उदाहरण पेश करती है। व्यावसायिक सेवा माह मनाने का यह एक अच्छा तरीका है।

मूल्य हमारे जीवन में अंतर्भूत होते है। वे हमारे चरित्र को बेहतर बनाते है। मुझे एक सपना आया था जिसमें भगवान ने मुझसे कहा, 'बस एक बेहतर दुनिया का निर्माण करें।' ''कैसे?'' मैंने पूछा, 'दुनिया एक विशाल और जटिल जगह है। और मैं बहुत छोटा और तुच्छ हूं।' और भगवान ने अपनी बुद्धिमत्ता में कहा, 'बस अपने आप को बेहतर बनाओ।' आइए हम अपने आप को बेहतर बनाएं ताकि हम अपने क्लबों को बेहतर बना सकें और समुदाय को रहने के लिए बेहतर जगह बना सके। यह हमारा व्यावसायिक अवसर है। उस अवसर को हाथ से न जाने दें। रोटरी का आनंद लें, स्वयं आनंदित रहें।

डॉ भरत पांड्या
रो ई निदेशक, 2019-21

का संदेश

प्रिय रोटरी नेतृत्वकर्ताओं,

व्यावसायिक सेवा हमें हमारे अद्वितीय कौशलों और विशेषज्ञता का उपयोग करके समुदाय की जरूरतों को संबोधित करने और नए पेशेवर अवसरों एवं रुचियों को खोजने में मदद करके दूसरों को सशक्त बनाने को कहती है। जनवरी रोटरी का व्यावसायिक सेवा का महीना है और यह चार मार्ग परीक्षण की भावना को आत्मसात करके आपकी क्लब परियोजनाओं एवं गतिविधियों में व्यावसायिक सेवा का लाभ उठाने का एक शानदार समय है।

मैं आप सभी से दो मोर्चों पर व्यावसायिक उत्कृष्टता का अभ्यास करने का आग्रह करता हूं, पहला आपके व्यक्तिगत योगदान एवं प्रतिबद्धता पर और दूसरा, आपके क्लब की गतिविधियों के माध्यम से:

अपनी क्लब गतिविधियों में पाँच तरीके से आप व्यावसायिक सेवा को शामिल कर सकते है:

- चार मार्ग परीक्षण और व्यवसायों और पेशों में रोटेरियनों की घोषणा सहित सेवा के दूसरे मार्ग का परीक्षण करने के लिए जनवरी में एक बैठक समर्पित करने में मदद करें।
- एक छोटी वर्गीकरण वार्ता श्रृंखला की शुरुआत करें जिसमें प्रत्येक सदस्य अपने व्यवसाय पर पांच मिनट बात करें।
- समुदाय में किसी ऐसे व्यक्ति को व्यावसायिक पुरस्कार दें जिसने बहुत उच्च नैतिक मानकों को बनाए रखते हुए उत्कृष्ट व्यावसायिक उपलब्धि का उदाहरण दिया हो।
- समुदाय की व्यावसायिक आवश्यकताओं पर एक प्रस्तुति देने और उन जरूरतों के जवाब में एक परियोजना तैयार करने हेतु विशेषज्ञों को आमंत्रित करें। संभावित परियोजनाएं चरित्र को विकसित करने, युवाओं को कैरियर की जानकारी प्रदान करने, छोटे व्यवसायों का उल्लेख करने या कर्मचारियों को नए कौशल प्रदान करने की कार्यशालाओं का आयोजन करने पर ध्यान केंद्रित कर सकती है।
- क्लब के सदस्यों को एक रोटरी स्वयंसेवक के रूप में काम करने के लिए अपने व्यावसायिक कौशल को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करें।

पांच तरीके जिनसे आप अपनी व्यक्तिगत क्षमता में व्यावसायिक सेवा को शामिल कर सकते है:

- एक रोटेरियन एक्शन ग्रुप और दुनिया भर की सहायता सेवा परियोजना से जुड़ें।
- ईमानदारी के साथ अपने पेशे का अभ्यास करें, और दूसरों को अपने शब्दों और कार्यों के माध्यम से नैतिक व्यवहार करने हेतु प्रेरित करें।
- युवाओं को अपने कैरियर के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करने के लिए स्थानीय व्यवसायों के साथ काम करें ताकि संरक्षण, प्रशिक्षण या अभ्यास के अवसरों का सृजन किया जा सकें।
- दूसरों को उनके पेशेवर विकास हेतु मार्गदर्शन दे और प्रोत्साहित करें।
- रोटरी फ्रेंडशिप एक्सचेंज से संबंधित व्यवसाय में भाग लें

आइए हम प्रयास करें कि हम केवल सफल पुरुष/महिला न बने, बल्कि मूल्यवान पुरुष/महिला भी बने।

कमल संघवी
रो ई निदेशक, 2019-21

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
RIPE Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID P T Prabhakar	RI Dist 3232
PRID Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
PRID C Basker	RI Dist 3000
TRF Trustee Gulam A Vahanvaty	RI Dist 3141
RID Dr Bharat Pandya	RI Dist 3141
RID Kamal Sanghvi	RI Dist 3250
RIDE A S Venkatesh	RI Dist 3232
RIDE Dr Mahesh Kotbagi	RI Dist 3131

Executive Committee Members (2020–21)

DG Sanjiv Rai Mehra Chair – Governors Council	RI Dist 3011
DG Sudip Mukherjee Secretary – Governors Council	RI Dist 3291
DG Sangram Vishnu Patil Secretary – Executive Committee	RI Dist 3170
DG Prashant Harivallabh Jani Treasurer – Executive Committee	RI Dist 3060
DG S Muthupalaniappan Member – Advisory Committee	RI Dist 3232

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers,
34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org
Website: www.rotarynewsonline.org

Now share articles from *rotarynewsonline.org* on WhatsApp.

आशा और अवसर का मौसम

डॉ भरत पांड्या

जब हमने ये साल ख़त्म किया जिसे विश्वव्यापी कोविड महामारी ने तहस नहस कर दिया मुझे चार्ल्स डिकेंस की प्रसिद्ध पुस्तक *ए टेल ऑफ टू सिटीज़* की बेसाख्ता याद आ गई जिसकी शुरुआत इन पंक्तियों से होती है :

> *"It was the best of times, it was*
> *the worst of times;*
> *It was the season of light, it was*
> *the season of darkness;*
> *It was the spring of hope, it was*
> *the winter of despair."*

इन पंक्तियों में 2020 का सार है और बिलकुल सटीक हैं। वो साल जो बहुत सारे वादों और आशाओं के साथ शुरू हुआ था। आशा रोटरी संपर्कों की और रोटरी अवसरों की। लेकिन कोविड महामारी के हमले के बाद ये साल अन्धकार और नैराश्य के गर्त में चला गया जिसने पूरी दुनिया को धराशायी कर दिया।

मेडिकल पेशे में एक छात्र, प्रशिक्षु, रेज़िडेंट और फिर सलाहकार के रूप में रहते हुए - अपने 44 साल के दौरान, मैंने ऐसी निराशा, इनकार, ख़ौफ़ और मानसिक यंत्रणा नहीं देखी जैसी इस महामारी में देखने को मिली। इस कोविड संकट में अग्रिम पंक्ति के स्वास्थ्य पेशेवर के रूप में मैंने लोगों की प्रतिक्रिया को कई रूपों में देखा है - अविश्वसनीयता - कौन मैं? कोविड? हो ही नहीं सकता; से ले कर डर और सदमा, ममुझे ही क्यों? से तिरस्कार और सामाजिक बहिष्कार तक देखा है, ओह! उसे कोविड है। लोगों ने और हाउसिंग सोसाइटियों ने अपने अपने नियम और मापदण्ड बना लिए थे, जो अधिकतर अप्रासंगिक और अयथार्थवादी थे लेकिन इसके बावजूद सख्ती से लागू किए गए।

इन सभी बेसिरपैर और तर्कहीन प्रतिक्रियाओं और प्रवासी श्रमिकों के दुख तकलीफ , भूख और बेघर हो जाने की कहानियों

के बीच, आशा की बहुत सी किरणें झिलमिला रही थीं। जैसे जयपुर में डॉक्टर दंपति ने खुद गरीबों में मुफ्त वितरण के लिए स्वयं मास्क तैयार किये; या जम्मू-कश्मीर पुलिस के वो अधिकारी जिन का कोरोना पर रैप जिंगल वायरल हुआ; या टाटा समूह जिन्होंने मुम्बई में कई महीनों तक स्वास्थ्य कर्मियों को मुफ्त भोजन के पैकेटों की आपूर्ति की, क्योंकि लॉक डाउन की वजह से भोजन उपलब्ध नहीं था।

स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और अन्य अग्रिम पंक्ति के आवश्यक सेवा कार्यकर्ताओं को सलाम जिन्होंने इस दुनिया को निर्बाध गति से चलते रहने के लिए स्वयं को और अपने परिवार को कई बार जोखिम में डाला है। आशा और बलिदान की ऐसी कई कहानियाँ मानवता में हमारे विश्वास को पुनर्स्थापित करती हैं। ये और उनके जैसे कई लोग इस महामारी के समय के अकीर्तित नायक हैं। इनमें से कई कहानियाँ रोटरी और रोटेरियनों की भी हैं।

मेरा मानना है कि धनवान होना हमारे मन की स्थिति है। यदि किसी व्यक्ति के पास बहुत पैसा है तो वह दौलतमन्द तो हो सकता है लेकिन जरूरी नहीं कि वह धनवान भी हो। यदि किसी व्यक्ति के पास पैसा नहीं है, तो वह निर्धन तो हो सकता है, लेकिन जरूरी नहीं कि वह गरीब हो। मेरे पिताजी मुझसे कहते थे: ''आपके पास कितना है ये मायने नहीं रखता बल्कि जो कुछ है, आप उसका उपयोग कैसे करते हैं, यह मायने रखता है।'' जैसा इमर्सन ने कहा है, ''एक अमीर दिल के बग़ैर, दौलत बदसूरत है।'' और दुनिया में बहुत सारे लोगों ने, उनमें से कई रोटेरियनों ने इन कठिन परिस्थितियों में भी वास्तव में दरिया दिली दिखाई है।

इस महामारी ने साबित कर दिया है कि गरीबी, स्वच्छ पानी, स्वच्छता, शिक्षा और वैश्विक सहयोग में तालमेल की कमी और कमजोर स्वास्थ्य प्रणालियों ने महामारी में आग में घी का काम किया है। इस कोविड -19 विपदा ने कई मुद्दों और समस्याओं को सुर्खियों में ला खड़ा किया है - राष्ट्रों में तैयारियों की कमी, सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों की उपेक्षा और कई वैश्विक नेताओं की सरासर लापरवाही, इनकार और उदासीन रवैये की वजह से और आबादी का एक बड़ा हिस्सा जिसने कोविड -19 को तवज़्ज़ो नहीं दी अधिकाँश राष्ट्र अचानक धरे गए। इससे सभी देशों को झटका लगा है और कई खामियों को उजागर कर दिया है जैसे ढुलमुल आपूर्ति व्यवस्था, महत्वपूर्ण देखभाल उपकरणों की अनुपलब्धता और अपर्याप्त सार्वजनिक सेवाएं।

इस महामारी ने साबित कर दिया है कि गरीबी, स्वच्छ पानी, स्वच्छता, शिक्षा और वैश्विक सहयोग में तालमेल की कमी और कमजोर स्वास्थ्य प्रणालियों ने महामारी में आग में घी का काम किया है।

लेकिन इसके फायदे भी सामने आये हैं: बेहतर पर्यावरण, वैज्ञानिक सहभागिता में वृद्धि, खोज, आविष्कार में त्वरित सफलता, बेहतर संचार, आभासी संचार माध्यम का सकारात्मक और कल्याणकारी उपयोग और वास्तव में ये दुनिया सिमट कर एक वैश्विक गांव बन गई है। सुधार के लिए अब इस दुनिया को उचित और सही विकल्प चुनने होंगे।

भारत में जहां सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा पर जीडीपी का सिर्फ 1.3 प्रतिशत खर्च किया जाता है, भविष्य में हमें महामारी से निपटने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को और अधिक मजबूत बनाने और बेहतर तरीके से तैयार रहने का महत्त्व पता चल गया है अगर कभी महामारियों का सामना करना पड़ा तो।

केवल प्रशिक्षित डॉक्टर और नर्स ही नहीं बल्कि भली भांति प्रशिक्षित पैरामेडिक्स, वैक्सीनेटर, लैब तकनीशियन, आशा कार्यकर्ता और अन्य सहायक कर्मचारी, पर्याप्त संख्या में आईसीयू बेड और महत्वपूर्ण देखभाल के लिए मूलभूत सुविधाओं सहित सभी की जरूरत है। इस प्रकार के बुनियादी ढांचे का निर्माण न केवल ऐसे संकटों का सामना करने के लिए तैयार करेगा बल्कि एनसीडी के खिलाफ लड़ाई के साथ साथ नियमित स्वास्थ्य देखभाल में भी बेहतर परिणाम मिलेंगे। बोनस के रूप में युवाओं को रोजगार के अधिक और बेहतर अवसर उपलब्ध होंगे।

हमारी फितरत है, नए समाधान खोजने के बजाय हम पुरानी समस्याओं के साथ आराम से रहते हैं। कोविड महामारी ने इस यथा स्थिति को बिखेर दिया है। इसने हमें एक नई, परिवर्तनशील

दुनिया में धकेल दिया है। और इस नई दुनिया में हमारे सामने कुछ महत्वपूर्ण मसले आये हैं:

- किसी की भी उपेक्षा नहीं कर सकते , अगर एक छोटे से समूह को भी अरक्षित छोड़ दिया गया, तो महामारी फिर से भड़क सकती है।
- यह सभी को समान रूप से प्रभावित करती है; अमीर और गरीब, शहरी और ग्रामीण, धनवान और निर्धन सभी को ।
- इससे निपटने के लिए स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर तैयारी , प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है।
- सकारात्मक स्वास्थ्य, भुखमरी और गरीबी उन्मूलन, उत्पादक कार्य, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण की चुनौतियों से टुकड़ों में अकेले ही नहीं निपटा जा सकता। इन मुद्दों से निपटने के लिए विश्व को एकजुट होकर सहयोग और साझेदारी की मंशा के साथ काम करना होगा।

इस लेख को लिखते लिखते उम्मीद की किरणें जगी हैं। कम से कम छह देशों ने mRNA वैक्सीन के आपातकालीन उपयोग के लिए मंजूरी दे दी है और कुछ और टीके आपातकालीन उपयोग के लिए अनुमोदन के अंतिम चरण में हैं। आने वाले महीनों में कई और टीके उपलब्ध हो जाएंगे। ये अच्छी खबर है।

हम सभी एडवर्ड जेनर के आभारी हैं जिन्होंने 1796 में चेचक के खिलाफ टीकाकरण की अवधारणा दी थी। चेचक का टीका लंदन से वियना, बगदाद, बसरा की यात्रा करते हुए आखिरकार 1802 में बॉम्बे पहुंचा। और लगभग दो शताब्दियों के बाद यह यात्रा 1980 में चेचक उन्मूलन के साथ समाप्त हुई जब इस दुनिया को विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा चेचक मुक्त घोषित किया गया था।

रोटरी क्लब वृद्धाचलम के पूर्व अध्यक्ष ए दीपक चंद और उनकी टीम पुलिस कर्मियों के तापमान की जांच करते है (फाइल फोटो)।

रोटरी क्लब मुंबई क्वीनस नेकलेस ने महामारी लॉकडाउन के दौरान जरूरतमंदों के लिए भोजन वितरित किया।

एक अन्य महामारी स्पैनिश फ्लू की शुरुआत 1918 में हुई थी और 27 साल बाद इसकी वैक्सीन 1945 में उपलब्ध हो पाई थी। पोलियो वैक्सीन को इस्तेमाल से पहले स्वीकृत होने में 10 साल से अधिक का समय लग गया था। कोविड महामारी का टीका एक वर्ष से भी कम समय में उपलब्ध होने वाला हैं। यह है होप इन एक्शन । हम पीड़ित हैं लेकिन हारे नहीं हैं। अन्धकार में अब रौशनी की किरण नज़र आ रही है।

आगे का मार्ग और भी लंबा और दुर्गम होगा। दुनिया भर में 7 बिलियन से अधिक लोगों का टीकाकरण अत्यंत दुष्कर कार्य है, जिसमें विश्व की सभी सरकारों, विश्व स्वास्थ्य संगठन, संयुक्त राष्ट्र के अन्य संगठनों और नागरिक संस्थाओं और संगठनों जैसे रोटरी, गेट्स फाउंडेशन और छोटे, बड़े प्रत्येक एनजीओ सहित सभी के बीच भागीदारी और करीबी कामकाजी संबंधों की आवश्यकता होगी। जाति, पंथ और धर्म का सामाजिक और आर्थिक वर्गीकरण किये बगैर सम्पूर्ण आबादी

प्रभावी टीकों की उपलब्धता के साथ नए सिरे से उम्मीद जगी है, अपनी भूमिका निभाने के लिए अवसर का एक नया द्वार खुल गया है।

का न्यायसंगत टीकाकरण इसका उद्देश्य होना चाहिए। एक और चुनौती होगी, मिथ्या प्रचार और टीकाकरण के प्रतिरोध को दूर करना।

रोटरी इंटरनेशनल बोर्ड ने हाल ही में कोविड -19 प्रतिक्रिया में रोटरी की भागीदारी को सहमति दे दी है। बोर्ड रोटरी क्लबों और रोटेरियनों को एक मध्यस्थ की भूमिका निभाने के साथ साथ टीकाकरण के लिए स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करेगा। रोटरी इंटरनेशनल अध्यक्ष (मनोनीत) जेनिफर जोन्स का कहना है, कोविड टीकाकरण के प्रयास और पोलियो प्रतिरक्षण के बीच काफी समानता है। यह पोलियोप्लस में मप्लसफ की तरह है। रोटेरियनों ने पोलियो उन्मूलन में साबित कर दिखाया है कि अगर हम सपने देखते हैं और उन्हें साकार करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य करते हैं, तो हम चमत्कार कर सकते हैं।

रोटरी आशा और अवसर दोनों है। यह हमारा वक़्त है और यह पल हमारा है। प्रभावी टीकों की उपलब्धता के साथ नए सिरे से उम्मीद जगी है, अपनी भूमिका निभाने के लिए अवसर का एक नया द्वार खुल गया है। आइये, इस अवसर को हथिया लें और मौके का फायदा उठायें। मिल कर हम कर सकते हैं और हम करेंगे, एक बार फिर, इस अवसर का भरपूर लाभ उठाएंगे, रोशनी के मौसम का और आशा के वसंत का।

लेखक रोटरी इंटरनेशनल के निदेशक हैं।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

रोटेरियनों ने रु 1.08 करोड़ की मेमोग्राफ़ी मशीन त्रिवेंद्रम मेडिकल कॉलेज अस्पताल में स्थापित की हैं

रशीदा भगत

अपने कार्यकाल के दौरान, रोई मंडल 3211 के गवर्नर (2017-18), सुरेश मैथ्यू ने, कई अवयव मिला कर एक महत्वाकांक्षी मंडल परियोजना करने का सपना देखा था, और उनकी टीम ने जिस का संक्षिप्त नाम रखा HOPE (हॉस्पिटल प्रोजेक्ट्स एंड इक्विपमेंट)।

अगर हम मानव विकास सूचकांक की बात करें तो भारतीय राज्यों में केरल का स्थान अपेक्षाकृत ऊपर है, ''पर यहां जीवनशैली से जुड़ी मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग और कैंसर इत्यादि बीमारियाँ बहुत ज़्यादा है और मुझे लगा कि इन बीमारियों को रोकने में हमें नैदानिक और अन्य उपकरण उपलब्ध करवा कर केरल सरकार की सहायता करनी चाहिए'', मैथ्यू कहते हैं।

उनके कार्यकाल का समापन नज़दीक आ रहा था, और ''मैं एक बड़े पैमाने की अंतिम हस्ताक्षर परियोजना की तलाश में था, होप (HOPE) के अंतर्गत, इस बारे में कुछ पूर्व अध्यक्षों से सलाह की और साथ ही मंडल अनुदान से सहयोग का प्रस्ताव रखा।'' तो इस चुनौती को स्वीकार कर रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम कौडियार के अध्यक्ष और तिरुवनंतपुरम के एक वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ पी मंगलानंदन ने सरकारी अस्पतालों में आवश्यकताओं का आकलन करने के लिए एक सर्वेक्षण करवाया। उन्होंने पाया कि महिलाओं में स्तन कैंसर की बीमारी बहुत आम है, और सरकारी क्षेत्र में मैमोग्राफी उपकरण लगाने की तुरंत आवश्यकता थी।

प्रारंभिक स्तर पर रोग का पता लग जाने से समय पर बेहतर इलाज हो सकता है, ''इस तथ्य के अलावा ये प्रमाण भी मिले कि भारत में स्तन कैंसर आम बात है और अपेक्षाकृत

कम उम्र की महिलाओं में - उनके तीसवें और चालीसवें दशक में ज़्यादा पाया जाता है जबकि पश्चिमी देशों में यह 40-50 वर्ष या इससे अधिक आयु वर्ग की महिलाओं में पाया जाता है। अपने 30वें और 40वें दशक के दौरान, वास्तव में महिलाएं अपने परिवार और करियर में व्यस्त रहती हैं, यदि स्तन कैंसर का पता देर से चलता है तो उन पर बहुत अधिक मनोवैज्ञानिक और वित्तीय प्रभाव पड़ता है और इलाज भी लंबा चलता है, जिससे परिवार तबाह हो जाते हैं,'' डॉ मंगलानंदन का कहना था, जिन्हें रोटरी डिजिटल मैमोग्राफी प्रोजेक्ट का चेयरमैन मनोनीत किया गया था।

उन्होंने आगे कहा, इसी वजह से अमेरिकन कैंसर एसोसिएशन सहित कई कैंसर संगठन, 40 से 55 वर्ष की आयु में महिलाओं को नियमित जांच की सलाह देते हैं। हालांकि, मैमोग्राफी उपकरण के बारे में जागरूकता की कमी या हर जगह इस की उपलब्धता नहीं होने के कारण, भारत में स्तन कैंसर का पता अपेक्षाकृत देर से चलता है, जिससे मृत्यु दर बढ़ जाती है।

मैथ्यू का कहना है कि रोटेरियनों द्वारा कराये गए सर्वेक्षण से यह भी मालूम चला कि केरल में स्तन कैंसर के मामले राष्ट्रीय औसत से कहीं अधिक हैं, और केरल में भी, तिरुवनंतपुरम में ये संख्या अधिक थी। हमने पाया कि पूरे केरल राज्य में स्तन कैंसर की जांच के लिए व्यापक स्तर पर कोई सुविधा या योजना नहीं थी। तिरुवनंतपुरम के एकमात्र क्षेत्रीय कैंसर केन्द्र में डिजिटल मैमोग्राफी की सुविधा उपलब्ध थी, जहां इसका उपयोग जांच के बजाय उपचार के लिए अधिक किया जाता था। निजी क्षेत्र की बात करें तो वहां केवल एनालॉग मशीनें उपलब्ध थीं और मैमोग्राफी की लागत ₹ 2,000-3,000 थी जो आम जनता के लिए बहुत महंगी थी और उनकी पहुँच के बाहर थी।''

केरल में स्तन कैंसर के मामले राष्ट्रीय औसत से कहीं अधिक हैं, और केरल में भी, तिरुवनंतपुरम में ये संख्या अधिक थी।

केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन (बाएं) उद्घाटन सत्र संबोधित करते हुए। डीजी थॉमस ववनिकुनेल, कड़कंपल्ली सुरेंद्रन, पर्यटन मंत्री, पीडीजी सुरेश मैथ्यू, डॉ सारा वर्गीज़ प्रिंसिपल, त्रिवेंद्रम चिकित्सा महाविद्यालय और त्रिवेंद्रम मेडिकल कॉलेज के अधीक्षक डॉ शरद मंच पर बैठे हैं।

जब इस क्षेत्र में और अधिक मैमोग्राफी उपकरण उपलब्ध कराने का निर्णय हो गया, इसके बाद रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम कौडियार ने तुरंत कार्रवाई शुरू कर दी और तिरुवनंतपुरम के एक प्रमुख संस्थान, गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज (जीएमसी) - में आधुनिक डिजिटल मैमोग्राफी उपकरण लगाने का निश्चय किया। इस कॉलेज को मैमोग्राफी उपकरण स्थापित करने के लिए इसलिए चुना गया क्योंकि यह दक्षिण केरल की भारी आबादी, यहां तक कि तमिलनाडु के एक बड़े क्षेत्र की आवश्यकता को भी पूरा करेगा। उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए, संस्थान में पर्याप्त संख्या में रेडियोलॉजिस्ट, पोस्ट ग्रेजुएट छात्र, रेडियोग्राफर और प्रशिक्षु कार्यरत हैं।

मैमोग्राफी के लिए डिजिटल श्रेणी की नवीनतम निदान (डायग्नोस्टिक) उपकरणों का चुनाव किया जो उच्च कोटि की छवियां देता है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में नवीनतम, जनरल इलेक्ट्रिक की मशीन सेनोग्राफ क्रिस्टल नोवा का चुनाव किया गया। ''मैं समझता हूं कि भारत से ऑर्डर किया जाने वाला संभवतः ये पहला मॉडल था। मोल भाव कर हम इसकी कीमत ₹1.2 करोड़ से घटाकर ₹1.08 करोड़ पर ले आये, लेकिन फिर भी किसी परियोजना को करने के लिए रो इ मंडल 3211 के लिए यह एक भारी रकम थी। इतनी अधिक धन राशि की व्यवस्था करना भागीरथी कार्य था'', पीडीजी मैथ्यू ने स्वीकार किया।

लेकिन वह आशान्वित थे कि रुपयों की व्यवस्था हो जाएगी। उस समय, त्रिवेंद्रम मेडिकल कॉलेज के पहले प्रिंसिपल के पोते, हमारे पूर्व अध्यक्षों में से एक, राजेश स्वेच्छा से ₹10 लाख की प्रारम्भिक राशि दान करने के लिए आगे आये। इस कदम ने क्लब के नेताओं का मनोबल बढ़ाने का ज़बरदस्त काम किया और राजेश के अनुदान से इसमें गति आई और क्लब अध्यक्ष सहित कुछ अन्य रोटेरियनों ने भी आर्थिक सहयोग करने का आश्वासन दिया, डॉ मंगलानंदन कहते हैं।

फिर भी, अंतर काफी बड़ा था; लेकिन पैसा आने लगा। डिस्ट्रिक्ट ट्रेनिंग असेंबली में, डीजी मैथ्यू की पत्नी, लीया

बाएं से: रोटेरियन जिगिश नारायणन, पीडीजी सुरेश मैथ्यू, डी जी डॉ थॉमस वावनिकुनेल, डॉ सारा वर्गीज़, डॉ शरमद और कड़कंपल्ली सुरेंद्र।

मैथ्यू ने ₹5 लाख का व्यक्तिगत दान दिया। इस परियोजना के लिए मैथ्यू ने 2017-18 के जिला नामित कोष (डिस्ट्रिक्ट डेज़िग्नेटिड फण्ड) का 50 प्रतिशत आवंटित किया और मंडल के सीएसआर अध्यक्ष जी एन नायर, रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सेंट्रल के सदस्य, पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट, जो सरकारी स्वामित्व वाले विभिन्न निगमों में प्रबंध निदेशक रह चुके हैं, उन्हें शेष राशि एकत्रित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई ।

उन्होंने राज्य के वित्त मंत्री डॉ तोमस इस्साक को एक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट पेश की और नायर ने केरल सरकार के एक उपक्रम, केरल स्टेट फाइनेंशियल इंटरप्राइजेज से सीएसआर के तहत इस परियोजना में ₹25 लाख देने के लिए मंत्री को राजी कर लिया।

अमेरिकन कैंसर एसोसिएशन सहित कई कैंसर संगठन, 40 से 55 वर्ष की आयु में महिलाओं को नियमित जांच की सलाह देते हैं।

क्लब इतिहास रचने जा रहा था क्योंकि हमारे मंडल को मिलने वाला यह पहला सीएसआर योगदान था। अतिरिक्त सीएसआर फंड यूएसटी ग्लोबल से आया, जो कि त्रिवेंद्रम टेक्नोपार्क में एक तकनीक आधारित उपक्रम है। अन्य कंपनियों जैसे कि टेरुमो पेनपोल और सहजानंद टेक्नोलॉजीज़ भी इस परियोजना में सहयोग करने के लिए आगे आए, वहीं रोटरी क्लब कौडियार के सदस्यों ने भी उदारता से योगदान दिया'', मैथ्यू कहते हैं।

वित्तीय आवश्यकता पूरी कर लेने के बाद भी, उपकरण प्राप्त करने से ले कर उसकी स्थापना में कई तकनीकी और अन्य कारणों से देरी हुई। जब सभी बाधाओं को पार कर लिया, तो कोविड महामारी के कारण इसमें और विलंब हुआ। लेकिन इन सभी कठिनाइयों से पार पाने के लिए रोटरियनों ने सरकार और मीडिया दोनों के साथ मिलकर प्रयास किया और ''अंततः, 20 अक्टूबर को, केरल सरकार के दो मंत्री और सांसद शशि थरूर की उपस्थिति में, केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन द्वारा इस उपकरण का लोकार्पण किया गया।'' कार्यक्रम में डीजी थॉमस ववनिकुनेल, पीडीजी मैथ्यू और डॉ मंगलानंदन भी उपस्थित थे।

त्रिवेंद्रम मेडिकल कॉलेज के पहले प्रिंसिपल के पोते, हमारे पूर्व अध्यक्षों में से एक, राजेश स्वेच्छा से ₹10 लाख की प्रारम्भिक राशि दान करने के लिए आगे आये। इस कदम ने क्लब के नेताओं का मनोबल बढ़ाने का ज़बरदस्त काम किया।

डॉ मंगलानंदन
अध्यक्ष, रोटरी क्लब कौडियार

लेकिन इस विशाल परियोजना को पूरा करने के बाद भी मंडल के रोटेरियन शायद ही चैन से बैठ सकेंगे। मैथ्यू कहते हैं: ''उद्घाटन के बाद, डॉक्टरों से बातचीत के दौरान, एमसीएच के वरिष्ठ डॉक्टरों में से एक ने बहुत ही सीधा सरल अनुरोध किया। हमारे यहाँ एक वास्तविक और बड़ी समस्या है; हमें तत्काल एक (PET) पैट स्कैन मशीन की आवश्यकता है। जब मैंने उनसे पूछा कि कितना खर्च आएगा, उन्होंने कहा ₹19 करोड़!

सही है, इस दुनिया में समर्पित रोटेरियनों के लिए भलाई करने की कोई कमी नहीं है! ■

एक स्वस्थ पर्यावरण का उपहार

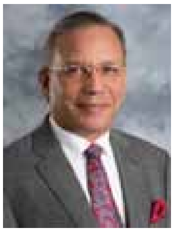

श्रीलंका के पहाड़ी परिदृश्य के हरे-भरे जंगलों के बीच बड़े होने के बाद, मैं हमेशा महान कवि रवींद्रनाथ टैगोर के शब्दों को याद करता हूं: अपनी बात स्वर्ग तक पहुंचाने के लिए पेड़ धरती के अंतहीन प्रयास की तरह है।

कितने दुःख की बात है कि अक्सर हम मनुष्य इस वार्तालाप को बाधित करते है।

दूसरे जीवों की तरह ही हम भी प्रकृति का एक हिस्सा है। लेकिन हम एकमात्र ऐसी प्रजाति भी है जिनके कंधों पर भावी पीढ़ियों के लिए पर्यावरण की रक्षा करने की जिम्मेदारी है। कोरोनोवायरस महामारी ने पहली बार पर्यावरण में गिरावट और सार्वजनिक स्वास्थ्य के खतरे के संबंध पर प्रकाश डाला।

कुछ साल पहले, मेरे देश में सरकारी स्वामित्व वाली बिजली कंपनी ने पूर्वी श्रीलंका में एक दूसरा कोयला बिजली संयंत्र बनाने की योजना बनाई। उसकी एक खाड़ी से हर घंटे 93 मिलियन लीटर पानी का इस्तेमाल करने की योजना थी जहाँ नाजुक पारिस्थितिक तंत्र गहरे समुद्र से मिलते है, ऐसा स्थान जो दुनिया में स्पर्म व्हेल के लिए सबसे बड़े समांडन स्थलों में से एक है। संसाधन के बाद, हर घंटे 93 मिलियन लीटर पानी को समुद्र में छोड़ा जाना था जो जहरीले रसायन से युक्त होगा और समुद्री जीवन को अत्यधिक जोखिम में डालेगा।

पहले संयंत्र से होने वाले नुकसान से सबक सीखते हुए, एक गठबंधन तैयार हुआ, जिसमें रोटेरियनों सहित कई सार्वजनिक अधिवक्ता शामिल थे। उन्होंने कानूनी कार्यवाही करने के अलावा, संभावित खतरों के लिए मीडिया, जनता और स्थानीय समुदाय को सतर्क करने का अभियान चलाया। जनता के कड़े विरोध के बाद सरकार ने अंततः अपने कोयला संयंत्र के विचार को त्याग दिया।

जब हम एक साथ होते है तो वास्तव में हम पर्वत को हिला सकते है।

जब हममें से कुछ लोग रोटरी के नवीनतम अभियान के रूप में पर्यावरण को जोड़ने हेतु आगे आए, तो हमनें समस्या की तात्कालिकता को देखते हुए ऐसा किया। 1990-91 में, रो ई अध्यक्ष पाउलो वी सी कोस्टा ने एक परिकल्पना स्थापित की थी, और आज हम इस कार्य को अगले स्तर तक ले जाएंगे। हम एक ऐसे समय में जी रहे है जहाँ तेजी से बढ़ते समुद्री स्तर, भयंकर तूफानों, गायब हो रहे वर्षा वनों और वन्य जीवों और विनाशकारी जंगल की आग के कारण हमारे पर्यावरण पर बहुत तनाव बना रहता है। जलवायु परिवर्तन अमीर और गरीब, हम सभी को प्रभावित करता है।

ध्यानाकर्षण के अन्य क्षेत्रों के साथ हम रणनीतिक रूप से इस चुनौती का सामना करेंगे। वास्तव में ध्यानाकर्षण के छह अन्य क्षेत्र इस पर निर्भर है। अगर हमारा प्रदूषित वातावरण हमें फिर से बीमार करता है तो बीमारी से लड़ने का क्या फायदा है?

रोटरी संस्थान इस काम के केंद्र में होगा। पिछले पांच वर्षों में 18 मिलियन डॉलर से अधिक पर्यावरण से संबंधित वैश्विक अनुदानों पर खर्च हुआ है। पर्यावरण की रक्षा करने पर आधारित कार्य करके, हम भावी पीढ़ियों को एक अन्य रोटरी उपहार देंगे। और आज आप इसका हिस्सा बन सकते है।

Ravi

के आर रवींद्रन

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष

भोजन की योजना

सूसी एल मां

ताइवान के भोजन की जड़े भी इसके लोगों की तरह ही ज्यादातर चीन में है, लेकिन कई पीढ़ियों से ताईवान के लोगों ने अपने स्वयं के व्यंजन विकसित किए है। जब आप 12 से 16 जून तक रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए ताइपे में होंगे, तो ताइवान के कुछ खास व्यंजनों को चखना न भूलें।

बीफ नूडल सूप *(निउ रौ मियां)* ताइवान का अनौपचारिक राष्ट्रीय व्यंजन है। यह सूप चीन के सिचुआन प्रांत के मसालेदार स्वाद पर आधारित है। चक्र फूल, लौंग, दालचीनी, सिचुआन काली मिर्च, और सौंफ़ एक समृद्ध और मसालेदार शोरबा बनाने में मदद करते है जिसमें नूडल्स डूबे रहते है, जिसे मुलायम बीफ़ के टुकड़े या हरी साग के साथ खाया जाता है।

इसे कहाँ खाया जाए:

- ताओ युआन स्ट्रीट बीफ नूडल्स, 15 ताओयुआन स्ट्रीट, ज़्होंगज़्हेंग ज़िला
- योंग कांग बीफ नूडल्स, नंबर 17, लेन 31, सेक्शन 2, जिनशान साउथ रोड, डान ज़िला

सूप पकौड़ी *(ज़िओ लॉन्ग बाओ)* की उत्पत्ति चीन के नानजियांग शहर में हुई थी, लेकिन ताइवान मुख्य भूमि के संस्करणों की तुलना में पतली, अधिक नाजुक परत के साथ पकौड़ी बनाने के लिए जाना जाता है। यह पकौड़ियाँ पारंपरिक रूप से सूअर के मांस से भरी होती है, लेकिन इसमें केकड़ा, चिकन, या अन्य मांसल पदार्थ भी हो सकते हैं। पकौड़ी का सूप वाला भाग एक पतला शोरबा होता है जो पकौड़ियों को भाप से पकाए जाने पर पिघल जाता है। सूप पकौड़ी को दांत से काटते समय सतर्क रहें क्योंकि आपकी जीभ जल सकती है या स्वादिष्ट सूप आपकी प्लेट पर गिर सकता है। सर्वोत्तम परिणामों के लिए, एक चम्मच पर पकौड़ी रखें और बगल से एक टुकड़ा निकाल लें, और शोरबा को चूसने से पहले इसे थोड़ा ठंडा होना दें।

उन्हें कहाँ खाएं:

- दीन ताई फुंग, एक श्रृंखला जो अपने सूप पकौड़ियों के लिए प्रसिद्ध है और ताइपे में कई स्थानों पर स्थित है। इसकी वेबसाइट का अंग्रेजी संस्करण *www.dintaifung.com.tw/eng* पर देखें।

convention.rotary.org पर अधिक जानें और रेजिस्टर करें।

2021 TAIPEI

Membership Summary

(As on December 1, 2020)

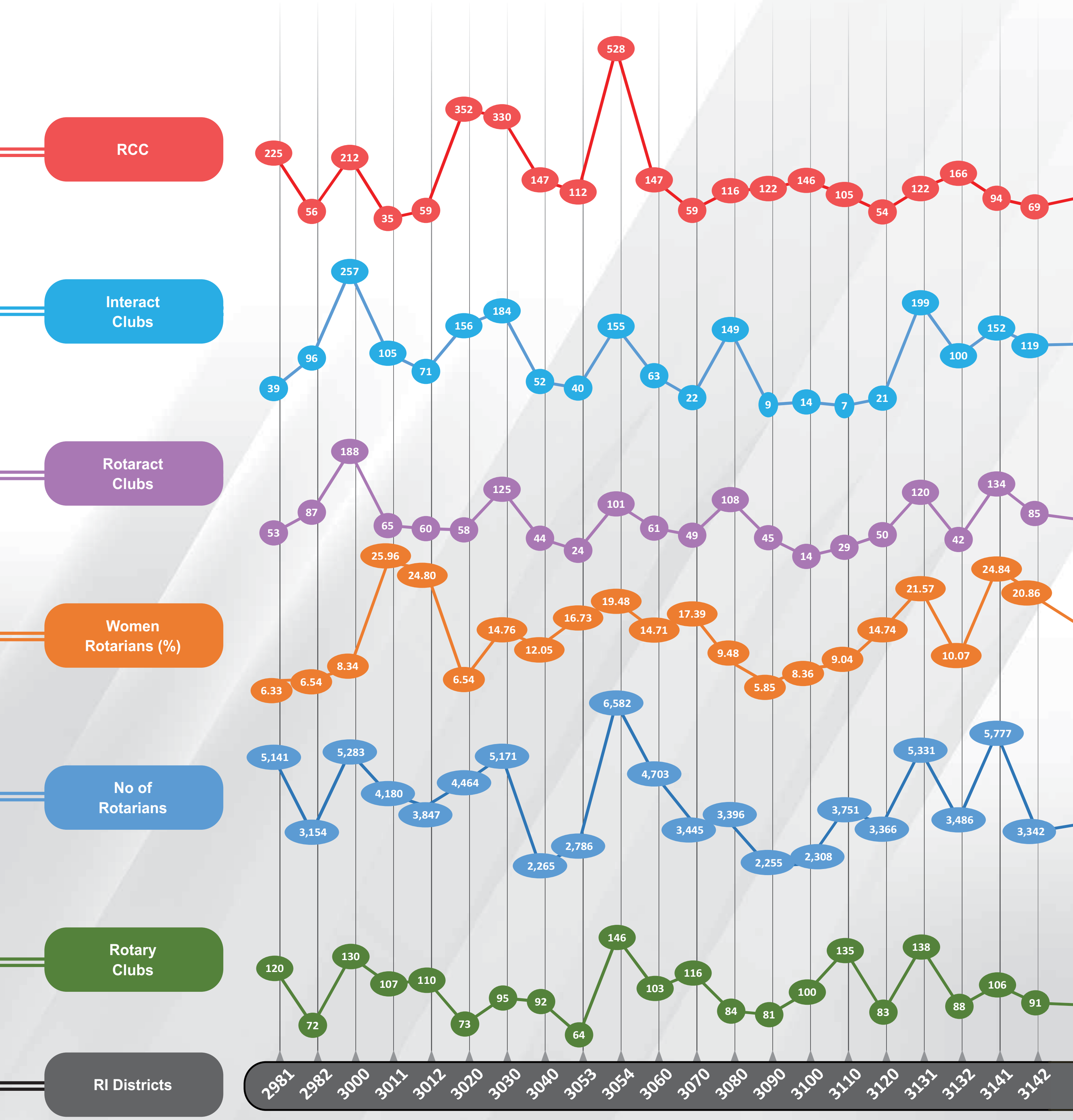

Rotary at a glance			
Rotary clubs	: 36,423	Rotary members	: 1,193,852
Rotaract clubs	: 11,171	Rotaract members	: 213,269
Interact clubs	: 15,381	Interact members	: 353,763
*RCCs	: 11,458	*As on 16 December 2020*	

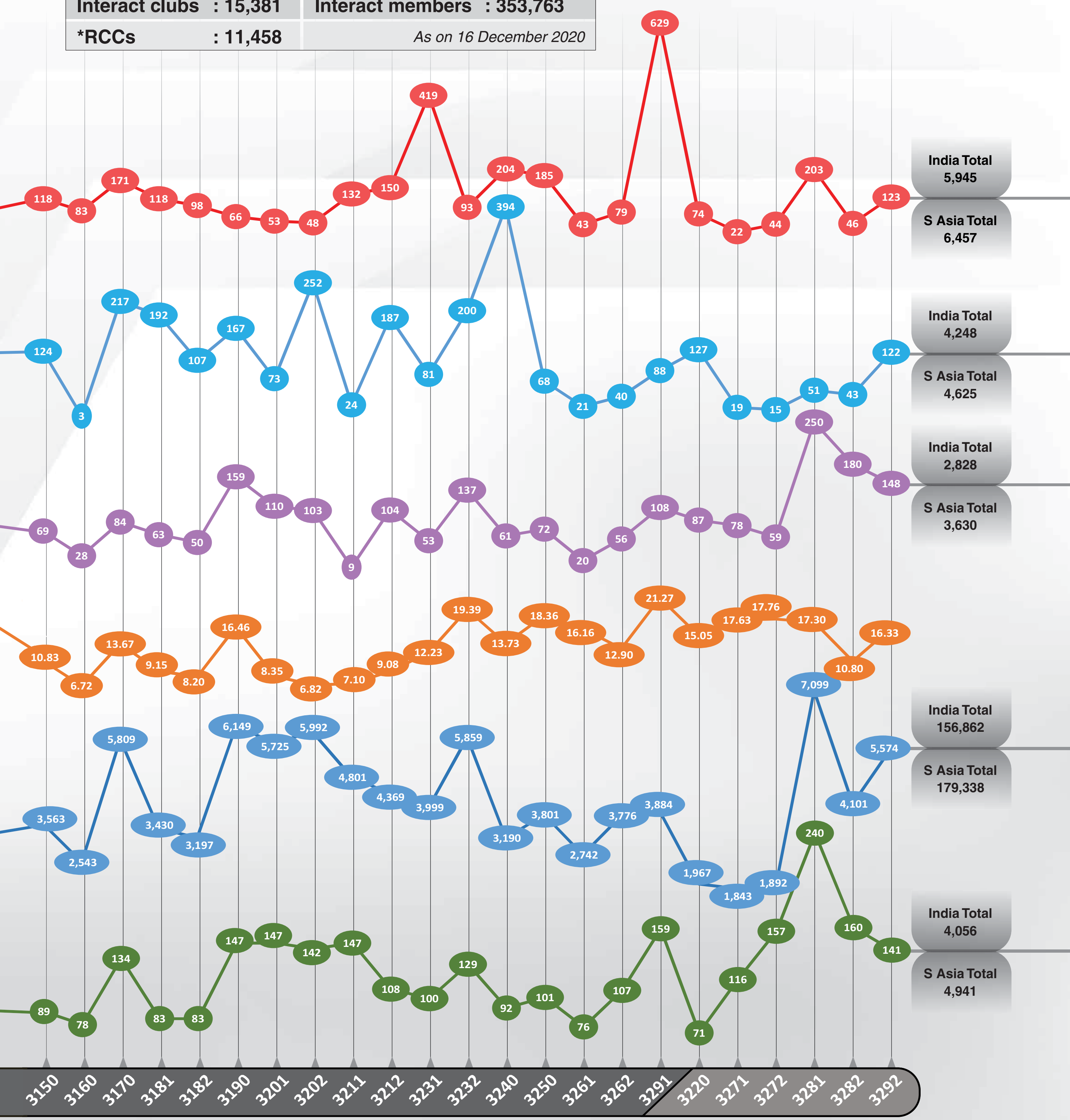

Source: RI South Asia Office

एक शोक संतप्त दंपत्ति चार अन्य को जीवनदान देता है

रशीदा भगत

जब युवा और बलिष्ठ श्रीकांत, एक इंजीनियरिंग स्नातक, हैदराबाद में कैरियर की शुरुआत करने से पहले, अपने 26 वें जन्मदिन पर आशीर्वाद लेने दादी के घर जा रहा था, नियति को कुछ और ही मंज़ूर था।

वह मोटर बाइक चला रहा था कि अचानक एक कुत्ता दुपहिए वाहन के ठीक सामने आ गया। उसे बचाने की कोशिश में, मोटर साइकिल सड़क पर लहराई, वो गिरा और सड़क पर घिसटता चला गया और जिससे उसके सिर में गंभीर चोटें आईं।

रोटरी क्लब मंडापेटा के पूर्व अध्यक्ष और रो ई मंडल 3020 में असिस्टेंट गवर्नर रह चुके बिक्कीना चक्रवर्ती के पुत्र, श्रीकांत, करीब 25 दिन ग्लोबल अस्पताल, हैदराबाद में भर्ती रहे और भले ही सर्जरी के दौरान उन्होंने भीषण यंत्रणा झेलते हुए पूरी हिम्मत के साथ दर्द सहा लेकिन ऑपरेशन के बाद उपजी नाना प्रकार की जटिलताओं की वजह से वो दिमागी तौर पर मृत हो गया और अपने पिता, माता भानु और बहन श्रीलेखा को दुःख और दर्द के सागर में बिलखता छोड़ गया।

लेकिन अपने युवा बेटे को खोने के गहरे आघात के बावजूद, , अपने बेटे के अंग दान करने के लिए भारी मन से मां भानु ने चक्रवर्ती

अपने मात-पिता और बहन के साथ श्रीकांत।

बेटे की वजह से भले ही हम ग़मगीन थे पर मेरी पत्नी और मैंने फैसला किया कि हम तो उसका गम ताउम्र सहेंगे ही पर हमारे पास चार अन्य परिवारों में खुशियां लाने की ताक़त थी और ये सोच कर हमें भी कुछ खुशी मिली।

रोटेरियन बिक्कीना चक्रवर्ती

से कहा, तेलंगाना सरकार की जीवनदान योजना के तहत, ताकि मरने के बाद भी वो युवा अपनी मृत्यु को सार्थक कर दूसरों की मदद कर सके।

पिता तुरंत सहमत हो गए और अक्टूबर के तीसरे सप्ताह में, श्रीकांत के दिल, दो गुर्दे और यकृत दान कर दिए गए, जिससे चार लोगों को जीवनदान मिला। प्राप्तकर्ताओं में एक 26 वर्षीय युवा शामिल था, जिसका दिल बहुत कमज़ोर था, पर आज उस युवा के सीने में एक तंदुरुस्त और मजबूत दिल धड़क रहा है। श्रीकांत के माता-पिता की उदारता और उचित समय पर किये गए हस्तक्षेप को धन्यवाद है।

रोटरी न्यूज से बातचीत के दौरान चक्रवर्ती ने बताया कि उनका बेटा बिल्कुल स्वस्थ ही नहीं था बल्कि उसकी ज़िंदगी खुशियों से भरपूर थी, वो ज़िंदादिल इंसान था और उसके दोस्तों का दायरा काफी बड़ा था। ''बेटे की वजह से भले ही हम ग़मगीन थे पर मेरी पत्नी और मैंने फैसला किया कि हम तो उसका गम ताउम्र सहेंगे ही पर हमारे पास चार अन्य परिवारों में खुशियां लाने की ताक़त थी और ये सोच कर हमें भी कुछ खुशी मिली।'' अगर उन्हें ये मालूम चल जाता कि उनके बेटे का दिल और अन्य अंग किन्हें लगाए गए हैं, तो और भी अच्छा लगता ''लेकिन सरकार का गोपनीयता कानून अस्पताल को यह जानकारी देने की इजाज़त नहीं देता।''

JEEVANDAN
(CADAVER TRANSPLANTATION)
GOVERNMENT OF TELANGANA
Certificate of Appreciation
DONOR FAMILY
Government of Telangana acknowledges and appreciates the endeavor of Mr. / Mrs. Bikkina Srikanth
S/o. / D/o. B.S.P. Chakravarthi
R/o. Mandapeta, East Godavari Dist.
for donating organs under JEEVANDAN Scheme.
On 23 October 2020 in Global Hospital, Lakdikapul hospital and saving many lives.
THIS HUMANITARIAN ACT HAS MADE A PROFOUND DIFFERENCE IN THE LIVES OF OTHERS.
Incharge Jeevandan

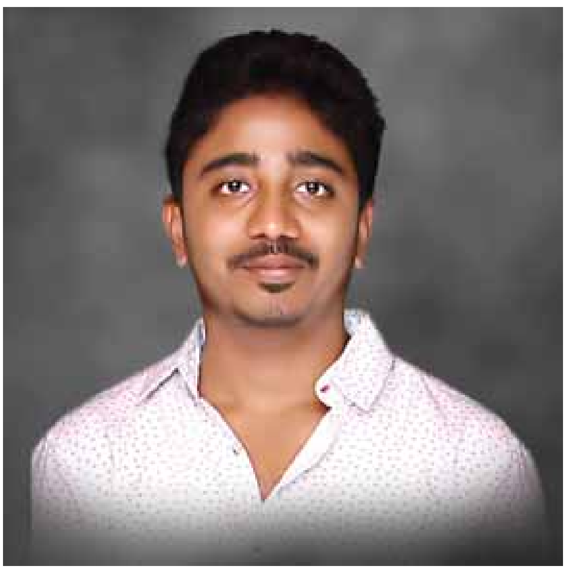

पॉल हैरिस फेलो, श्रीकांत के माता-पिता को अपने बेटे की कई खासियतों के बारे में अभी तक पता चल रहा हैं। ''हाल ही में उसके दोस्तों ने हमें बताया कि वह अत्यंत उदार और दयालु था, किसी को उसकी मदद की जरूरत होती, उनकी मदद करने में ज़रा भी नहीं हिचकिचाता था।''

उसकी बहन, श्रीलेखा, का कहना है कि उसे अपने भाई की बहुत याद आती है, वो कभी भी नहीं भूल पाएगी कि उसे भोजन और संगीत से कितना प्यार था। ''जंक फूड सहित उसे हर तरह का भोजन पसंद था और विभिन्न प्रकार के संगीत, विशेष रूप से फिल्मी गीतों और शास्त्रीय संगीत का बहुत शौक था।''

लेकिन उसके माता-पिता की तरह ही वह भी खुश है कि उसका भाई चार लोगों में ज़िंदा रहेगा, इससे उसे और उसके माता-पिता को मन की शांति मिलेगी।■

अंग्रेजी भाषाई थिएटर भारतीय रंगमंच की भव्यता को अभिव्यक्त नहीं कर सकता: विजय पादकी

जयश्री

विजय पादकी, ट्रस्टी एमेरिटस बैंगलोर लिटिल थियेटर के साथ बाल कलाकार।

बेंगलुरू लिटिल थिएटर (BLT), बेंगलुरु शहर की शुरुआती अंग्रेजी थिएटर संस्थाओं में से एक, इस वर्ष अपनी हीरक जयंती मना रहा है। रो ई मंडल 3190 से रोटरी क्लब बैंगलोर के सदस्य विजया पादकी इसके संस्थापक-ट्रस्टी हैं। वह रोटरी क्लब बैंगलोर का स्वयं का थिएटर क्लब स्थापित करने में सहायता भी कर रहे हैं।

पादकी एक मनोवैज्ञानिक और व्यवहार वैज्ञानिक (बिहेवियर साइंटिस्ट) हैं, IIM बैंगलोर संकाय के संस्थापक सदस्य और IISc, बैंगलोर में शोध एवम् विकास प्रबंधन के अतिथि प्रोफ़ेसर हैं। 20 साल की उम्र में उन्होंने रंगमंच की यात्रा शुरू की थी। बीएलटी के साथ गुजारे 60 वर्षों के दौरान उन्होंने कई रूपांतरण और अनुवाद के अलावा अंग्रेजी में 50 से अधिक मौलिक नाटक लिखे हैं। पादकी एक अभिनेता, निर्देशक, ट्रेनर, लेखक, डिजाइनर और प्रशासक रहे हैं। उन्होंने बीएलटी की कई गतिविधियों को संस्थानिक स्वरुप दिया है, जैसे कि नए कलाकारों के लिए वार्षिक ग्रीष्मकालीन कार्यशाला (SPOT), जहां से बंगलौर रंगमंच की कई हस्तियां निकली हैं, जीवनी नाटकों के कार्यक्रम हिस्ट्री ऑफ़ आइडियाज, कोर्टयार्ड थिएटर और चिल्ड्रन्स थिएटर कार्यक्रम का उद्गम स्थल भी यही है। और इन वर्षों के दौरान वो कई अंतरराष्ट्रीय सहभागिताओं में सहायक रहे हैं ।

रंगमंच में पादकी के बहुमूल्य योगदान की प्रतिष्ठा में, बीएलटी उनके सभी नाटकों का प्रकाशन नौ खंडों में कर रहा है और पिछले साल, उनके 80 वें जन्मदिन पर, बीएलटी ने छह महीने तक उनके लिखे नाटकों का मंचन कर उन्हें सम्मानित किया।

रोटरी न्यूज़ से उनके साक्षात्कार के कुछ अंश :

थिएटर की ओर आपका रुझान कैसे हुआ और अपनी बीएलटी यात्रा पर प्रकाश डालें।

मेरा सौभाग्य है कि ज़िंदगी के रचनात्मक दौर में मुझे दो उत्कृष्ट और विद्वान् गुरुओं का मार्गदर्शन मिला। मेरे पहले गुरु, मद्रास में मेरे कॉलेज के ड्रामा विभाग के प्रोफेसर, एक स्कॉट निवासी, जो स्वयं एक नाटककार भी थे। उन्होंने मुझे कॉलेज स्किट्स से परे मेरा गंभीर नाटक से परिचय करवाया । दूसरे बीएलटी के संस्थापकों में से एक, स्कॉट टॉड थे (एक अन्य स्कॉट निवासी), जिन्होंने बैंगलोर में शौकिया नाटकों के दृश्य में उच्च कोटि के अभिनय और निर्देशन को समाविष्ट किया। एक के बाद एक, दोनों ने मुझे अपनी छत्रछाया में ले लिया और मुझे गंभीरता से नाटक सीखने के लिए प्रोत्साहित किया।

आप अपने नाटकों की परिकल्पना कैसे करते हैं?

मैं दो तरह के सिद्धांत के बारे में सोच सकता हूं। पहला सिद्धांत व्यवहार से संबंधित हैं, मैंने मनोविज्ञान में प्रशिक्षण लिया है। जिस से मैंने इस वास्तविकता को स्वीकार किया कि मनुष्य के व्यवहार में विविधता होती है और उसका सम्मान करना सीखा। इसका मतलब यह है कि पूर्वाग्रह से ग्रस्त हो कर लोगों को नज़र अंदाज़ करना ठीक नहीं है, अमान्य है। व्यक्ति में उस की विशिष्टता को खोजना महत्वपूर्ण है, जो वैसे नज़र नहीं आती - ना तो अभिनेता में और ना ही उस पात्र द्वारा अभिनीत चरित्र में दिखती है।

दूसरा, मेरे भीतर अन्तर्निहित है कि मैं सहज ही चीजों में लय, रिदम खोज लेता हूँ - उच्चारित शब्दों में, चाल ढाल में, दृश्यों के प्रवाह में, और भी कई चीजों में। मैं खुद अपनी प्रस्तुतियों में काफी हद तक लय के इस पहलू पर काफी ध्यान देता हूँ। और जब नाटक पुनरावृति के आवर्तन से बाहर नहीं निकल पाता तो मैं खुद भी बहुत जल्दी ऊब जाता हूं!

आपके सर्वाधिक यादगार नाटक?

किसी एक के बारे में बात करना बहुत मुश्किल है। विशेष रूप से इसलिए क्योंकि मैंने हर नाटक में अलग नाट्य सामग्री का प्रयोग किया है, अलग अलग शैलियों में, विभिन्न आयामों की खोज करते हुए और पृथक पद्धतियों से नाटकों का मंचन किया है। मुझे मिली सबसे अच्छी तारीफों में से एक ये है कि मेरे कोई भी दो नाटक एक जैसे नहीं थे, उनमें कोई समानता नहीं होती - ना तो पटकथा में ना ही प्रस्तुति में।

हालांकि, मैं कह सकता हूं कि एक अभिनेता के रूप में अपने शुरुआती वर्षों में, मुझे पिरांडेलो के मशहूर नाटक, '*सिक्स कैरेक्टर्स इन सर्च ऑफ़ एन ऑथर*' में पिता का पात्र अभिनीत करते हुए परत, दर परत छिपे रहस्यों को खोलने में सबसे ज़्यादा मज़ा आया था। मैंने उस पात्र को अलग अलग प्रस्तुतियों में दो बार अभिनीत किया है! निर्देशक

के रूप में, *'चिल्ड्रन्स थिएटर'* के तहत, वृहद स्तर पर साई परांजपे के नाटक *'रिगमारोल'* का निर्माण करने में मुझे वास्तव में बहुत आनंद मिला।

रोटरी क्लब बैंगलोर के थिएटर क्लब को ले कर आपकी क्या योजनाएं हैं? क्या ये क्लब नवोदित कलाकारों को प्रशिक्षित करेगा; और क्या यह परियोजनाओं के लिए धनराशि जुटाने के लिए शो आयोजित करेगा?

उम्र के सत्तरवें दशक में मुझे रोटरी क्लब बैंगलोर में शामिल होने का आमंत्रण मिला था। जीवन में, अपेक्षाकृत देर से ! और जैसी कि क्लबों से अपेक्षा होती है, क्लब का एक ग्रुप मनोरंजन के विविध कार्यक्रमों से हट कर कुछ अलग करना चाहता था। और आप जानते ही हैं कि ये क्या होते हैं ... लघु नाटक जिन का स्तर कॉलेज में खेले गए स्किट्स जितना ही होता है या फिर बॉलीवुड नंबरों की धुन पर गाने गा लो। इस समूह ने थिएटर के विचार को काफी गंभीरता से लिया। शुरुआत में हमने नाटकों का पठन-पाठन और थिएटर अप्रेसियेशन वर्कशॉप आयोजित कीं। और उसके बाद हमने एक मुख्य थिएटर प्रोडक्शन उठाया जिसकी तैयारी जन समूह के समक्ष सार्वजनिक प्रदर्शन के अनुसार की गई थी, इसलिए उसे अच्छा होना ही था! रवींद्रनाथ टैगोर की दिलचस्प कहानियों के संग्रह पर आधारित नाटक का शीर्षक था *रोबीज़ गार्डन*। उसके बाद ग्रुप ने और भी काम किये हैं। शोलेर मोलिये, चेखव के लिखे लघु नाटक और कुछ मेरे भी। मेरी मध्यस्थता से थियेटर क्लब ने बीएलटी के साथ एक औपचारिक साझेदारी की थी। इसकी वजह से थिएटर क्लब ने आज तक जो कुछ भी किया है उसे पेशेवर रूप देने में काफी मदद मिली है। उदाहरण के लिए, बीएलटी में, एक प्रतिष्ठित वार्षिक समर प्रोजेक्ट (SPOT), जिसके तहत तीन महीने की कठिन कार्यशाला आयोजित की जाती है जो रंगमंच की कार्यप्रणाली से परिचय करा, इसमें प्रशिक्षित करती है और प्रशिक्षण के एक अंश के रूप में छात्रों को नाटक तैयार करने होते हैं जिनको बाद में जन समूह के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। तीन वर्षों तक रोटरी क्लब बैंगलोर

रोटेरियन दीपक नाकरा रूसी नाटककार एंटोन चेकोव की कहानियाँ में से एक मोनोलॉग का प्रदर्शन करते हुए।

परिसर में नाट्य कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें कुछ स्थान रोटरी थियेटर क्लब के प्रतिभागियों के लिए आरक्षित होते थे। नियमित रूप से रोटेरियनों ने बीएलटी की प्रमुख प्रस्तुतियों में भाग लिया है। एक लघु नाटक *'व्हील्स'* के लिए कुछ मूल पटकथा भी लिखी थी जो रोटरी क्लबों में चन्दा जुटाने की विभिन्न रणनीतियों पर पुनर्विचार करने के सम्बन्ध में थी - जिसका ध्येय सिर्फ दान ही नहीं बल्कि सामाजिक विकास की ओर बढ़ना था। बेंगलुरु के अन्य क्लबों में भी इस नाटक को प्रदर्शन के लिए आमंत्रित किया गया था

थिएटर क्लब के भविष्य की बात करें, हाँ, निश्चित रूप से इसे बढ़ाना है। बीएलटी के सहयोग से 2020 के लिए मुख्य रूप से फण्ड रेजिंग के लिए नाटक की योजना बनाई गई थी। इसे कोविड महामारी के कारण बंद करना पड़ा। और भी कई विचार हैं और योजनाएं हैं, जिन्हें मूर्त रूप लेने में समय लगेगा। उदाहरण के लिए, रोटरी क्लबों में भारत और अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तर पर, एक थिएटर फैलोशिप की स्थापना करने का विचार है।

मैं रोटरी क्लब ऑफ़ रोज़वेल (अटलांटा में) के संपर्क में हूँ, जिसका जॉर्जिया एसेम्बली थिएटर के साथ एक दीर्घकालिक संबंध है, जो बीएलटी और आरसीबी के अनुरूप ही है। एक अन्य योजना, बैंगलोर और उसके आसपास के रोटरी क्लबों में गंभीर थिएटर को बढ़ावा देने के लिए एक उत्प्रेरक की भूमिका निभाने की है। तीसरा विचार थोड़ा अधिक महत्वाकांक्षी है, सभी रोटरी क्लबों के लिए थिएटर-फॉर-पीस कार्यक्रम। हाल ही में भारत और पाकिस्तान के रोटरी क्लबों के बीच हुई बातचीत में महसूस हुआ कि जमीनी स्तर की ऐसी और भी परियोजनाओं की संभावनाऐं हैं।

क्या आप हमें बीएलटी के भावी कार्यक्रमों की एक झलक दिखा सकते हैं?

हाँ, बीएलटी आज 60 का हो चला है, अपनी हीरक जयंती मनाने जा रहा है। इस समारोह में टैगोर की 160 वें जयंती वर्ष (2021) को सम्मिलित करने की योजना भी है। टैगोर की कृतियों के दो मूल अनुकूलन (adaptations) मंचन के लिए तैयार हैं। और इसके साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित नाटक गांधी-टैगोर संवाद भी है, *द प्रोफेट एंड द पोएट,* जिसे पूर्व में 110 बार मंचित किया जा चुका है। व्यक्तिगत रूप से अभी मैं फॉउन्डिंग फादर्स ऑफ़ अमेरिकन इंडिपेंडेंस और द कोर्ट ऑफ़ ऑफ़ हैदर अली और टीपू सुल्तान के बीच हुए आदान-प्रदान पर आधारित नाटक को विकसित करने की परियोजना में व्यस्त हूं। बीएलटी की असली ताकत थिएटर विकास के दीर्घकालिक कार्यक्रमों में निवेश करने से है जो वास्तव में लम्बे समय तक प्रदर्शन के कार्यक्रम को ज़िंदा रखेंगे।

फोटोग्राफ 51 नाटक में रोटेरियन सोलोमन पेरामल और अभिजीत रघुनाथन अभिनय करते हुए।

भारत में अंग्रेजी रंगमंच के परिदृश्य के बारे में आपकी राय, और उसका भविष्य?

अंग्रेजी भाषा का रंगमंच ऐसे देश में अप्रासंगिक है जहां केवल दो प्रतिशत आबादी द्वारा ही ये भाषा बोली जाती है। न तो मैं और न ही मेरा लेखन भारतीय रंगमंच की भव्यता को परिलक्षित कर सकता है। उस भव्यता का अधिकांश हिस्सा विलुप्ति का सामना कर रहा है, फिर भी मेरा मानना है कि भारत में अंग्रेजी भाषाई रंगमंच का विकास निश्चित होगा और ये और अधिक फूले फलेगा।

हालांकि यह आबादी के एक छोटे से वर्ग का ही प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन यही समाज का सबसे प्रभावशाली वर्ग है। यह वास्तव में बहुत लंबे समय से है, और रहेगा । इस वर्ग के लोगों के पास विभिन्न स्तरों पर नीति को प्रभावित करने की शक्ति है और विशाल स्रोत उपलब्ध हैं। इसलिए, भारत में अंग्रेजी भाषाई थिएटर के विकास की आशा की जा सकती है। 20 साल पहले की तुलना में आज मंच के लिए लिखने में लोगों की रुचि बढ़ी है। स्वयं बीएलटी इन वर्षों में विकसित किए गए नाटकों के

कम से कम नौ संस्करणों का प्रकाशन करने जा रहा है प्रकाशित कर रहा है। महामारी से ठीक पहले तीन खंड जारी हो चुके हैं। बाकी 2021 की शुरुआत में जारी होने चाहियें।

क्या युवा पीढ़ी थिएटर में दिलचस्पी रखती है

कुछ वर्ष पहले की तुलना में आज काफी ज़्यादा। इसे ठीक है, गए थे, जानता हूँ की तरह अधिक लिया जाता है, पर इसे ले कर गंभीर नहीं हैं। थिएटर को अभी भी स्कूलों और कॉलेजों के पाठ्यक्रम में शामिल होने के लिए पर्याप्त सामाजिक दर्जा नहीं मिला है। अवश्य ही इसके अपवाद भी हैं। लेकिन उनकी संख्या बहुत कम है। एक समस्या जिस पर पूरी तरह से ध्यान नहीं दिया गया है (या जिसे मान्यता नहीं मिली है) थिएटर कार्यक्रमों का स्थायित्व। और साफ़ कहूँ तो, शिक्षक कहां हैं? मेरा मतलब है योग्य शिक्षक। यदि रंगमंच का शिक्षण, प्रशिक्षण शौकिया कलाकार देंगे, तो हम केवल शौकिया कलाकारों का निर्माण ही कर सकते हैं।

थियेटर पर महामारी का क्या प्रभाव पड़ा है? क्या आपने फिल्मों की तरह ओटीटी पर नाटकों की आभासी स्क्रीनिंग की है या इसकी योजना बनाई है ठीक वैसे ही जैसे चेन्नई में या कर्नाटक में टिकट आधारित संगीत का ऑनलाइन प्रदर्शन किया जाता है?

ऊपरः एक विद्यालय में रोटरी थियेटर कार्यशाला।

नीचेः रोटेरियन एमिलस एनिमी, एक नाटक का प्रदर्शन कर रहे हैं।

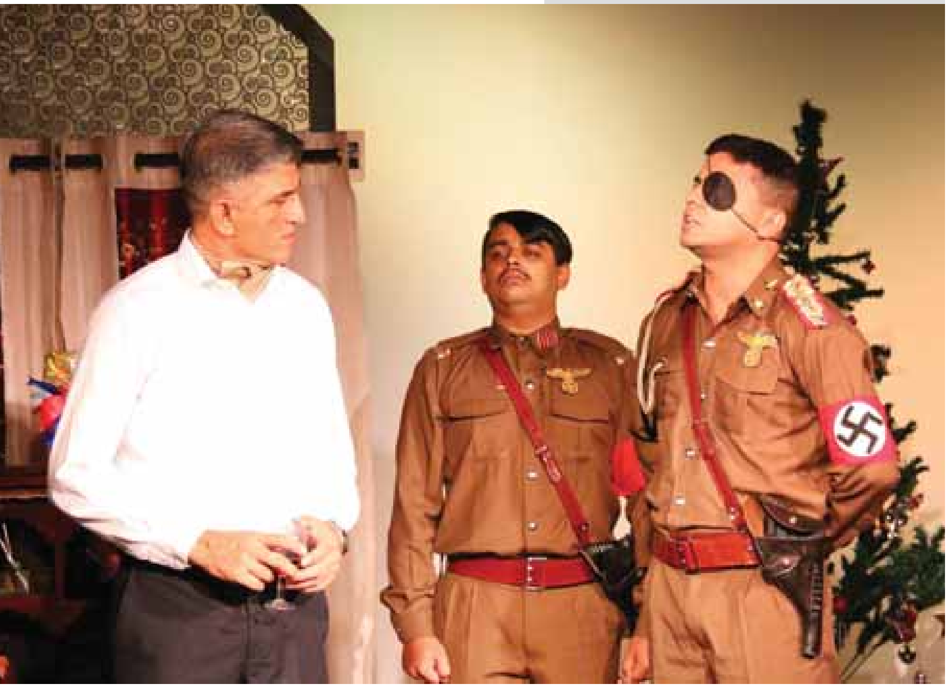

बीएलटी में हमारे ऑनलाइन प्रदर्शनों में हमने थोड़ा सा नवाचार किया है। हमने पहले से रिकार्डेड, कम लागत वाले (लेकिन अच्छी गुणवत्ता वाले) प्रदर्शनों का पता लगाया है, जिन्हें ऑनलाइन प्रस्तुत किया जा सकता है। एक और दीर्घकालिक कार्यक्रम है कोर्टयार्ड थिएटर। सफल नाटकों की पटकथाएँ दो-अभिनेता प्रारूप में परिवर्तित की गई हैं, जो मंचन के लिए न्यूनतम आवश्यकताओं के साथ प्रदर्शित किये गए हैं। इनमें से सबसे ताज़ा है *शेक्सपियर बाय एनी अदर नेम*। यह शेक्सपियर के आईडिया पर आधारित नाटक है और रंगमंच में उन्हें देवतुल्य स्थान कैसे प्राप्त हुआ। इसमें दो महिलाओं ने अभिनय किया है। कोर्टयार्ड कार्यक्रम के सभी नाटकों की तरह, शेक्सपियर के इस नाटक को भी कई स्थानों पर प्रस्तुत किया जा चुका है। लेकिन रोटरी थिएटर क्लब में, अभी ठंडा दौर चल रहा है, और अभी केवल पठन-पाठन तक ही सीमित है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

A letter from the RI President and TRF Trustee Chair on Rotary's participation in Covid vaccination

Dear district governors,

In these difficult days, we are so heartened to receive such uplifting reports on the unrelenting efforts of our Rotary members who have responded in their communities against the Covid-19 pandemic.

Today, the single question we hear time and again as we traverse the virtual world is, "Are we getting involved with Covid vaccination?" Considering the success and expertise we have gained in our polio eradication effort, this question is both natural and timely.

The answer is yes. We will have an important role in the months ahead.

This does not mean we will deviate in any way from our avowed commitment to eradicating polio, which remains our highest priority and will continue to be our only corporate programme. Polio vaccinations and surveillance activities must continue unabated, as must our effort to raise $50 million per year for this effort.

But as we know, there is a pandemic sweeping the world. The Board of RI and the Trustees of our Foundation met in joint session and have agreed that we have a role to play.

We ask you, then, to encourage your clubs to:

Utilise Rotary's knowledge of vaccine safety and efficacy based on our polio eradication experience to conduct vaccination education and communication outreach in your communities. This will need to be tailored to local contexts to address unique cultural and regional needs. Your leadership will be critical in crafting the appropriate messages and strategies.

Engage, where appropriate, with our current polio eradication partners WHO and UNICEF at the country level to offer Rotary's support to Covid-19 response activities, including vaccination efforts.

Partner at the local level with governments, corporations and foundations to support Rotary activities at the country level.

Through hundreds of global grants and projects, Rotary members have demonstrated what we can accomplish to raise awareness, deliver critical personal protection equipment and provide support for frontline health workers. As you learn of work being done in your area, please encourage clubs to add to the more than 3,000 projects already registered on Rotary Showcase (please log in to My Rotary first, and navigate to Rotary Showcase). We would like to know about them.

We have one final call to action: Help us combat the powerful, growing force of vaccine resistance and misinformation. Our advocacy in our communities will be critical — we need to spread the message about the power of vaccines to save lives.

Working together, we have done so much to adapt to the Covid-19 pandemic, to care for our communities and to prepare Rotarians for the work ahead.

We do this for ourselves and for future generations. We do this as part of our obligation to support our world as it faces the most significant challenge of this generation.

Thank you.

Holger Knaack
RI President

K R Ravindran
TRF Chair

Rotary PEOPLE OF ACTION

महाराष्ट्र की आदिवासी लड़कियों के लिए एक सरल किन्तु महत्वपूर्ण परियोजना

रशीदा भगत

मुंबई में मॉनसून की एक उदास सुबह, जब आसमान खुल गया था, रोटरी क्लब बॉम्बे महाकाली हाइट्स के अध्यक्ष, गुरदीप सिंह उप्पल ने चिंतित होकर अपनी बालकनी से आकाश की ओर देखा, यह पता लगाने के लिए कि क्या वास्तव में भारी बारिश हो रही है। ''हमने वनवासी (आदिवासी) लड़कियों को कुछ सामग्री सौंपने हेतु एक छोटा सा कार्यक्रम करने की योजना बनाई थी जिसे हमने दो हफ्तों की कड़ी मेहनत के बाद इकट्ठा किया था'', वह याद करते है।

यह सरल लेकिन दिल को छू लेने वाली परियोजना है, जिसकी कल्पना क्लब के निदेशक ने सामुदायिक सेवाओं के लिए की थी, और लाभार्थी मुंबई से लगभग 180 किलोमीटर दूर स्थित रायगढ़ जिले के मानगाँव की आदिवासी लड़कियाँ थीं। जब उन्होंने मानगाँव की इन छोटी छोटी लड़कियों की दुर्दशा के बारे में सुना और जिस भयंकर गरीबी में वे रहती है उसे जाना, तो वह एकदम हिल गई और उन्होंने इस परियोजना की योजना बनाई, उप्पल कहते है।

बाएं से दाएं: रोटरी क्लब बॉम्बे महाकाली हाइट्स सामुदायिक सेवा निदेशक किरण श्रीवास्तवा, सतिंदरपाल अहलूवालिया, चिंगारी फाउंडेशन से पिंकी राजगढ़िया, क्लब अध्यक्ष गुरप्रीत सिंह उप्पल, डीजी सुनील मेहरा, परियोजना समन्वयक डॉ मनीष मोटवानी और वरिंदर कौर उप्पल, वंचित लड़कियों के लिए एकत्रित सामग्री के साथ।

वह बताते है कि क्लब ने यह परियोजना इसलिए की क्योंकि यह चिंगारी शक्ति फाउंडेशन नामक गैर सरकारी संगठन के साथ मिलकर काम करता है। यह गैर सरकारी संगठन न केवल बालिकाओं के कल्याण और सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित करता है, बल्कि दिव्यांग बच्चों के लिए एक स्कूल भी चलाता है। जिन लड़कियों को रोटेरियनों की मदद की ज़रूरत थी वे अपने परिवारों के साथ रहती है, जो इतने गरीब है कि वे अपनी बेटियों को रोज़मर्रा के उपयोग की सरल वस्तुएं भी प्रदान नहीं कर सकते जो हम सभी के लिए महत्वहीन है... जैसे टैल्कम पाउडर, हेयर ऑयल, सैनिटरी पैड और अंतर्वस्त्र। ''परिवारों के पास उन्हें उचित कपड़े देने के संसाधन नहीं है और लड़कियों को अक्सर लड़कों के अंतर्वस्त्र साझा करने पड़ते है क्योंकि उनके माता-पिता द्वारा उनके लिए इन्हें अलग से नहीं खरीदा जा सकता।''

वास्तव में मुश्किल से 2-3 दिनों में – हम परियोजना के लिए आवश्यक धन से अधिक के साथ तैयार थे।

गुरप्रीत सिंह उप्पल
क्लब अध्यक्ष

इस आवश्यकता के बारे में जानने के बाद, क्लब के बोर्ड की एक तत्काल बैठक बुलाई गई, इस परियोजना पर चर्चा की गई और सदस्यों के स्वैच्छिक योगदान के साथ एक निधि संग्रह अभियान की योजना बनाई गई। ''पैसा आने लगा और कुछ ही समय में - वास्तव में मुश्किल से 2-3 दिनों में - हम परियोजना के लिए आवश्यक धन से अधिक के साथ तैयार थे। हमारे सदस्यों में से केवल एक ने ही आवश्यक राशि का 70 प्रतिशत से अधिक इकट्ठा कर दिखाया'', वह आगे कहते है। यह राशि केवल 50,000 थी, लेकिन यह परियोजना इतनी ह्रदयस्पर्शी थी, और इन वस्तुओं की आवश्यकता इतनी अधिक थी कि रोटेरियनों को इसके कार्यान्वयन की तत्काल आवश्यकता महसूस हुई।

बारिश की चुनौती का सामना करते हुए, क्लब अध्यक्ष और उनकी पत्नी एक पूर्व अध्यक्ष के घर गए, जहाँ वितरण कार्यक्रम की योजना बनाई गई थी और इसमें पिंकी राजगढ़िया ने भाग लिया था, जो इस पुरस्कार विजेता गैर सरकारी संगठन को चलाती है।

रो ई मंडल 3141 के डीजी सुनील मेहरा और मुख्य समन्वयक मनीष मोटवानी के नेतृत्व में बैठक शुरू हुई। इस तरह के सराहनीय कारणों के लिए चिंगारी फाउंडेशन को क्लब का समर्थन देने के अलावा, पिंकी राजगढ़िया को क्लब की मानद सदस्यता भी प्रदान की गई।

रोटेरियनों ने इस छत्रक्ष को आदिवासियों लड़कियों के लिए 500 फेस मास्क, पाँच सैनिटाइज़र स्टैंड, पर्याप्त संख्या में सैनिटाइज़र की बोतलें, 9,500 सेनेटरी पैड्स और अंतर्वस्त्र के 230 सेट सौंपें और उसके स्वयंसेवकों ने इन पैकेजों को आदिवासी लड़कियों तक पहुँचाया। ■

आभासी बैठकें, नए सामान्य...

रोटरी ई-क्लब रास्ता दिखाता है

जयश्री

यह बैठक रोटरी ई-क्लबों की वास्तविक ताकत को दर्शाती है। महामारी की वजह से आज हमारे सभी रोटरी क्लब ई-क्लब की तरह ही काम कर रहे है। लेकिन आप सभी के लिए यह कोई नई बात नहीं है। आप पहले भी इस तरह मिलते रहे है'', रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक ने हाल ही में चेन्नई के रोटरी ई-क्लब, रो ई मंडल 3232, द्वारा आयोजित की गई ई-क्लबों की वैश्विक बैठक को संबोधित करते हुए कहा।

छह महाद्वीपों के 28 देशों के 80 ई-क्लबों ने इसमें भाग लिया था। ''यह ई-क्लबों के एक रोटरी सम्मेलन की तरह दिखता है। हमने अंटार्कटिका को याद किया क्योंकि वहां कोई रोटरी क्लब नहीं है'', मेज़बान क्लब के सलाहकार पीडीजी राजा सीनिवासन ने कहा।

''सुसैन और मैं आज सुबह या दोपहर या शाम को आपके साथ जुड़कर खुश है'', विभिन्न टाइम ज़ोन से जुड़ने वाले लोगों का आभार प्रकट करते हुए नेक ने कहा। ''मैंने थीम - रोटरी अवसरों को *प्रधान करती हैं* - का चुनाव किया क्योंकि यह विभिन्न स्तरों पर काम करती है। जब हम लोगों को चश्मा या व्हील चेयर या माइक्रो क्रेडिट देते है तो हम उनको उपहार स्वरूप एक अवसर दे रहे होते है। रोटरी हमारे लिए अवसर *प्रधान करती हैं* - एक समृद्ध, अधिक सार्थक जीवन के लिए और मेरे लिए, रोटरी ने मेरे विचार को विस्तारित किया है और मुझे कई दोस्त दिए हैं। यह व्यक्तिगत विकास के बारे में भी है। इसका मतलब बेहतर नेतृत्वकर्ता बनना है'', उन्होंने कहा।

इस वर्ष, रोटरी ने अपने सदस्यों के लिए लोगों तक पहुंचने के विभिन्न अवसर पहले से अधिक खोले है। आप लोगों की इस महामारी से बचने में मदद करके असाधारण काम कर रहे है। इन सभी आभासी अनुभवों का आनंद लें जिन्हें आप अभी सीख रहे है क्योंकि यह वास्तव में रोटरी के लिए एक बड़ा कदम है, उन्होंने आगे कहा।

रो ई बोर्ड भी इस महामारी की चुनौती के लिए अच्छी तरह से तैयार है। ''हम हर दूसरे महीने, कभी-कभी हर महीने मिलते है। यह अधिक प्रभावी और निश्चित रूप से सस्ता है। रो ई भविष्य में ऐसी कई अधिक आभासी बैठकें करेगा।''

2013 में चेन्नई की अपनी यात्रा को याद करते हुए, जब 12,000 रोटरेक्टर एक गिनीज़ रिकॉर्ड का जश्न मनाने के लिए इकट्ठा हुए थे, नेक ने कहा कि रो ई ''मंडल 3232 के पास सबसे अधिक रोटरेक्टर है - अकेले एक मंडल में 25,000 रोटरेक्टर! लेकिन हमें उन्हें रोटरी की ओर आकर्षित करने की आवश्यकता है। ऐसे नए क्लब मॉडलों के बारे में सोचें जो युवा पेशेवरों की जरूरतों को पूरा करें।

इन सभी आभासी अनुभवों का आनंद लें जिन्हें आप अभी सीख रहे है क्योंकि यह वास्तव में रोटरी के लिए एक बड़ा कदम है।

होल्गर नेक
रो ई अध्यक्ष

यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और जापान में एक बड़ी समस्या रोटरी में बढ़ती उम्र है।''

दक्षिण ग्रीस के एक ई-क्लब के सदस्य द्वारा रोटरी छोड़ चुके रोटेरियनों के बारे में डेटा प्राप्त करने के एक प्रश्न करने पर, ताकि उन्हें ई-क्लब में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जा सके, अध्यक्ष ने कहा, ''हम रोटरी की गोपनीयता नीति के कारण बहुत अधिक डेटा साझा नहीं कर सकते। लेकिन आप आस-पास के क्लबों तक पहुंच सकते है और उनसे क्लब छोड़ चुके सदस्यों के बारे में व्यक्तिगत रूप से पूछ सकते है।''

इटली के एक अन्य सदस्य जानना चाहते थे कि जब भी कोविड वैक्सीन आएगी तो उसके प्रबंधन के बारे में रोटरी की क्या योजना है और नेक ने कहा कि पोलियो टीकाकरण के लिए उपयोग किए जाने वाले बुनियादी ढांचे का उपयोग कोविड टीकाकरण के लिए भी किया जा सकता है। ''हमने पोलियो से बहुत कुछ सीखा है। हमने तब एक अद्भुत काम किया था और हम अब भी एक महान काम कर सकते है'', उन्होंने कहा।

रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक और उनकी पत्नी सुसैन।

एक विशेष *हैलो होल्गर* सत्र जिसमें सभी 80 क्लबों के अध्यक्ष बारी-बारी से रो ई अध्यक्ष और उनकी पत्नी सुज़ैन का हाथ हिलाकर अभिनंदन कर रहे थे। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष जयंती राजा सीनिवासन ने *रोटरी न्यूज़* से परदे के पीछे की कुछ बातें साझा करते हुए कहा, ''इस सत्र के लिए हमने कई बार अभ्यास किया था। यह एक मजेदार अनुभव था। शुक्र है कि हमें किसी तकनीकी खराबी का सामना नहीं करना पड़ा। हमें विभिन्न टाइम ज़ोन से रोटेरियनों के साथ समन्वय करना था और उन सभी ने बहुत अच्छा सहयोग किया, एक ऑस्ट्रेलियाई ई-क्लब सदस्य का विशेष उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा जिन्हें सुबह के 1 बजे (ऑस्ट्रेलियाई समय) पर जूम मीट पर हमारे पूर्वाभ्यास में शामिल होना था और उनकी आँख लग गई थी। जब उनका नाम पुकारा जाता, तो वह जाग जाते और 'हैलो होल्गर' बोलकर फिर से सो जाते!''

''यह पहली बार है जब मैंने इतने सारे ई-क्लबों को सुसैन और मुझे नमस्ते करते देखा'', नेक मुस्कुराए।

सुसैन रोटरी ई-क्लब हैम्बर्ग कनेक्ट, जर्मनी, की सदस्य है। ''मैं यहाँ अपनी सदस्यता का आनंद लेती हूँ। जब गैरी हाँग 2014 में रो ई अध्यक्ष बने, तो उन्होंने रो ई निदेशकों के जीवनसाथियों से रोटरी में शामिल होने का आग्रह किया। होल्गर, जो तब एक निर्देशक थे, ने युवा लोगों और उन लोगों को शामिल करने के लिए एक ई-क्लब का गठन करने का विचार बनाया, जो दोपहर के भोजन पर मिलने का खर्च नहीं उठा सकते थे। हमने दिसंबर 2014 में अपना क्लब बनाया और यह तब से एक शानदार अनुभव रहा है'', उन्होंने कहा।

वह 1996 से रोटरी का हिस्सा है ''जब हमने RYE कार्यक्रम के तहत स्लोवाकिया और स्विट्ज़रलैंड के दो 16 वर्षीय लड़कों के लिए अपना घर खोला था।'' इस दंपति ने 2013 तक नेक के रो ई निदेशक बनने तक अपने घर पर 40 युवा विनिमय छात्रों की मेजबानी की।

उन्होंने श्रोताओं को किस्से सुनाए कि वह होल्गर से कैसे मिली। ''हम दोनों एक ही कॉलेज में गए थे। वह दावा करते है कि उन्होंने मुझे पहली छात्र सभा में देखा था। मुझे यह याद नहीं है कि क्योंकि उस समय, हम 94 पुरुषों के मुकाबले सिर्फ तीन महिलाएँ थी!''

पीडीजी सीनिवासन ने कहा, रोटरी ने 2002 में पहला ई-क्लब शुरू किया - रोटरी ई-क्लब वन, यूएसए - इस दूरदर्शिता के साथ कि यह एक भावी मॉडल हो सकता है। लेकिन अधिकतर लोगों को कोविड महामारी तक ई-क्लबों की क्षमता का एहसास नहीं हुआ। और अब हम सभी ने ई-बैठकों के माध्यम से काम करना शुरू कर दिया है, जिसमें हवाई सम्मेलन भी शामिल है। यह बैठक नए सदस्यों को आकर्षित करने में ई-क्लब की क्षमता को उजागर करेगी।

2013 में डीजी के रूप में उन्होंने चेन्नई के रोटरी ई-क्लब का गठन किया। उन्होंने कहा कि इस साल जुलाई में RIPE शेखर मेहता ने अलग-अलग देशों के 11 सदस्यों को मात्र एक दिन में इस क्लब में शामिल किया, उन्होंने कहा।

रोटरी ने 2002 में पहला ई-क्लब शुरू किया – रोटरी ई-क्लब वन, यूएसए – इस दूरदर्शिता के साथ कि यह एक भावी मॉडल हो सकता है।

वी राजा सीनवासन
रो ई मंडल 3232

डीजी मुत्तुपलनियप्पन ने मेज़बान क्लब के अध्यक्ष देवप्रसाद को ''ई-क्लबों के इस अनूठे और नए वैश्विक मिलन को आयोजित करने के लिए बधाई दी। तकनीक ने हमेशा से ही सक्षम बनाया है। इस महामारी के कारण, पारंपरिक रोटरी क्लब भी आभासी बैठकें आयोजित करने लगे। लंबे समय में, यह रोटरी को विकसित करने में मदद करेगा।'' उन्होंने मंडल परियोजना Orange के बारे में बात की जो चेन्नई, जहां 104 दृष्टि देखभाल केंद्र स्थापित किए जाएंगे, से शुरू होकर पूरे भारत में रोके जा सकने योग्य अंधेपन को संबोधित करेगा। टीआरएफ ने इस परियोजना के लिए 1.7 मिलियन डॉलर के सात अनुदानों को मंजूरी दी है, उन्होंने आगे कहा।

मेजबान क्लब सचिव श्रवण बालामुरुगन ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। ■

जब तस्वीरें बोलती है

रशीदा भगत

DIR आव्हान नारंग के नेतृत्व में रो ई मंडल 3040 के इंटरेक्टरों द्वारा आयोजित ग्लोबल ग्रीन्स फोटो प्रतियोगिता में रंगों की भरमार थी और प्रकृति का उत्सव मनाया जा रहा था। इस प्रतियोगिता का आयोजन पर्यावरण संरक्षण के लिए समर्पित है Saevus पत्रिका के साथ साझेदारी में किया गया था।

इन युवाओं द्वारा खींची गई बहुत सी तस्वीरें बहुत अच्छी गुणवत्ता वाली थी, और जैसा कि नारंग ने कहा है, ''फोटोग्राफी करने का अपना ही एक अलग मज़ा है क्योंकि यह ऐसी कला है जिसमें आप खूबसूरत लम्हों को अपने कैमरे में कैद करते हो और फिर उसे पीढ़ियों के लिए सँजोते हो।''

बैठक को संबोधित करते हुए, रो ई मंडल 3040 के डी जी गजेन्द्र नारंग ने कहा कि इस प्रतियोगिता में दुनिया भर के 160 इंटरेक्टरों की प्रभावशाली संख्या की भागीदारी देखने को मिली। Saevus से जूरी का एक समर्पित दल, जिसका नेतृत्व प्रबंध निदेशक और मंडल के एक रोटेरियन, संदीप मल कर रहे थे, ने पुरस्कृत करने हेतु तीन सर्वश्रेष्ठ तस्वीरों एवं सम्माननीय उल्लेखों के लिए पाँच तस्वीरों का चयन किया।

उन्होंने Saevus पत्रिका की सीईओ श्री नंदी, जो एक रोटेरियन है, का धन्यवाद किया जो इस कार्यक्रम के लिए अपने मंडल के इंटरेक्ट क्लबों की ज्ञान साझेदार बनी थी।

जवाब में श्री नंदी ने कहा कि यह उनके लिए भी लाभप्रद अनुभव रहा और उन्होंने वादा किया कि ''भविष्य में भी हमें इस देश के युवाओं तक पर्यावरण की रक्षा की तत्काल आवश्यकता के संदेश को पहुंचाने के लिए रोटरी के साथ काम करने में खुशी होगी।''

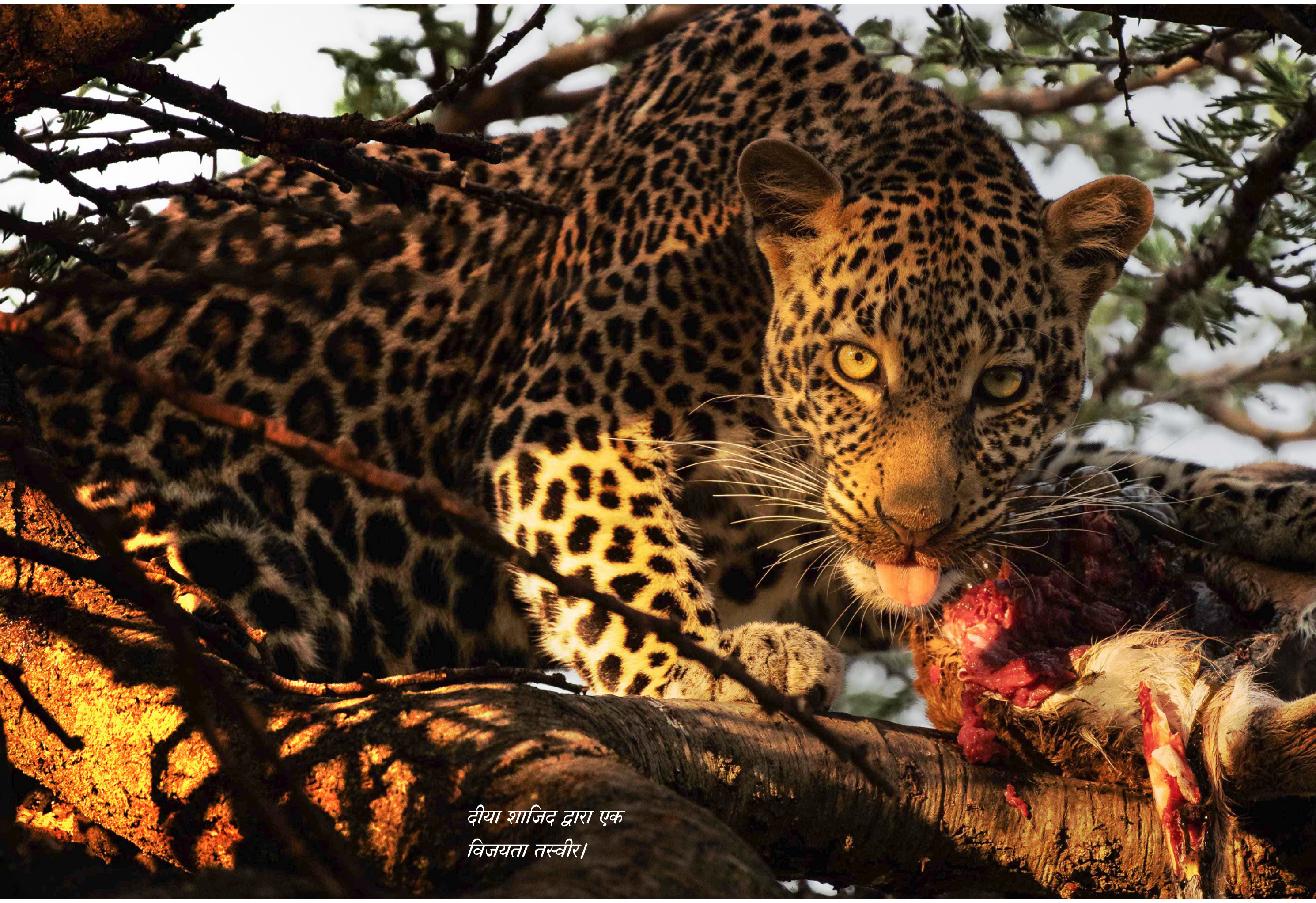

दीया शाजिद द्वारा एक विजयता तस्वीर।

अद्भुत गुणवत्ता

मल ने कहा कि प्रतियोगिता के लिए भेजी गई तस्वीरों की गुणवत्ता वाकई में अद्भुत थी और तस्वीरों को विभिन्न चरणों के माध्यम से छांटना पड़ा। मकड़ी के जाल में फंसे एक पतंगे की शानदार ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीर लेने के लिए प्रथम पुरस्कार आदित्य कृष्ण मेनन को दिया गया।

उस पुरस्कार विजेता तस्वीर को खींचने के उस पल के बारे में बात करते हुए, मेनन ने कहा, ''मैं घर पर बैठ था, लॉकडाउन के कारण बोर हो रहा था, मैंने जाल में मकड़ी और छत पर बैठे पतंगे दोनों को देखा। जैसे-जैसे जाल पर रोशनी पड़

कैसे बनती है एक अच्छी तस्वीर

रोटरी न्यूज की संपादक रशीदा भगत समझाती है कि एक अच्छी तस्वीर खींचना कैमरा से अधिक तस्वीर लेने वाले के ऊपर निर्भर करता है। हालांकि आज मोबाईल फोन की सहायता से कोई भी एक अच्छी तस्वीर खींच सकता है, जो लोग वास्तव में गंभीर फोटोग्राफी में रुचि रखते है उन्हें कैमरा के उपयोग को अवश्य महत्व देना चाहिए।

रचना और प्रकाश एवं उसके स्रोत की महत्ता को समझने के अलावा, धैर्य भी अहम भूमिका निभाता है, विशेष रूप से प्रकृति एवं वन्य जीवों की फोटोग्राफी में। Life पत्रिका द्वारा पूर्व के वर्षों में पूरे पृष्ठ पर छापी गई तस्वीरों की महत्ता को याद करते हुए, उन्होंने इंटरेकटरों से लाइफ पत्रिका द्वारा प्रकाशित की गई तस्वीरों को देखने का आग्रह किया, जिसमें उस तस्वीर में मौजूद विषय के रहस्य, जादू, सार और सुंदरता को कैद किया गया है।

गांधीजी की हत्या से एक दिन पहले बिड़ला हाउस में मौजूद महान फोटोग्राफर हेनरी कार्टियर-ब्रेसन के बारे में बात करते हुए, उन्होंने एक तस्वीर के निर्णायक क्षण की अपनी अवधारणा को समझाया। एक पेशेवर फोटोग्राफर को हमेशा सतर्क और चौकन्ना रहना पड़ता है, और खेल फोटोग्राफरों को यह बखूबी पता होता है। अगर वे एक पल के लिए भी आँखें झपकाते है, तो वे मैच की निर्णायक तस्वीर से चूक सकते है!

धैर्य के महत्व को दोहराते हुए, उन्होंने कहा कि एक विलक्षण सूर्यास्त की तस्वीर खींचते समय, ज्यादातर लोग सूरज ढलने के बाद अपनी कैमरा किट पैक कर लेते हैं। ''लेकिन शाम के आसमान में असली जादू सूरज ढलने के बाद ही शुरू होता है। आकाश तेजी से रंग बदलता है और सूरज की रोशनी के बाद चमकते आकाश के चित्र बहुत नाटकीय और पुरस्कृत हो सकते हैं'', उन्होंने कहा, और युवा फोटोग्राफरों से आग्रह किया कि वे इस शौक के लिए अपने जुनून को कभी न छोड़ें, क्योंकि इसका अनुसरण करते रहने से आगे जाकर यह एक सार्थक पेशे में परिवर्तित हो सकता है।

रही थी, मैंने देखा कि पतंगा रोशनी की ओर आकर्षित होकर मकड़ी के जाल की तरफ बढ़ रहा था। मुझे पता था कि जल्द ही वह जाल में फंस जाएगा, इसलिए मैंने जल्दी से अपना कैमरा निकाला और इंतज़ार करने लगा।''

एक मकड़ी के जाल में फांसी ड्रैगनफ्लाई , एक और विजयता तस्वीर।

एक DSLR कैमरा से खींची गई उस तस्वीर, जो यहाँ प्रकाशित हुई है, ने शानदार ढंग से नाजुक जाल, शिकारी (मकड़ी) और शिकार (पतंगे) को कैद किया है।

यह जानकार अत्यंत खुशी हुई कि पुरस्कार-विजेता युवाओं ने शानदार तस्वीरों को खींचने के लिए मोबाईल फोन के बजाय अपने कैमरा का इस्तेमाल किया था। यह एक शौक के रूप में फोटोग्राफी में उनकी गंभीर रुचि को दर्शाता है, जो शायद बाद में एक पेशे का रूप ले सकता है।

लेकिन मेरी अध्यक्षता में सम्पन्न हुए इस कार्यक्रम के पुरस्कार विजेताओं में से मेरी पसंदीदा तस्वीर द्वितीय पुरस्कार विजेता विशाल नवीन की अपने बच्चे के साथ एक बंदर की तस्वीर थी, जिसने हमारे जनवरी अंक में जगह बनाई थी। मेरे लिए वो तस्वीर बहुत कुछ बोलती है... बेशक इसकी संरचना, इसकी तीक्ष्णता, बैकलाइटिंग और अन्य तकनीकी विशेषताएं बहुत अच्छी हैं। परंतु इससे यह भी साबित होता है कि एक तस्वीर 1,000 शब्दों के बराबर होती है।

उत्तम तस्वीर

लेकिन पहले नवीन की बात जान लेते है कि उन्होंने तस्वीर कैसे खींची: ''मैं चेन्नई के गिंडी पार्क के बाहर था और मैंने बहुत से बंदर देखे और उनके बीच मैंने इस माँ और बच्चे को देखा, और मैंने कुछ तस्वीरें खींची। लेकिन मैं उन शॉट्स से संतुष्ट नहीं था इसलिए मैंने सूरज के डूबने का इंतजार किया और जब मुझे लगा कि रोशनी एकदम सही है, मैंने यह तस्वीर खींची।''

इस तस्वीर में अद्भुत बैकलाइट है और फ्रेम भी सही है। लेकिन जो भावनाएं यह दर्शकों में पैदा करती है, और वह भी तब जब 2020 जैसा विनाशकारी वर्ष खत्म हो गया है, और एक नया साल शुरू हो रहा है, उसे उमड़ने से रोका नहीं जा सकता। यह तस्वीर प्यार और कोमलता के साथ-साथ आशा और सुरक्षा दोनों के बारे में है।

PDG प्रमोद झेझुरीकर, जिन्होंने इस कार्यक्रम को संबोधित किया था, ने DIR आव्हान नारंग का इस अद्भुत पहल के लिए धन्यवाद किया जिसने दुनिया भर के इंटरेक्ट क्लबों को आपस में जोड़ा। उन्होंने याद किया कि कुछ हफ्तों पहले रोटरी भारत ने स्कूली बच्चों के लिए एक वन्य-जीव कार्यक्रम आयोजित किया जिसे RIPE शेखर मेहता ने संबोधित किया था जिसमें 95,000 की रिकार्ड संख्या में भागीदारी देखने को मिली थी, जिसमें वे हजारों लोग भी शामिल है जिन्होंने फेसबुक लिंक के माध्यम से इसे देखा था।

इंटरेक्ट के मंडल प्रमुख लोकेश झवर ने घोषणा की कि एक सप्ताह के भीतर 10 इंटरेक्ट क्लब खोले जा रहे है जो वर्तमान के 14 सक्रिय इंटरेक्ट क्लबों में इजाफा करेंगे।

DGE महेंद्र मिश्र, इस कार्यक्रम के परियोजना प्रमुख, DGN धीरेन्द्र जैन और मंडल प्रशिक्षक अतुल गार्गव ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया था।■

DG गजेंद्र नारंग के साथ DIR आव्हान नारंग।

बोलती तस्वीरें - रो ई मंडल 3131 का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम

टीम रोटरी न्यूज़

बाएं से: मुकेश गुप्ता, जिग्नेश पांड्या, डीजी रश्मि कुलकर्णी, RPIC दीपक शिखरपुर और मंडल PI के निदेशक विवेक दीक्षित डिजिटल विपणन मंच के शुभारंभ समारोह में।

मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं खुद ऐसे शानदार वीडियो बना पाऊंगा। बहुत ही रोमांचक!

''रोटरी को बढ़ावा देने के लिए अच्छे पोस्टर और वीडियो बनाना समय की मांग है, और अब हम जानते है कि यह कैसे करना है!''

''इस वर्ष के पहले भौतिक कार्यक्रम में भाग लेना रोमांचक था।''

ये बोलती तस्वीरें, रोटरी मंडल 3131 के सार्वजनिक छवि दल के द्वारा आयोजित किया गया प्रशिक्षण कार्यक्रम, के प्रतिभागियों से प्राप्त कुछ प्रतिक्रियाएं है, सार्वजनिक छवि के सह-अध्यक्ष, मोहन चौबल कहते है। पुणे में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य सार्वजनिक छवि दलों और रोटरी क्लबों के नेताओं को अपनी परियोजनाओं और कार्यक्रमों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले प्रचार वीडियो और पोस्टर बनाने में समर्थ बनाना था। डीजी रश्मि कुलकर्णी और मंडल पीआई निदेशक विवेक दीक्षित सदस्यता विकास और अनुदान संचयन के लिए इस तरह की जानकारी को सार्वजनिक करने के महत्व पर जोर देते। 2020-21 की मंडल पी आई टीम इस वर्ष डिजिटल मीडिया का आक्रामक रूप से उपयोग कर रही है और इसने मंडल परियोजनाओं और कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए कई दिलचस्प वीडियो, पोस्टर, ब्रोशर और होर्डिंग्स बनाए है।

पीआई टीम द्वारा जल्द ही यह महसूस किया गया कि क्लब प्रभावी संचार उपकरण बनाना चाहते है, लेकिन उनमें से कई लोगों के पास ऐसा करने का ज्ञान नहीं था। इसलिए, प्रभावी पोस्टर और वीडियो बनाने पर क्लब अधिकारियों को प्रशिक्षित करने के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया और इसे उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली, और कुछ ही दिनों में 100 लोगों की क्षमता वाले हॉल के लिए प्रतिभागियों को पंजीकृत किया गया।

''जिग्नेश पंड्या, डिजिटल मीडिया के विशेषज्ञ और मंडल की डिजिटल मीडिया पहल के प्रमुख, प्रशिक्षक थे, और अपनी टीम के साथ उन्होंने प्रतिभागियों को प्रशिक्षित करने का एक महत्वपूर्ण काम किया, जिनमें वो भी शामिल है जो बहुत ज्यादा तकनीक-प्रेमी नहीं है, और इस कार्यशाला में उनकी रुचि एवं सक्रिय भागीदारी दोनों ही देखने को मिली, RPIC ज़ोन 7 के पीडीजी दीपक शिखरपुर ने कहा। ''हर कोई ढाई घंटे के लिए अपने फोन से चिपके हुए थे। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि प्रतिभागियों को प्रशिक्षण बहुत ही रोचक'', आनंददायक और प्रेरक लगा।

बोलती तस्वीरें डीजी कुलकर्णी द्वारा शुरू किया गया था, और पीडीजी शिखरपुर मुख्य वक्ता थे। मंडल अधिकारी मंजु फड़के, शीतल शाह और सुदीन आप्टे ने रोटरी के प्रभावी प्रचार के महत्व पर अपने विचार साझा किए। रोटरी न्यूज की संपादक रशीदा भगत और रोटरी अंतर्राष्ट्रीय दक्षिण एशिया कार्यालय की वरिष्ठ समन्वयक - संचार और जन संपर्क, ज्योति राय ने तस्वीरें लेने और प्रभावी संचार की कला पर वीडियो संदेश साझा किए। कार्यक्रम के दौरान शिखरपुर द्वारा मंडल का डिजिटल मार्केटिंग प्लेटफॉर्म भी लॉन्च किया गया।

कोविड महामारी के दौरान सुरक्षा पर सभी अनिवार्य सावधानी बरतते हुए यह कार्यक्रम विवेक दीक्षित और मुकेश गुप्ता के नेतृत्व में आयोजित किया गया था।■

इस से पहले कि परिवर्तन आपको बर्बाद करें, उसे अपना लीजिए: रो ई निदेशक पांड्या

जयश्री

परिवर्तन किसी जगह या किसी व्यक्त से शुरू नहीं होता है। यह हमारे ही अंदर से शुरू होता है'', रोटरी इंटरनेशनल वुमन्स (RIW) समूह द्वारा 'बी दी चेंज' पर आयोजित एक आभासी बैठक में दुनिया भर के 400 भागीदारों को संबोधित करते हुए रो ई निदेशक पांड्या ने कहा।

''यदि आप परिवर्तन के साथ आगे बढ़ना चाहते है तो प्रतिबद्धता, सामर्थ्य, साहस और आत्मविश्वास आपके नारे होने चाहिए। परिवर्तन को गले लगाना ही बेहतर है वरना यह आपको तोड़ देगा या खत्म कर देगा'', उन्होंने कहा।

रोटरी अब एक चौराहे पर है। ''हमें अतीत में हासिल की गई अनेक महान उपलब्धियों पर गर्व है। लेकिन एक शानदार कल के लिए बहुत कुछ किया जाना अभी बाकी है। वह क्षमता जो हममें से हर एक के पास है और जिस तरह से हमें उस क्षमता का एहसास होता है, वहीं हमें सफल बनाता है'', उन्होंने कहा।

रोटरी में अधिकांश पद एक वर्ष के लिए होते है। ''क्या हम इस परंपरा की वजह से बदलाव को स्वीकार कर रहे है? या हम वास्तव में बदलाव चाहते है?'' उन्होंने आश्चर्य करते हुए आगे कहा, ''हमने अपने आप को एक सुविधा क्षेत्र में बसा लिया है, और आत्मसन्तोष की एक भावना हमारे मन में बैठ गई है। लंबे समय से, हमारी सदस्यता 1.2 मिलियन रोटेरियनों पर स्थिर थी। लेकिन पिछले दो वर्षों में हम नीचे गिरकर 1.18 मिलियन पर आ गए है। यानी, महामारी से पहले ही सदस्यता में गिरावट दर्ज की गई है। अब समय आ गया है कि हम अपने भीतर देखें और रोटरी को सही दिशा में ले जाने के लिए एक बदलाव लाएं।''

पांड्या ने रोटरी के संस्थापक पॉल हैरिस के शब्दों को दोहराया: 'रोटरी को हर समय विकासवादी और समय-समय पर क्रांतिकारी होना चाहिए', और ऐसे उदाहरणों का हवाला दिया जब रोटरी नेतृवकर्ता क्रांतिकारी परिवर्तन लाए। ''इन 115 वर्षों में, 1905 में सिर्फ चार सदस्यों से अब 1.2 मिलियन सदस्यों तक, यह हमेशा से ही विकासवादी और समुदायों के लिए प्रासंगिक रही है। रोटरी मेलजोल और नेटवर्किंग के लिए शुरू की गई थी। सेवा के पहलू ने एक प्रतिमान स्थापित किया था और आज हमारा आदर्श वाक्य 'स्वयं से ऊपर सेवा' है। यह वास्तव में एक क्रांतिकारी बदलाव है।''

जब आर्च क्लम्फ ने 50 डॉलर से रोटरी संस्थान की शुरुआत की, उस समय यह एक क्रांतिकारी घटना थी और अब, यह दुनिया के अग्रणी संस्थानों में से एक है। ऐसी ही एक अन्य क्रांतिकारी घटना हर्बर्ट टेलर द्वारा बनाए गए सेवा के चार मार्ग और चार-मार्ग परीक्षण की रचना थी जो सभी रोटेरियनों के लिए जीने का एक मापदंड है। संविधान परिषद, रोटरी संसद, उस समय एक क्रांतिकारी परिवर्तन था। ''अब इस नीति पर फिर से काम करने का समय आ गया है। क्या हमें नियम एवं कायदों को बदलने के लिए (CoL) के मिलने के लिए तीन वर्षों का इंतज़ार करना चाहिए? हाल ही में शुरू की गई हर साल मिलने वाली प्रस्ताव परिषद भी उसी दिशा में एक क्रांति है'', उन्होंने समझाया।

टीआरएफ अनुदानों का उल्लेख करते हुए, उन्होंने कहा, ''क्या आप दुनिया में कोई भी ऐसी जगह की कल्पना कर सकते है जहाँ आपके द्वारा दिए गए 1 डॉलर का मिलान अनेक बार किया जाता है?'' यह अवधारणा उस समय क्रांतिकारी थी। और, रोटरी की नवीनतम क्रांति, इसकी कार्ययोजना और नए दृष्टि कथन में है। ''रोटरी का भविष्य की परिकल्पना कार्यक्रम एक और शानदार क्रांतिकारी कार्यक्रम है जिसने अनुदानों को अगले स्तर पर पहुँचाया है। इसने रोटेरियनों को स्थानीय स्तर पर कार्य करने और विश्व स्तर पर सोचने का मार्ग दिखाया है'', उन्होंने आगे कहा।

मंडल अनुदान स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करते है, जबकि वैश्विक अनुदान समुदायों में प्रभावपूर्ण परियोजनाएं करने में मदद करते है। ''इसलिए अपने आप को किताबें और स्कूल यूनिफॉर्म बांटने तक सीमित मत कीजिए। बड़े सपने देखिए। आगे का मार्ग सरकारी, अर्ध-सरकारी एवं निजी संगठनों के साथ साझेदारियों में है जिससे हम हमारे प्रभाव को बड़ा सकते है।''

पोलियोप्लस साझेदारी के लिए सबसे अच्छा उदाहरण है। ''परंतु जितना भी हम कॉलर ऊंची करके यह कह ले कि हमने इस उपलब्धि को हासिल किया है, हमें इस बात का एहसास होना चाहिए कि पोलियो सफलता की कहानी विश्व सरकारों, डब्ल्यूएचओ, यूनिसेफ और गेट्स फाउंडेशन की साझेदारी के बिना संभव नहीं होती। रोटरी की पहुंच को बढ़ाने के बारे में बात करते हुए, उन्होंने 'ग्रो रोटरी' पहल पर जोर दिया, जिसे 2019-20 में रो ई द्वारा अपनाया गया था। रोटरी एक सेवा संगठन नहीं है, यह एक सदस्य संगठन है। हमारे सदस्य हमारे ग्राहक है। हमें अपने सदस्यों के लिए मूल्य बनाना होगा, जैसे मेलजोल, रोटरी की अंतर्राष्ट्रीयता, गौरव, आत्म-विकास और नेतृत्व। केवल तभी रोटरी बढ़ सकती है।''

'गुणवत्तापूर्ण सदस्यों' को आकर्षित करने के बारे में बात करते हुए, पांड्या ने कहा, ''जब आप किसी पर एक उंगली उठाते है तो याद रखिए की तीन उंगली आपकी ओर ही रहती है। रोटेरियनों को सबसे पहले अपनी स्वयं की गुणवत्ताओं का अंकेक्षण करना चाहिए। फिर अपने आप ही आपका क्लब गुणवत्तापूर्ण सदस्यों को आकर्षित करेगा।'' उन्होंने दोहराया कि पुरुष एवं महिला सदस्यों के लिए समान अवसर होने चाहिए। ''रो ई ने हाल ही में एक लक्ष्य निर्धारित किया है कि 2023 तक रोटरी के पास नेतृत्व पदों पर 30 प्रतिशत महिलाएं होना चाहिए।''

पीढ़ियों से महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता रहा है। ''हमें उस दृष्टिकोण को बदलने की जरूरत है'', उन्होंने कहा और एक चिकित्सीय अध्ययन का उल्लेख किया है जो सीने में दर्द की शुरुआत के बाद अस्पताल पहुंचने में पुरुषों एवं महिलाओं द्वारा लिए गए समय की तुलना करता है। ''पुरुषों के लिए, औसत समय दो घंटे है, जबकि महिलाएं 22 घंटे बाद चिकित्सा सहायता के लिए बाहर निकलती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि महिलाएं अपनी व्यक्तिगत समस्याओं को अनदेखा करती है और पहले अपने परिवार को रखती है। मानसिकता में यह बदलाव आप से शुरू होना चाहिए'', महिला प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा।

रोटरी की सार्वजनिक छवि में परिवर्तन की आवश्यकता है। ''यह बाहरी दुनिया के लिए सार्वजनिक छवि के बारे में नहीं है, बल्कि हमारे सदस्यों के बारे में है। कम से कम 60 फीसदी रोटेरियनों को इस बात की जानकारी नहीं है कि रोटरी क्या है। हमें सबसे पहले रोटेरियनों से रोटरी का परिचय करवाने की आवश्यकता है। हमें अपने संगठन पर गर्व होना चाहिए। केवल तभी हम बाहरी लोगों से रोटरी का परिचय करवा सकते है।''

कम से कम 60 फीसदी रोटेरियनों को इस बात की जानकारी नहीं है कि रोटरी क्या है। हमें सबसे पहले रोटेरियनों से रोटरी का परिचय करवाने की आवश्यकता है।

प्रोजेक्ट पॉजिटिव हेल्थ की प्रासंगिकता को वर्णित करते हुए, पांड्या ने उपचरात्मक से निवारक स्वास्थ्य देखभाल की ओर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक बदलाव लाने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी ने हमें दो महत्वपूर्ण सबक सिखाए है - अच्छा स्वास्थ्य एक व्यक्ति की सबसे बड़ी दौलत होती है और सहरुग्णता वाले लोगों में मृत्यु दर अधिक होती है।

पोलियो के बाद रोटरी के ध्यानाकर्षण के बारे में एक प्रतिभागी द्वारा पूछे गए एक सवाल पर, उन्होंने जवाब दिया कि जब तक पोलियो पूरी तरह से समाप्त नहीं हो जाता तब तक रोटरी किसी अन्य प्रमुख कार्यक्रम पर विचार नहीं करेगा। ''मेरा मानना है कि पोलियो के बाद वास्तव में क्षेत्रीयकरण की आवश्यकता है। अलग-अलग क्षेत्रों को अलग-अलग ध्यान की जरूरत होती है। स्पेन में जो आवश्यकताएं है, जरूरी नहीं कि किसी अन्य देश में भी वैसी ही जरूरतें हो। इसलिए, विभिन्न क्षेत्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए रोटरी को सुधारा जाना चाहिए।''

रोटरी क्लब इबिज़ा, स्पेन, के एक RIW सदस्य डेनिस किल्सचन ने सुझाव दिया कि रोटरी मासिक धर्म स्वच्छता एवं सफाई (MHH) को एक वैश्विक परियोजना के रूप में अपना सकता है। MHH के लिए एक रोटरी एक्शन ग्रुप हेतु RIW रो ई की स्वीकृति की प्रतीक्षा में है। रो ई निदेशक ने समूह की पहल की सराहना करते हुए कहा, ''पीरीअड गरीबी जितना पश्चिमी देशों का मुद्दा है उतना ही विकासशील देशों का भी है। आप और अधिक शक्तिशाली बने।'' उन्होंने RAG में प्रोजेक्ट पाज़िटिव हेल्थ को सम्मिलित करने का सुझाव दिया ''क्योंकि जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों के प्रति महिलाएं पुरुषों की तरह ही अतिसंवेदनशील है।''

RIW की संस्थापक सदस्य विद्या श्रीनिवासन ने स्वागत सम्बोधन दिया और बी दक्षायणी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। ■

रोटरी क्लब रासीपुरम ने ग्रामीण महिलाओं के जीवन को बदलने हेतु किया गायों का दान

वी मुत्तुकुमारण

तमिलनाडु के नामक्कल जिले के रासीपुरम के पास स्थित कौतुर गाँव के रथिनम (60) को अनिश्चितता और भय के काले बादलों ने तब जकड़ लिया जब उसने महामारी के दौरान अपनी आजीविका का एकमात्र स्रोत, एक अकुशल नौकरी, खो दी। ''मेरी उम्र के कारण कोई भी मुझे खेत का काम करने के लिए नहीं रखेगा। मैं बहुत चिंतित थी, लेकिन भगवान मेरे साथ थे और रोटेरियनों ने मुझे यह गर्भवती गाय दी जिसने एक स्वस्थ बछड़े को जन्म दिया। अब मैं घरों में 10-12 लीटर दूध पहुंचाती हूं और मेरी आमदनी इतनी बढ़ गई है जिसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी।''

एक और दिल को छू लेने वाली कहानी मासाकालीपट्टी गाँव की पद्मावती (38) की है, जो कभी भी रोटरी की प्रशंसा करना बंद नहीं करती जिसने उसे एक स्वस्थ, गर्भवती गाय दी। ''मेरा परिवार बहुत खुश है और हम इस उपहार को एक बड़े डेयरी फार्म में विकसित करेंगे। रोटरी की बदौलत, हम गरीबी से बाहर आए है और अपने दूध के कारोबार का विस्तार करने की सोच कर रहे है।''

भारत में रोटरी के 100 वर्षों का जश्न मनाने के लिए, रोटरी क्लब रासीपुरम, रो ई मंडल 2982, ने रोटरी क्लब कैम्पो मौराओ, ब्राजील, रो ई मंडल 4630, के साथ साझेदारी में ₹53.68 लाख की लागत वाली एक वैश्विक अनुदान परियोजना के माध्यम से गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाली महिलाओं को 108 गर्भवती गाए दान दी। पिछले साल आईपीपी ए तिरुमूर्ति (जिन्हें क्लब में रवि के नाम से जाना जाता है) के कार्यकाल के दौरान इस परियोजना की कल्पना की गई थी, क्लब के अध्यक्ष एस कार्ठीरेसन की अध्यक्षता में मुख्य अतिथि के रूप में जिला कलेक्टर के. मेघराज के साथ सम्पन्न हुए एक कार्यक्रम में लाभार्थियों ने अपनी दुधारू गायों को प्राप्त किया।

बाएं से: रोटरी क्लब रासीपुरम के अध्यक्ष एस कदिरेसन, लाभार्थी रतिनम, डीजीई पी सर्वनान और आईपीपी ए तिरुमूर्ति।

नामक्कल के मंडल कलेक्टर के मेघराज एक गाय एक लाभार्थी को सौंपते हुए। चित्र में प्रोजेक्ट के सह-अध्यक्ष के कंदसामी (बाएं से दूसरे) और प्रोजेक्ट के प्राथमिक संपर्क एस बालाजी (दाएं से तीसरे) शामिल हैं।

इससे पहले, क्लब के छह-सदस्यीय वैश्विक अनुदान दल ने सामुदायिक मूल्यांकन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए 8-9 गांवों का दौरा किया ताकि यह पता लगाया जा सके कि ''एक स्थायी आय अर्जित करने के लिए लोगों को वास्तव में किस चीज़ की आवश्यकता है। हमें वीएओ और स्व-सहायता समूहों से मार्गदर्शन और मदद मिली,'' कामधेनु गाय परियोजना के द्वितीय संपर्क रोटेरियन एन पी रामास्वामी ने कहा।

''हमने विशेष रूप से उनसे उनकी बुनियादी आवश्यकताओं के बारे में पूछा और उनको सिलाई जैसे व्यावसायिक कौशल में पारंगत होने के सुझाव दिए। लेकिन उन्होंने उस विचार को खारिज कर दिया, और दुधारू गायों की खरीद के लिए मदद मांगी'', उन्होंने कहा। सर्वेक्षण टीम ने सामाजिक पृष्ठभूमि देखकर लाभार्थियों का चुनाव किया जिसमें ज्यादातर गरीब परिवारों की विधवाएं और 30 साल से ऊपर की महिलाएं थी।

प्रशिक्षण सत्र

क्लब ने वेटरनरी कॉलेज एंड और रिसर्च इंस्टीट्यूट, नामक्कल से तीन प्रोफेसरों द्वारा चुने गए लाभार्थियों के लिए चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की व्यवस्था की। उन्हें संस्थान की पशु चिकित्सा प्रयोगशाला में व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ ''डेयरी फार्मिंग और वित्तीय साक्षरता सिखाई गई थी, जिसमें मूल्य-वर्धित दुग्ध उत्पादों के प्रसंस्करण और उन्हें सीधे तौर पर या आविन समाज और निजी विक्रेताओं के माध्यम से बेचने जैसे पहलुओं को शामिल किया गया'', रामस्वामी ने कहा। वह अनुमान लगाते है कि एक गाय का पालन-पोषण करके एक महिला प्रति माह ₹13,000- 14,000 तक कमा सकती है, आगे कहते हुए कि गोवंश की देखभाल के लिए उन्हें हर दिन केवल तीन घंटे निवेश करने होंगे।

लगभग सात साल पहले, क्लब ने रासीपुरम तालुक के पास स्थित 7-8 गांवों में रहने वाली 150 गरीब महिलाओं को सदस्यों के नकद योगदान के माध्यम से नियमित आवर्तन के साथ बकरियाँ दान की। विश्वविद्यालय के अधिकारियों से मिली एक प्रशंसा रिपोर्ट के बाद, ''सरकार ने अपने स्वयं के धन से यह परियोजना की।'' गौ दान ने एक साख जमाई और आस-पास के गांवों में रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाया क्योंकि ''हमारी परियोजना ने वंचित परिवारों को आजीविका का एक विश्वसनीय स्रोत प्रदान किया था'', कदिरेसन कहते है। ''हम दोगुना खुश थे क्योंकि कामधेनु परियोजना, हमारा पहला वैश्विक अनुदान, हमारे क्लब के रजत जयंती वर्ष पर लागू किया गया था।''

लाभार्थियों के चयन के तरीके, उनके प्रशिक्षण और आय जैसे विभिन्न पहलुओं की जांच कर लेने के बाद ही टीआरएफ द्वारा वैश्विक अनुदान को मंजूरी दी गई थी। ''यह इस क्षेत्र में एक अग्रणी परियोजना थी'', IPDG ए के नटेसन कहते है। ''परियोजना को मंजूरी मिलने में 12 महीने लग गए, शुरुआत में लंबे समय में इसकी स्थिरता को लेकर संदेह था।''

उल्लेखनीय परियोजनाएँ

क्लब के सदस्य एस बालाजी ने निजी अस्पतालों के साथ मिलकर 2005 के बाद से 117 नि:शुल्क हृदय सर्जरियों की सुविधा प्रदान की है जो ज्यादातर गरीब बच्चों पर की गई थी।

एक अन्य पहल में क्लब अन्य सुविधाओं के साथ लड़कियों के लिए एक शौचालय का निर्माण करेगा, एक कंप्यूटर लैब, आरओ वॉटर प्यूरीफायर स्थापित करेगा और सेक्रेड हार्ट एचएस स्कूल के लिए डेस्क और बेंच प्रदान करेगा।

वैश्विक अनुदान के माध्यम से होने वाला धन संचयन ₹25 लाख है, जो अनुमोदन की प्रक्रिया में है, कदिरेसन कहते है। ''800 विद्यार्थियों को फायदा पहुँचाने वाली हैप्पी स्कूल्स परियोजना जून से पहले पूरी हो जाएगी।''

डीजी के एस वेंकटेशन, पीडीजी ए के नटेसन, ARRFC एस वासु, ARRFC गोपालकृष्णन, रो ई मंडल 3000, DRFC के बाबू, वेटरनरी कॉलेज के डीन डॉ बी मोहन और पशुपालन क्षेत्रीय निदेशक डॉ वी पी पोन्नुवेल लाभार्थियों को पशुधन सौंपने के इस मौके पर मौजूद थे। ■

यह हमारी कार्य योजना है।

हमारी प्राथमिकता

हम साझेदारों की सहभागिता को बढ़ावा दे रहे हैं

Rotary

अपने सहभागियों को पहले रखते हुए

हम चाहते है कि हमारे सभी रोटरी प्रतिभागी - हमारे सदस्य और कोई भी व्यक्ति जो रोटरी गतिविधियों के माध्यम से जुड़ते है - व्यस्त महसूस करें और उन्हें सर्वश्रेष्ठ अनुभव प्राप्त हो, फिर चाहे वे हमारे साथ एक दिन के लिए रहे या फिर दशकों तक के लिए। लेकिन हम जानते हैं कि ऐसा हमेशा नहीं होता है। अब हमारे कार्यवाही करने का समय आ गया है।

आइए हमारे प्रतिभागियों से पूछें कि वे रोटरी में क्या देखना चाहते है और मूल्यवान अवसरों के साथ उन्हें पूरा करें। इसी तरह हमें लोगों का योगदान प्राप्त होता रहेगा और वे अधिक देने के लिए दोबारा आएंगे।

हम क्या करेंगे।

- सहभागिता को मापने और क्लब सुधार को प्रोत्साहित करने के नए तरीके विकसित करें
- नए उत्पाद और प्रस्ताव तैयार करें जो अधिक और बेहतर मूल्य प्रदान करते हो
- टोस्टमास्टर्स इंटरनेशनल जैसे अन्य संगठनों के साथ काम करके नेतृत्व कौशलों का निर्माण करें
- नए व्यक्तिगत और पेशेवर व्यस्तता के अवसर प्रदान करें

आपका क्लब क्या कर सकता है।

मांगिये

आपके रोटरी प्रतिभागियों और आपके समुदाय की प्रतिक्रिया

कीजिए

क्लब की ''स्वास्थ्य जांच'' एवं भिन्नताओं या मुद्दों को संबोधित

अपनाएं

एक अधिक साझेदार केंद्रित दृष्टिकोण

ढूंढें

क्लब की गतिविधियों और सेवा परियोजनाओं में सभी को शामिल करने के नए तरीके

अधिक जानना चाहते है?

पूर्ण Action Plan ***rotary.org/actionplan*** पर पढ़ें।

15-16-17 JANUARY (4pm to 8pm)
Rotary
THE ODYSSEY
A VIRTUAL JOURNEY
ROTARY INSTITUTE 20-21
ZONES 4, 5, 6, 7
RIPE Shekhar Mehta
RI President Elect
RID Kamal Sanghvi
Convenor
PDG Sanjay Khemka
Chairman
PDG John Daniel
Secretary
RIPN Jennifer Jones
RID Bharat Pandya
PRIP K R Ravindran
Chair, TRF
Kumar Mangalam Birla
Chair Aditya Birla Group
Dr. Yasmin Ali Haque
UNICEF Country Representative
Amitabh Kant
Chief Executive Officer – NITI Aayog of India
Nandan Nilekani
Non-Executive Chairman of Infosys
Soumya Swaminathan
WHO, Chief Scientist
Nitin Nohria
Dean, Harvard Business School
Shashi Tharoor
MP
Vijay Advani
Executive Chair, Nuveen
Gaur Gopaldasji
Motivational Speaker & Spritual Leader
Vandana Shiva
Scholar
Sandeep Mathrani
CEO, WeWork
Sonu Sood
Actor
REGISTER AT : WWW.ROTARYINSTITUTE2020.ORG
OPEN FOR ALL THE ROTARIANS ON FIRST COME FIRST SERVE BASIS

Habil Khorakiwala
Founder Chair of Wockhardt Ltd

Pankaj Patel
Chairman and Managing Director - Zydus Cadila Limited

Dr Prathap C Reddy
Founder Chair, Apollo Group of Hospitals

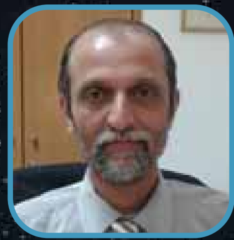
Ajit Ranade
President & Chief Economist- Aditya Birla Group

Dr Randeep Guleira
Director -AIIMS, New Delhi

Kiran Mazumdar Shaw
Chairperson, Biocon

Nasir Shaikh
Atos Head of Human Resources: India

Philippe Mareine
Chief Digital & Transformation Officer, Head of CSR at Atos, France

Ashok Vaswani
CEO Barclays Bank

Anish Sarkar
CEO, Sodexo BRS India

Varun Sridhar
CEO, Paytm

Bhupesh Daheria
CEO, Aegis School of Data Science

Vallabh Bhansali
Thought Leader & Investment Banker

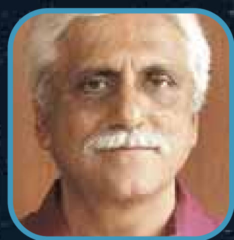
Ayaz Memon
Consulting Editor and Columnist

Rahul Dravid
Former Captain, Indian National Cricket Team

Arthur Mattli
Swiss Ambassador

Judge Silvia Fernandis
Chair, Intl Criminal Law

Liberata Mulamula
Former Ambassador of Tanzania to USA and currently Secretary , Ministry of Foreign Affairs

Riddhima Pandey
Climate Change Activist

PRID Bryn Styles
Aide to President-Elect Rtn Shekhar Mehta

RID Peter Kyle
RI Director

Trustee Larry Lunsford
Chair – Rotary Peace Centres

Trustee Gulam Vahanvaty

RIDE Mahesh Kotbagi

RIDE A S Venkatesh

HELPLINE DETAILS: SNEHLATA, CONTACT NO: +91 8521613250,

EMAIL ID: INFO.INSTITUTE2020@GMAIL.COM

अफगानिस्तान:

जवाब से ज्यादा सवाल

रशीदा भगत

वर्ष 2005 में, *हिंदू बिज़नेस लाइन* के साथ काम करते हुए, मुझे युद्ध से उजड़े हुए अफगानिस्तान की यात्रा करने और वहां से रिपोर्ट करने का अवसर मिला था। उन दिनों इसे तालिबानी शासन के स्याह, बुरे दिनों से मुक्त कर दिया गया था और इसका पुनर्निर्माण चल रहा था, लेकिन इस यात्रा का सबसे हृदय विदारक भाग था दशकों तक संघर्ष, हिंसा, युद्ध और क्रूरता से गुजरने के बाद पूरे अफ़ग़ानिस्तान की तबाही देखना। निश्चित रूप से महिलाएं बुरी तरह से प्रभावित हुई थीं और लैंगिक असमानता के मुद्दों में दिलचस्पी के नाते, सबसे पहले मैं महिलाओं से ही, उन पर हुई यातना, जुल्म और क्रूरता के बारे में जानना चाहती थी, तालिबानी हुकूमत के दौरान और उससे पहले।

उमा और कार्तिक नारायण के साथ हुई बातचीत के बाद यात्रा की

शुरुआत हो गई, उनके करीबी दोस्त काबुल के फ्रांसीसी दूतावास में कार्य करते थे और वो हमारे स्थानीय गाइड बनने के लिए राजी हो गए थे। तो उमा, नारायण, बैंगलोर से उनकी मित्र माया जयपाल, एक बढ़िया फोटोग्राफर और मैं दिल्ली से काबुल की उड़ान पर रवाना हो गए। हमारी स्वाभाविक पसंद इंटरकांटिनेंटल होटल थी, 1990 के दशक में, विभिन्न नागरिक सेनाओं द्वारा गृह युद्ध में हमलों से क्षतिग्रस्त होने के खौफनाक इतिहास और आये दिन संप्रहार झेलने के बावजूद, यही एकमात्र विकल्प था क्योंकि काबुल में एक बड़ा और प्रतिष्ठित होटल यही था जहां सुरक्षा का थोड़ा बहुत भरोसा था।

9/11 के बाद, अफगानिस्तान में अमेरिका के हमले के दौरान और उसके बाद, अंतर्राष्ट्रीय मीडिया ज्यादातर यहीं ठहरता था। काबुल

इस यात्रा का सबसे हृदय विदारक भाग था दशकों तक संघर्ष, हिंसा, युद्ध और क्रूरता से गुजरने के बाद पूरे अफ़ग़ानिस्तान की तबाही देखना।

कुछ अफगान बच्चों के साथ साक्षात्कार।

हवाई अड्डे से, जिन सड़कों से होते हुए हम होटल पहुंचे, मेरे विचार से तब सड़कें टूटी फूटी और उबड़ खाबड़ थीं, लेकिन बाद में इससे भी ज़्यादा खराब मिली - हर जगह आड़ी-तिरछी चलती लैंड क्रूजर नज़र आ रही थीं। बाद में मुझे पता चला कि इस देश को, हामिद करजई सरकार से ज़्यादा, अंतर्राष्ट्रीय सहायता संगठन चला रहे थे जो मुख्यतः संयुक्त राष्ट्र से सम्बद्ध थे और ये लैंड क्रूजर अफगानिस्तान में काम कर रहे गैर सरकारी संगठनों की थीं।

मुझे कोई संदेह नहीं था कि महिलाओं की स्थिति और लड़कियों की शिक्षा, अफगानिस्तान से भेजे गए मेरे लेखों का आधार होगी, बड़ी उत्सुकता से मैं अपने साथियों के साथ, खरीदारी के लिए काबुल की एकमात्र प्रसिद्ध और गुलजार गली, चिकन स्ट्रीट के लिए निकल पड़ी। हवा में कबाब और अन्य स्ट्रीट फूड की खुशबू तैर रही थी, लेकिन अफसोस मेरे दोस्तों ने उस तरफ झांका तक नहीं, क्योंकि उनमें ज्यादातर शाकाहारी थे, सड़क के दोनों तरफ रंग बिरंगी दुकानें विभिन्न प्रकार के आभूषण, चमड़े के सामान, वस्त्र, बनावटी आभूषणों, कलाकृतियों आदि से सजी हुई थी लेकिन सब से ऊपर, हाथ और मशीन से बने कालीन और आसन रखे थे। अफगानिस्तान मूल के गहरे नीले रंग के सस्ते रत्न लैपिज़ की नक्काशी का उपयोग लगभग हर चीज में किया गया था... अंगूठियां, कान के छल्ले, हार, कंगन, टेबलवेयर, और भी बहुत कुछ। हमें अमेरिकी मुद्रा के 1 डॉलर के नोट रखने की सलाह दी गई थी, ये खरीदारी में काफी काम आए और इससे बातचीत का रास्ता भी खुला।

स्वाभाविक रूप से इस गली में चुम्बकीय आकर्षण था जो अफगान की अजीबो गरीब वस्तुएं देखने सैकड़ों विदेशी पर्यटकों को खींच लाता था, जिसके बारे में अभी तक उन्होंने किताबों में पढ़ा या फिल्मों में देखा था। लेकिन चिकन स्ट्रीट पर रखे सामानों के जीवंत रंगों, चमक और झिलमिलाहट के विपरीत, वहां आसमानी रंग में लिपटी आकृतियां भी सड़क पर फिसलती नज़र आ रही थीं, चलते फिरते पुलिंदे की मानिंद।

तालिबान के लंबे शासन के बाद, काबुल की अधिकांश महिलाएं आसमानी बुरके के पीछे चली गईं थी और अपनेआप को सिर से पैर

तक पूरी तरह से ढके रहती थीं। इन्हें देख कर मेरा दिल टूट गया कि ये वही महिलाएं हैं जो कभी अपनी शैली, स्टाइल और फैशन के लिए इतनी प्रसिद्द थीं कि यूरोप के त्वचा की देखभाल वाले प्रमुख सौंदर्य ब्रांड अपने नए उत्पाद के परीक्षण के लिए और महिलाओं में इसकी लोकप्रियता परखने के लिए उन्हें पेरिस, लंदन और न्यूयॉर्क के साथ-साथ काबुल में भी लॉन्च किया करते थे। उनसे बातचीत करने के लिए जब मैंने आवाज़ दी तो एक अजनबी से बात करने में वो इतना डर गई कि मेरे नज़दीक आते ही उन्होंने अपनी चाल तेज कर दी और दूर निकल लीं।

रशीदा भगत

ऊपर: तालिबान ने अफगान महिलाओं का आत्मविश्वास इस हद तक नष्ट कर दिया था की वे किसी भी अजनबी इंसान से बात करने राज़ी नहीं थी।

गैर सरकारी संगठनों, दूतावासों, स्कूलों, नागरिक समाज और महिला कार्यकर्ताओं जैसे कई लोगों से मिलने की कोशिश में, हम काबुल में घूम रहे थे, मेरा निशान (बदला हुआ नाम) से परिचय कराया, जो *बाग़े ज़नाना* (महिलाओं के लिए उद्यान) को पुनर्जीवित करने की कोशिश कर रहा है। जाहिर है, शाह के दिनों में, विशेषकर काबुल की महिलाओं के लिए, खुशबूदार और आकर्षक बगीचा यही हुआ करता था और इसका नाम भी इसके अनुरूप ही रखा गया था जहाँ वे मेल मुलाक़ात कर सकती थीं और आराम फ़रमा सकती थीं। लेकिन रूसी आक्रमण के बाद और विशेषकर 1995 के बाद से तालिबानी शासन के दौरान, क्योंकि महिलाओं को उनके घरों में बंद कर दिया गया था, इसलिए बाग उजड़ गए, खर पतवार और कीड़े-मकोड़ों ने बंजर भूमि पर अपना आधिपत्य जमा लिया था। आगा खान और अन्य गैर-सरकारी संगठनों के प्रयासों को धन्यवाद है, अब इसे पुनर्निर्मित किया जा रहा था, और मेरे सौभाग्य से, कुछ ही महीने पहले इसे शहर की महिलाओं के लिए खोल दिया गया था। लेकिन महिलाएं यहां केवल शुक्रवार को दोपहर में ही आती हैं।

शुक्रवार सिर्फ एक दिन ही दूर था, इसलिए अगले दिन फ़टाफ़ट मैं *बाग़े ज़नाना* के लिए निकल गई, और मुझे अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। यहाँ कम से कम सौ महिलाएँ, किशोरी और

रशीदा भगत

बाएं: लाइसी एस्टेक्लाल हाई स्कूल काबुल में छात्र।

छोटी लड़कियाँ मौजूद थीं; उन सभी ने अपने बुरके उतार रखे थे और उनकी गजब की ख़ूबसूरती, खिलखिलाहट और चहक साफ़ नज़र आ रही थी। महिलाएं एक बड़े घेरे में बैठी थीं, दोस्तों के साथ गपशप करते हुए पिकनिक लंच का आनंद ले रही थीं, उनके बच्चे पार्क में खेल रहे थे।

हर शुक्रवार को घूमने और मौज मस्ती के लिए करीब सौ महिलाएं और बच्चे यहां इकट्ठे होते हैं और खुद को याद दिलाती हैं कि तीन साल हो गए थे उन पर जुल्म ढाने वाले अत्याचारी तालिबान को गए। धर्म के नाम पर तालिबान ने लाखों महिलाओं की ज़िंदगी तबाह कर दी थी, उन्हें मानवीय गरिमा से वंचित कर, बुर्का पहनने के लिए मजबूर किया गया था (अफ़गानिस्तान में *चादरी* बोलते हैं), महिलाओं ने नौकरी छोड़ दी और बेटियों को स्कूलों,कॉलेजों से निकाल लिया था। एक पुरुष को साथ लिए बिना महिला के लिए अकेले, घर से बाहर निकलना *हराम* (निषिद्ध) था और महिलाएं संतान उत्पत्ति नियंत्रण के कोई उपाय नहीं कर सकती थीं।

लेकिन अब यह इतिहास बन चुका था।

कई शिक्षित और योग्य महिलाएं, जिन्होंने सोवियत कब्जे और मुजाहिदीन शासन के तहत लगभग 15 वर्षों के संघर्ष और हिंसा का सामना साहसपूर्वक किय फिर महिलाओं के खिलाफ़ तालिबान के अप्रिय कानूनों को सह नहीं पाई, 1995 से शुरू हुए तालिबान शासन के छः वर्षों के दरमियान देश छोड़ कर चली गई थीं।

महिलाएं एक बड़े घेरे में बैठी थीं, दोस्तों के साथ गपशप करते हुए पिकनिक लंच का आनंद ले रही थीं, उनके बच्चे पार्क में खेल रहे थे।

माया जयपाल

निशान ने बड़े उत्साह से मुझे बताया कि कुछ महीने पहले ही, ''हमारे *बागे ज़नाना* में विशेष पर्यटक आये थे - तीन अफ़गानी महिला चिकित्सक जो करीब दस साल से जर्मनी में काम कर रही थीं।'' वे स्वयं अपने देश के हालात देखने आई थीं। बगीचे में आने से पहले, तीनों डॉक्टर काबुल के जीर्ण-शीर्ण और जर्जर अस्पतालों में भी गई थीं, जो बीमारों को न्यूनतम आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएं देने की जी तोड़ कोशिश में लगे थे। उन्होंने इमारतों की दयनीय स्थिति, अपर्याप्त बुनियादी ढांचे, पुराने चिकित्सा उपकरण और दवाओं की कमी देखीं, और इससे भी ऊपर, विदेशों से आये डॉक्टर, जिनमें भारतीय चिकित्सक भी शामिल थे, जो सारे अभावों के बावजूद लोगों की ज़िंदगी बचाने का काम कर रहे हैं।

''जब उन्होंने ज़नाना बगीचे में एक साथ इतनी सारी महिलाओं और बच्चों को खाते पीते, गपशप करते,

हंसते-गाते और खिलखिलाते हुए देखा - उन्होंने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया। उन्होंने अपने जर्मन पासपोर्ट निकाले और ये कहते हुए उसके टुकड़े टुकड़े कर दिए कि अब हम अफगानिस्तान छोड़ कर नहीं जाएंगे। इसे हमारी जरूरत है।''

जल्द ही अफगानिस्तान में अराजकता और हिंसा फ़ैल गई, मेरी यात्रा के तुरंत बाद तालिबानियों ने इकट्ठे हो कर फिर से सर उठा लिया और तब से ये जारी है, मेरे ज़ेहन में अक्सर ये ख़याल आता है कि क्या उन बहादुर महिला डॉक्टरों को अपने फैसले पर पछतावा हुआ होगा। वैसे भी, इसके अलावा देश के सामने बहुत सारी चुनौतियां थीं।

अफगानिस्तान के लिए स्वीडिश समिति के कार्यक्रम निदेशक कैरोल मार्टिन ने कहा, अफगानिस्तान अभी भी अस्थिर है, 1980 में सोवियत आधिपत्य के विरुद्ध अफगानी लोगों का सहयोग करने के लिए एक मानवीय एकता एजेंसी के रूप में इस समिति का गठन किया गया था। 22 मिलियन डॉलर के वार्षिक बजट के साथ, यह अफगानिस्तान के 21 प्रांतों में काम करने वाला सबसे बड़ा अंतर्राष्ट्रीय सहायता संगठन था। उन्होंने कहा कि पिछले 20 वर्षों में ऐसा कई बार हुआ है, ''जब SCA ने इस देश को संचालित करने में सरकार की भूमिका निभाई है।''

उन्होंने कहा कि अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण में अभी काफी लंबा समय लगेगा, ''क्योंकि यह देश पूरी तरह से तबाह हो चुका है और यहां कानून बनाने वाली वास्तव में कोई सरकार नहीं है। इससे अफगान के लोगों में कुंठा और निराशा व्याप्त है।''

अफ़गानिस्तान में उस समय विश्व बैंक के राष्ट्र प्रमुख, जीन माज़ुरेल, अफगानिस्तान में संवेदनशील शांति बनाए रखने के बारे में बेबाकी से बोले थे। लेकिन पहले एक मनोरंजक कहानी जो उन्होंने हमें सुनाई। निश्चित रूप से, अफगानिस्तान में सभी विदेशी हाई अलर्ट पर थे क्योंकि अपहरण का जोखिम काफी बढ़ गया था। एक बार, विश्व बैंक के कुछ लोगों को उनके क्वार्टर के पास रोक लिया गया और ''बंदूक की नोक पर उनसे अश्लील वीडियो मांगे! उनके चेहरे पर बंदूक लहराते हुए पश्तूनों ने कहा कि, हमें मालूम है कि पश्चिमी लोग, हमेशा पोर्न फिल्में देखते रहते हैं! मेरे आदमियों को उन्हें यह समझाने में काफी कठिनाई हुई कि उनके पास वास्तव में कोई अश्लील वीडियो नहीं है'', उन्होंने कहा।

लेकिन, एक गंभीर बात, अफगानिस्तान में एक वर्ष के लिए भेजे गए माजुरेल ने महसूस किया कि जब तक अफगान सरकार और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय पुनर्निर्माण के प्रयासों में तेजी नहीं लाते और परिवर्तन मदृष्टि गोचरफ नहीं होते, लोगों का धैर्य समाप्त हो जाएगा। वो ये नहीं समझ पाए थे कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने इस देश के बारे में पहले क्यों नहीं सोचा। क्यों हम इस देश के तालिबान के कब्जे में और उससे पहले सोवियत के कब्जे में आने का इंतजार करते रहे? मैं अफगानियों की नाराजगी समझ सकता हूं कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को अफगानिस्तान की तकलीफ के बारे में सोचने से पहले 9/11 का इंतजार करना पड़ा था। एक अफगान

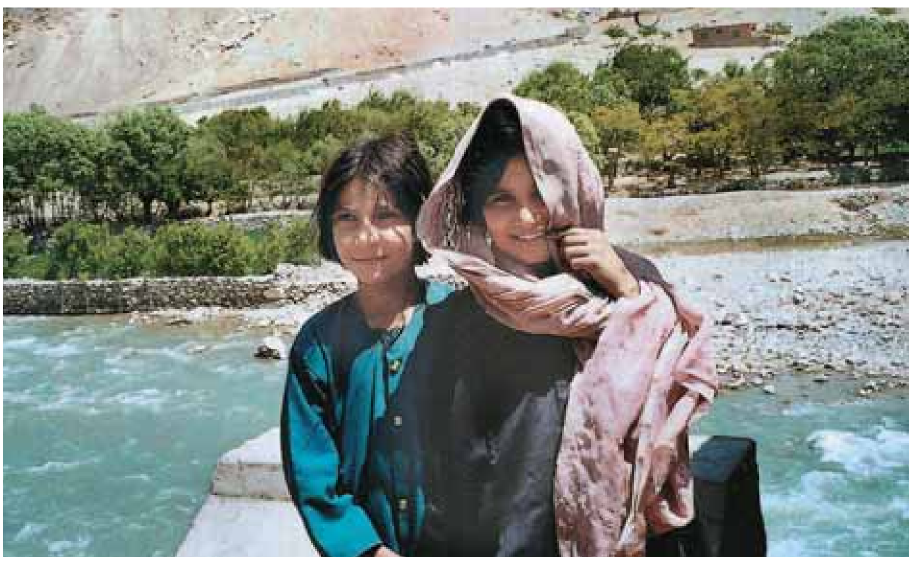

रशीदा भगत

ने मुझे बताया कि 9/11 उनके लिए लॉटरी टिकट था और ये लॉटरी टिकट वे नहीं लौटाएंगे। यह सुन कर मुझे बहुत दुख हुआ लेकिन उनकी पूरी दुनिया के खिलाफ नाराज़गी मैं समझ सकती हूँ और ये भी कि वो इसकी भरपाई क्यों चाहते हैं।''

मेरे लिए, अफगानिस्तान की 10-दिवसीय यात्रा जितनी हृदय विदारक थी उतनी ही शिक्षा प्रद भी थी। मुझे मालूम चला कि पिछले 25 वर्षों में, शिक्षित अफगानी देश छोड़कर भाग गए थे और तालिबान शासन के निष्कासन के तीन साल बाद, उनमें से एक छोटे से वर्ग, उपरोक्त वर्णित अफगान-जर्मन डॉक्टरों जैसे लोगों ने वापस लौटना शुरू कर दिया था। लेकिन यूरोप में वो जितना पैसा कमाते थे, उससे कहीं मामूली रकम पर उन्होंने काम करना स्वीकार किया था ।

उनमें से एक हैं माजिद नबीज़ादा जो काबुल के बीचोंबीच स्थित लाइसी एस्टेगल हाई स्कूल में पढ़ाने के लिए फ्रांस से लौटे थे, वह एक महीने में 2,200 यूरो कमाते थे। यह स्कूल दशकों से युद्ध के थपेड़े खा कर खस्ता हाल हो चुका था, लेकिन अब उसका पुनर्निर्माण शुरू हो गया था और फ्राँसीसियों द्वारा चलाया जा रहा था। उनका वर्तमान वेतन केवल 60 डॉलर था

माया जयपाल

एक चाय की दुकान में एक अफगान लड़का।

वो ये नहीं समझ पाए थे कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने इस देश के बारे में पहले क्यों नहीं सोचा। क्यों हम इस देश के तालिबान के कब्जे में और उससे पहले सोवियत के कब्जे में आने का इंतजार करते रहे?

जीन माज़ूरल

विश्व बैंक प्रमुख, अफगानिस्तान

और एक वर्ष के अग्रिम किराए के साथ, 250 डॉलर के मासिक किराए का भुगतान करने के लिए, उन्हें फ्रांस में अपने 22 साल के प्रवास की बचत पर निर्भर होना पड़ा था। लेकिन उस स्कूल में मुझे मिले अन्य स्थानीय शिक्षकों के पास ये विलासिता नहीं थी। मैं एक शिक्षक से मिली, जिसे किराए और भोजन के लिए टैक्सी ड्राइवर के रूप में भी काम करना पड़ता था।

जब शिक्षकों की यह दुर्दशा देखी तो छात्र-छात्राओं के बर्बाद हुए वर्षों के बारे में तो सोच कर ही रोना आ गया। खासकर, लडकियां जिन्हें तालिबान ने पढ़ाई छोड़ने के लिए जबरदस्ती मजबूर कर दिया था।

लंबे समय तक चली हिंसा से देश के अधिकांश स्कूल नष्ट हो गए थे और अंदरूनी अफगानिस्तान दूर दराज के इलाकों में कक्षाएं बिना दरवाजे और खिड़कियों की जर्जर इमारतों में चल रही थीं, और कहीं-कहीं तो छत भी नहीं थी। कड़ाके की सर्दी और भीषण गर्मी वाले देश में इसका क्या मतलब होता है इसकी कल्पना की जा सकती है। अपने छह साल के शासन में, तालिबान ने लड़कियों की शिक्षा पर प्रतिबंध लगा दिया था और लड़कियों के सभी स्कूल बंद कर दिए थे।

जिस हाई स्कूल का हमने दौरा किया था, उसके निदेशक वली मोहम्मद ने बताया कि किस प्रकार तालिबान ने हमारी शिक्षा प्रणाली को नष्ट कर दिया था और योग्य शिक्षकों को देश छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया था। स्कूल की लाइब्रेरी में करीने से यूनिफॉर्म पहने, चमकदार आंखों वाली लड़कियों को देखकर आपका दिल खुश हो जाएगा। यहां 5,000 बच्चों को मुफ्त शिक्षा मिलती थी, लेकिन इस इस्लामिक देश में सह-शिक्षा देखने को कम ही मिलती थी, कक्षा 3 के बाद लड़कियों को ये स्कूल छोड़ना पड़ता था और बालिका विद्यालय में जाना पड़ता था।

उन्होंने कहा कि छोटी लड़कियां तो स्कूल लौट आईं थीं, पर किशोर छात्राएँ वापस लौटने में झिझक रही थीं क्योंकि अब उन के सहपाठी उनसे कम से कम छह साल छोटी होंगी। मैं ये सोचते हुए स्कूल से चली आई कि अफगान प्रशासन इन युवा महिलाओं को मुख्यधारा की शिक्षा में वापस लाने के लिए क्या करेगा। क्या उनके लिए विशेष कक्षाएं आयोजित की जाएंगी?

उस वक़्त अफगानिस्तान में जवाब से ज्यादा सवाल उठ रहे थे।

(अगले अंक में जारी)

मांडवी में छोटे क्लब के बड़े कारनामे

किरण ज़ेहरा

अपने 41वें स्थापना दिवस पर, रोटरी क्लब मांडवी, रो ई मंडल 3054, ने यह समझने के लिए यादों के गलियारे की यात्रा की कि कैसे इसने गुजरात में स्थित छोटे तटीय शहर कच्छ में संवहनीय परियोजनाएं करने के लिए रोटरी संस्थान के संसाधनों का उपयोग किया है। हमारी परियोजनाओं के लाभार्थियों से बातचीत करके हम हमारे समुदाय में अब तक लाए गए परिवर्तन को देखना चाहते थे, चार्टर दिवस उत्सवों की अध्यक्ष दर्शना शाह कहती है।

इसकी चिन्हित परियोजनाओं में शामिल, मांडवी से 17 किमी दूर स्थित गोधरा गांव में रोटरी कॉलोनी, वंचितों के लिए क्लब की सहानुभूति का प्रमाण है। 2000 में टीआरएफ एवं 10 जापानी क्लबों की सहायता से सत्रह बेघर ग्रामीणों को घर सौंपे गए थे। ''कुछ लाभार्थियों का निधन हो गया था और मुझे उनके परिवार के सदस्यों से बात करने में संकोच हो रहा था जो अभी भी इन घरों में रहते हैं'', दर्शना कहती है। लेकिन जिस पल उन्होंने फोन कॉल किया, दूसरी ओर से मेरे प्रति सम्मान और आभार व्यक्त किया गया।

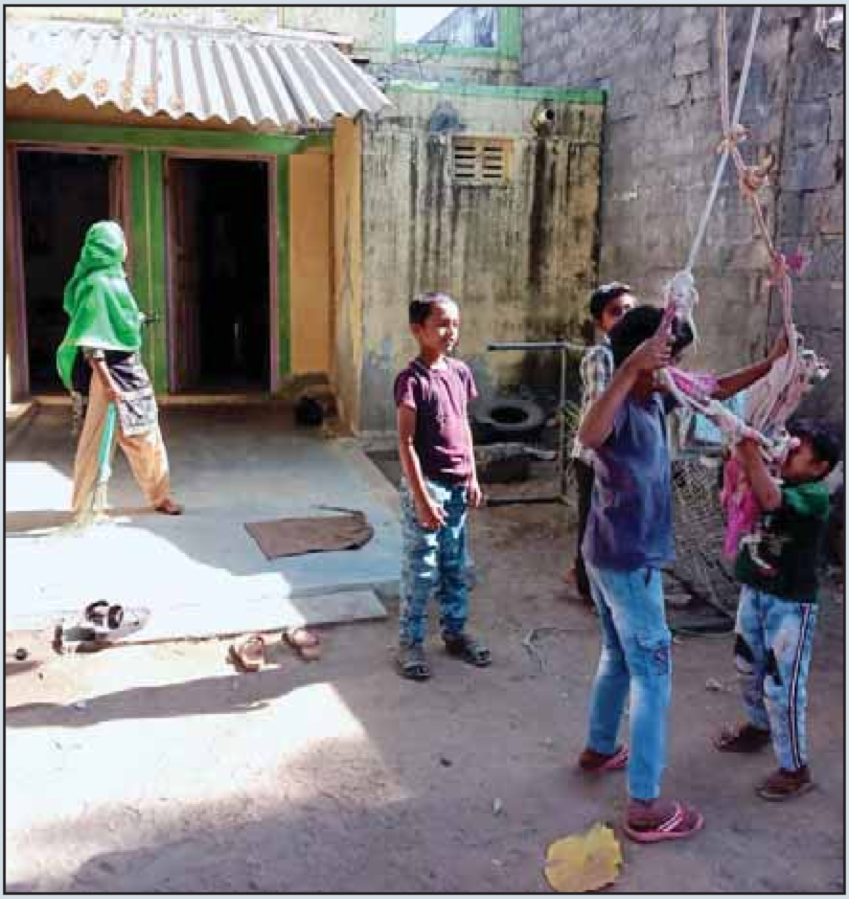

2000 में रोटरी क्लब मांडवी द्वारा बनाया गया रोटरी घर।

''मेरे पिता, एक पान विक्रेता, अपने खुद के घर का सपना नहीं देख सकते थे। लेकिन रोटरी क्लब मांडवी की वजह से अब हमारे पास एक घर है'', 54 वर्षीय हसीना कहती है, जिनके स्वर्गीय पिता मोहम्मद अली सुलेमान इस कम लागत वाली आवास परियोजना के लाभार्थी थे। वह परियोजना के अध्यक्ष संदीप शाह से हुई बात याद करती है जिसमें उन्होंने उनके पिता को इस योजना में शामिल करने के लिए कहा था।

₹7.36 लाख के वैश्विक अनुदान का इस्तेमाल 15 घरों के निर्माण के लिए किया जाना था, ''लेकिन हमारे क्लब ने 17 घरों का निर्माण किया, जो 2001 के भूकंप से बच गए'', विनय तोपराणी कहते है जो इस परियोजना का हिस्सा थे।

20x45 फीट के घरों में ग्राम पंचायत योजना के तहत दो कमरे, एक रसोईघर, एक भूमिगत जल निकासी, एक छत और पाइप से जलापूर्ति होती है। ''यह गरिमापूर्ण जीवन जीने के लिए पर्याप्त से अधिक है और हमारी अगली पीढ़ी के लिए एक वरदान भी है'', हसीना कहती है।

छात्रवृत्ति

डॉ जय मेहता विमला रमेश शाह छात्रवृत्ति के प्राप्तकर्ता है जिसका नाम दिवंगत क्लब के सदस्य के नाम पर रखा गया है। वह मांडवी के ट्रस्ट अस्पताल और भारतीय अस्पताल में चिकित्सा का अभ्यास करते है, और कच्छ क्षेत्र में 300 से अधिक चिकित्सा शिविरों का हिस्सा रहे है। 2005 में मेडिकल कॉलेज में अपने प्रवेश को याद करते हुए, वह कहते है, ''मैंने अपनी कक्षा 12वीं की परीक्षा में 93 प्रतिशत अंक हासिल किए और विज्ञान में शहर में अव्वल रहा। लेकिन मुझे चिंता थी कि मैं BHMS कोर्स के लिए एक सीट हासिल कर सकूंगा या नहीं जिसे मैं प्राप्त करना चाहता था।'' एक कपड़े

की दुकान पर काम करने वाले उनके पिता ने उन्हें हिम्मत न हारते हुए अपने कॉलेज के दाखिले के लिए आवेदन करने को कहा।

कुछ दिनों बाद उन्हें स्कूल से फोन आया कि स्थानीय रोटरी क्लब उन्हें छात्रवृत्ति देने के लिए आगे आया है। डॉ. मेहता ने मुस्कुराते हुए कहा, ''मुझे मेरिट में सीट मिली और साथ ही ₹5,000 की छात्रवृत्ति भी मिली, जिससे मैं मेरे कोर्स की फीस और हॉस्टल शुल्क दे पाया।''

रोटरी क्लब मांडवी एजुकेशनल अवार्ड्स के साथ-साथ इस छात्रवृत्ति ने आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के अच्छे अकादमिक रिकॉर्ड वाले मांडवी और उसके आसपास के कई युवाओं को लाभान्वित किया है। 1981 में इसकी स्थापना के बाद से, क्लब की छात्रवृत्तियों एवं पुरस्कारों ने गुजराती माध्यम के स्कूलों के 350 छात्रों को लाभान्वित किया है।

डॉ जय मेहता, एक छात्र के रूप में, रोटरी क्लब मांडवी द्वारा छात्रवृत्ति प्राप्त करते हुए।

ऐतिहासिक पहल

सी जे मेहता टीकाकरण केंद्र, एक अन्य उल्लेखनीय परियोजना है जिसने 2003 से पोलियो, हेपेटाइटिस बी, खसरा और अन्य टीका निवारणीय बीमारियों के लिए लगभग 5,000 बच्चों को टीके लगाए। रोटरी गुजरात भूकंप पुनर्निर्माण ट्रस्ट और स्थानीय दान से 2001 के भूकंप के बाद स्थापित धरमसी नेन्सी रोटरी सामुदायिक केंद्र को वंचित परिवारों की लड़कियों की शादी के लिए दोगुना करके एक हॉल जैसा बना दिया गया है और इसे स्थानीय बैठकों, सेमिनारों, प्रदर्शनियों और सामाजिक समारोहों के लिए किराए पर लिया जाता है।

मांडवी के ठीक मध्य में लक्ष्मीबाई हंसराज लाटवाला बाल उद्यान है जिसे 2002 में क्लब द्वारा निर्मित किया गया और तभी से क्लब इसका रखरखाव कर रहा है। अन्य सामुदायिक परियोजनाओं में, क्लब ने छात्रों के लिए नियमित कंप्यूटर वर्कशॉप, आदिवासी महिलाओं के लिए वयस्क साक्षरता शिविर और इस क्षेत्र में वृक्षारोपण अभियान चलाया है। ''हमारा क्लब भले ही छोटा हो लेकिन हम वाकई में एक बड़ा बदलाव लाए है'', दर्शना कहती है।

शामजी कृष्णा वर्मा प्राइमरी स्कूल में ₹85,000 की लागत से हाथों की धुलाई के एक स्टेशन के साथ एक लिंग-पृथक शौचालय खंड बनाया गया। राशि को दान के माध्यम से जुटाया गया था। ''हमें अपने स्कूलों को कोरोना के बाद की दुनिया के लिए तैयार करना चाहिए जहां स्वच्छता और साफ-सफाई सर्वोच्च प्राथमिकता होगी। चूंकि यह आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए एक स्कूल है, इसलिए बेहतर स्वच्छता सुविधाओं की आवश्यकता यहां अधिक महत्वपूर्ण है'', क्लब के अध्यक्ष प्रतीक एच शाह कहते है।

लॉकडाउन के दौरान, क्लब के सदस्यों ने रोटरेक्टरों के साथ, बेघरों को भोजन के पैकेट और मास्क एवं स्वास्थ्यकर्मियों और पुलिस कर्मचारियों को स्वच्छता किटें वितरित की। ''हम अभी भी जनता को मास्क और सैनिटाइज़र वितरित कर रहे है'', वह आगे कहते है। हाल ही में क्लब ने स्थानीय कोर्ट, सरस्वती शिशु मंदिर और मांडवी में शेठ सूरजी वल्लभदास आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज में सैनिटाइज़र डिस्पेंसर स्थापित किए।■

रोटरी क्लब मांडवी द्वारा संचालित एक वयस्क साक्षरता क्लास।

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी की कोविड परियोजनाओं में सबसे आगे रहते है मानव गुण

वी मुत्तुकुमारण

जहाँ मानव जाति एक कोविड वैक्सीन का इंतजार कर रही है, वहीं रोटेरियनों द्वारा व्हाट्सएप और अन्य डिजिटल इंटरफेस का उपयोग करके रोगियों की सख्त जरूरत को पूरा करने के लिए मानवता की गर्मजोशी को फिर से जागृत किया जा रहा है। इसका एक उदाहरण देखिए: रोटरी क्लब ग्रीन लैंड सिलचर, रो ई मंडल 3240, के रोटेरियन संदीप सिंह वालिया ने अपने एक व्हाट्सएप समूह में एक संदेश देखा जिसमें किसी विजय चौधरी ने फरीदाबाद में QRG हेल्थ सिटी में इलाज करा रहे अपने वृद्ध पिता को बचाने हेतु प्लाज्मा दानदाता के लिए अनुरोध किया था।

अगले दिन भी, ''मैंने देखा कि चौधरी प्लाज्मा दानदाता का प्रबंध करने में असमर्थ थे। और इसलिए मैंने उनकी मदद करने का सोचा'', वालिया कहते है। उन्हें क्लब की वेबसाइट से **रोटरी क्लब फरीदाबाद सेंट्रल, रो ई मंडल 3011**, के अध्यक्ष जगदीश सहदेव का फोन नंबर मिला, उन्होंने उन्हें पूरी स्थिति समझाई और उनके साथ मरीज का विवरण और चौधरी का संपर्क नंबर साझा किया।

जगदीश ने संबंधित व्यक्ति को चौधरी के साथ संपर्क करने के लिए अपने रोटरी संपर्कों का लाभ उठाया। ''एक घंटे के भीतर सब इंतजाम हो गया क्योंकि जगदीश ने अस्पताल प्रबंधन के साथ समन्वय किया और उनसे नियमित अंतराल में हमें मरीज की स्थिति के बारे में अवगत करवाते रहने का आग्रह किया'', वालिया समझाते है।

''विजय रोटरी के बहुत आभारी थे। फरीदाबाद के उपायुक्त द्वारा गठित प्लाज्मा समिति के एक प्रभावशाली सदस्य जगदीश द्वारा मरीज के लिए सभी चीज़ों का इंतजाम करने के बाद स्थानीय रेड क्रॉस खंड द्वारा एक प्लाज्मा यूनिट की व्यवस्था की गई'', वालिया कहते है। हालांकि, प्लाज्मा यूनिट को घर पर ठीक होने वाले रोगी हेतु आपातकाल में उपयोग करने के लिए रखा जा रहा है, वह कहते है।

एक बड़ी पहल में, रोटरी क्लब बागमती काठमांडू, त्रिपुरेश्वर, काठमांडू मेट्रो, कांतिपुर काठमांडू और काठमांडू डाउनटाउन, *रो ई मंडल 3292*, ने मिलकर ललितपुर के पाटन अस्पताल को 400 वाइज़र, डिस्पोजेबल दस्ताने के 20 बक्से और अन्य सुरक्षा सामग्री दान की। पीडीजी चिंतामणि भट्टाराई ने पाटन अस्पताल के निदेशक डॉ. रबी शाक्य को सुरक्षा किटें सौंपी। अपने संबोधन में, भट्टाराई ने कहा कि वह कोविड रोगियों के इलाज और सुरक्षात्मक प्रणाली को बढ़ाने हेतु अस्पताल के लिए अधिक समर्थन और सामग्री लाएंगे।

रामनाथपुरम सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल को वेंटिलेटर सौंपे जा रहे हैं।

रोटरी क्लब सेलम साउथ के अध्यक्ष आर मंगेश्वर और उनकी टीम ने सरकारी अस्पताल, सेलम को मोर्चरी बैग दान में दिए।

प्रोजेक्ट आरोग्य

रोटरी बैंगलोर ब्रिगेड्स, रो ई मंडल 3190, द्वारा प्रोजेक्ट आरोग्य के तहत पराचिकित्सकों, सफाई कर्मियों और सुविधाओं से वंचित लोगों सहित अतिसंवेदनशील समूहों को 1.1 लाख की लागत से कोविड प्रतिरक्षा बूस्टर किटें और 50,000 से अधिक मास्क वितरित किए गए। क्लब के अध्यक्ष अश्वनी किंजर, क्लब के सदस्य बिंदू चेरियन और सांबा मूर्ति द्वारा कोविड देखभाल किट की अवधारणा की गई थी। इसमें दो कॉटन मास्क, 15 कैल्शियम और विटामिन डी 3 टैबलेट, 25 विटामिन सी टैबलेट, 10 पैरासिटामोल, सैनिटाइजर, लिक्विड सोप पैक और कन्नड़ और अंग्रेजी में दिशानिर्देश शामिल है।

क्लब स्वास्थ्य शिविरों, पीएचसी, अनाथालयों, वृद्धाश्रमों और रोटरी चिकित्सा शिविरों में दवाओं की मुफ़्त में खरीद और वितरण करता है, किंजर कहते है।

रोटरी क्लब भरूच, रो ई मंडल 3060, ने अस्पतालों, पीएचसी और पुलिस स्टेशनों को एक टच-फ्री और हैंडपंप सैनिटाइज़र डिस्पेंसर, एन 95 मास्क, ऑक्सीमीटर, इलेक्ट्रॉनिक थर्मामीटर, फेस शील्ड और लिक्विड सैनिटाइज़र दान करने के लिए 42,143 डॉलर की वैश्विक अनुदान परियोजना को लागू किया। पीडीजी अशोक कपाड़िया, आईपीपी मनीष पोद्दार और क्लब के अध्यक्ष टॉकिन ज़मींदार ने इस विशाल परियोजना के लिए अपने वैश्विक साझेदार रोटरी क्लब एमोरी ड्र्यूड हिल्स, यूएस, के साथ समन्वय किया।

रोटरी क्लब कोयंबटूर वडावल्ली द्वारा एक पुलिस स्टेशन में एक ऐक्रलिक कोविद ढाल स्थापित किया गया।

कोविड श्मशानघाट

रोटरी क्लब अंकलेश्वर, रो ई मंडल 3060, ने शांतिधाम रोटरी श्मशान गृह नामक एक अस्थायी श्मशान घाट की स्थापना की जिसमें उन लोगों का दाह संस्कार किया जा रहा है जो कोविड और उससे संबंधित जटिलताओं की वजह से अपनी जान गंवा बैठे है। भरुच, अंकलेश्वर और बोरभाठा में श्मशान के पास रहने वाले स्थानीय लोगों द्वारा कोविड का शिकार हुए मरीजों के अंतिम संस्कार का विरोध करने के बाद प्रशासन ने इस संदर्भ में निर्णय लिया।

भरूच नगरपालिका ने एक चार सदस्यीय टीम बनाई जो शवों का अंतिम संस्कार करने के लिए पीपीई किटें पहनी हुई होगी। भट्ठी का दान शांतिधाम रोटरी श्मशान गृह के परियोजना प्रमुख रोटेरियन भूपेन्द्र श्रॉफ द्वारा किया गया था।

स्थानीय निकाय के साथ दाह संस्कार की लागत यह श्मशानघाट वहन करेगा, परियोजना सह-संयोजक, हरीश जोशी ने कहा।

डेट्रायट के लिए महामारी राहत

15 रोटरी क्लबों और रोटरी मंडलों से जुड़ी एक वैश्विक सहयोगी परियोजना का नेतृत्व रोटरी क्लब एन आर्बर नॉर्थ, रो ई मंडल 6380, द्वारा किया जा रहा है ताकि मिशिगन, यूएस, के कुछ सबसे अधिक प्रभावित लोगों को कोविड राहत प्रदान की जा सके।

डेट्रायट परियोजना के लिए 73,000 डॉलर मूल्य की महामारी राहत कई मंडलों, पुणे के पांच क्लबों, रोटरी बैंगलोर ब्रिगेड्स, पुणे के पायनियर मेडिकल रिसर्च फाउंडेशन, और हाल ही में घोषित टीआरएफ के सह-प्रायोजित वैश्विक अनुदान के समर्थन से संभव हो पाई है।

''हमारा एकमात्र उद्देश्य दो दर्जन स्वास्थ्य संस्थानों और गैर सरकारी संगठनों का समर्थन करना है जो महामारी के कारण मेट्रो डेट्रायट क्षेत्रों में मानव पीड़ा को कम करते है'', रोटरी क्लब एन आर्बर नॉर्थ के परियोजना सह-अध्यक्ष मनीष मेहता ने कहा। दो-आयामी प्रयास के रूप में, यह परियोजना स्थानीय अस्पतालों, क्लीनिक और नर्सिंग होम को पीपीई किटों की आपूर्ति करेगी; और दूसरे चरण में डेट्रॉइट और उसके पड़ोसी समुदायों में सबसे बुरी तरह प्रभावित क्षेत्रों में सेवारत नौ खाद्य बैंकों को नकद सहायता प्रदान करेगी।

15 दिसंबर को एक ज़ूम मीट पर वैश्विक रोटेरियनों द्वारा ग्लीनर्स कम्यूनिटी फूड बैंक को 15,000 डॉलर का एक दान दिया गया। एक अमेरीकी रीटैलर क्रोगर द्वारा उनकी ***डबल योर डोनेशन डे*** गतिविधियों के अंतर्गत इस राशि का मिलान किया गया। ''इस राशि के साथ, ग्लीनर्स डेट्रॉइट के वंचित परिवारों को खिलाने के लिए भोजन के 90,000 पैकेट की आपूर्ति कर सकता है'', मेहता कहते है।

''हम इस उलटे वैश्विक अनुदान को करके खुश है, आमतौर पर अमेरिका और कनाडा के क्लब भारत या अन्य विकासशील देशों के लोगों की मदद करते है। अब पुणे के क्लब इस डेट्रायट परियोजना में योगदान देने के लिए एक साथ आए है'', **रोटरी क्लब पुणे मेट्रो, रो ई मंडल 3131,** के अध्यक्ष मकरंद फड़के कहते है। भारतीय क्लबों के इस योगदान को रो ई महासचिव जॉन हेवको ने सराहा।

रोटरी क्लब अकोला मिडटाउन, रो ई मंडल 3030, ने औरम संस्थान के साथ मिलकर मंडल की आशा स्वयंसेवकों को कोविड संक्रमण से बचाने के लिए मास्क और शील्ड वितरित किए।

वेंटीलेटर्स

जिला कलेक्टर दिनेश पोनराज ओलिवर और पीडीजी चिन्नादुरई अब्दुल्ला की उपस्थिति में **रोटरी क्लब रामनाद** और **रामनाद रॉयल्स, रो ई मंडल 3212,** द्वारा सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल, रामनाथपुरम को चार वेंटिलेटर दान किए गए। इस वैश्विक अनुदान परियोजना को रोटरी क्लब लैक नोना लंच, यूएस, रो ई मंडल 6980, की मदद से निष्पादित किया गया।

रोटरी क्लब कोयंबटूर वाडावल्ली, रो ई मंडल 3201, द्वारा प्रायोजित आरसीसी वाडावल्ली ने स्थानीय पुलिस स्टेशन को रोटरी लोगो वाली दो ऐक्रेलिक कोविड शील्ड दान की ताकि वे अपने कर्मियों की सुरक्षा सुनिश्चित कर सके। पुलिस इंस्पेक्टर और उनकी टीम द्वारा इस भाव प्रदर्शन की सराहना की गई।

रोटरी क्लब बैंगलोर ब्रिगेडस के अध्यक्ष अश्वनी किंजर ने AiR ह्युमानिटरियन होम को दवाइयां दान में दी।

अन्त्येष्टि थैली

सरकारी मोहन कुमारमंगलम अस्पताल, सलेम, के डीन के अनुरोध के बाद डीजी के एस वेंकटेशन, **रो ई मंडल 2982,** ने अन्त्येष्टि थैली दान करने के लिए अपने छह एजीयों से उनके रोटरी क्लबों से संपर्क करने का अनुरोध किया। सलेम के तेरह क्लब अब तक 3.5 लाख की परियोजना लागत से 806 अन्त्येष्टि थैलियाँ और 15 प्लास्टिक रोल दान कर चुके है जिससे लगभग 500 मृतक कोविड रोगियों को लपेटने में मदद मिली।

''मंडल कोविड प्रमुख मोहम्मद इलियास बॉडी बैग का जायजा लेने और रोटरी, इनर व्हील क्लब और अन्य गैर-सरकारी संगठनों से इसकी आपूर्ति का प्रबंधन करने के लिए हर हफ्ते GH का दौरा करते है'', रोटरी क्लब सलेम साउथ के अध्यक्ष आर मंगेश्वर कहते है। अस्पताल के डीन डॉ बालाजी नाथन ने वायरस के प्रसार को रोकने में मददगार अन्त्येष्टि थैली प्रदान करने में समय पर मदद करने के लिए रोटरी की प्रशंसा की।■

रो ई मंडल 2981 में 1 मिलियन वर्ग फुट में फैला मियावाकी जंगल

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब तिरुवरुर किंग्स के सदस्यों के साथ डीजी बालाजी बाबू, (बाएं से दूसरे स्थान पर बैठे) एक साइट पर पौधे लगाते हुए।

एक विशाल हरियाली परियोजना के अंतर्गत, रो ई मंडल 2981 ने इस मंडल के 119 रोटरी क्लबों के योगदानों की मदद से 101 दिनों की अवधि में मियावाकी जंगलों के निर्माण के लिए एक मिलियन वर्ग फुट से अधिक के क्षेत्र में पौधे लगाए। मियावाकी जंगलों के निर्माण में यह परियोजना हमारा पहला अनुभव है। क्लबों ने अपने मिशन को पूरा करने में भूमि स्वामियों, संस्थानों, परिसरों और संगठनों से संपर्क करने में कोई कसर नहीं छोड़ी, डीजी आर बालाजी बाबू ने कहा।

उन्होंने याद किया कि यह क्षेत्र जो मुख्य रूप से एक कृषि क्षेत्र है, गाजा, ठाणे और हाल ही के निवार चक्रवात जैसे तूफान से तबाह हो गया था और ''इनसे पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँचा था।'' रोटरी क्लब तंजावुर बिग टेम्पल ने तमिल विश्वविद्यालय परिसर में 20,000 वर्ग फुट से अधिक के क्षेत्र में पौधे लगाए; रोटरी क्लब तिरुवरूर ने तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किए गए 80,000 वर्गफुट क्षेत्र का उपयोग किया; रोटरी क्लब तंजावुर चोल ने पेरियार मणि अम्माई विश्वविद्यालय में 20,000 वर्ग फुट क्षेत्र में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया; और यहां तक कि श्मशान घाट को भी नहीं छोड़ा गया क्योंकि रोटरी क्लब नागपट्टिनम मिडटाउन ने 60,000 वर्गफुट से अधिक के क्षेत्र में एक छोटा जंगल बनाने के लिए जंगली पौधों को साफ कराया।

कुंभकोणम के सभी 15 क्लबों ने संयुक्त रूप से 50,000 वर्ग फुट से अधिक के क्षेत्र में छोटे जंगल बनाए। रोटरी क्लब कुथालम ने थिरुवदुथुराई मट से संपर्क किया और 10,000 वर्ग फुट क्षेत्र प्राप्त किया; रोटरी क्लब मयिलादुथुराई प्राइड ने 1.08 लाख वर्गफुट का उपयोग किया और कराइकल के दो क्लबों ने 36,000 वर्गफुट क्षेत्र को हरियाली से ढक दिया।

जंगल बनाने की प्रक्रिया को समझाते हुए, बाबू ने कहा कि धरती को तीन फीट तक खोदा गया, फिर मिट्टी के साथ प्राकृतिक खाद को मिलाया गया और गड्ढे को फिर से भरा गया। सुरक्षा के लिए स्पाइक फेंसिंग के निर्माण के साथ ही विस्तार में पौधे लगाए गए। बोरवेल के माध्यम से जल टपक सिंचाई की व्यवस्था की जाती है। पौधों को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने हेतु 33 वर्षों के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किया गया।

गाँवों में लोगों को अपने घरों के पिछवाड़े में भी पौधे लगाने की अनुमति दी जाती है, यदि पौधारोपण एक चौथाई एकड़ में किया जाता है तो आसपास के 52 एकड़ क्षेत्र को लाभ मिलना निश्चित है। वह दिन दूर नहीं जब हमारी भावी पीढ़ी उस परिश्रम का लाभ उठाएंगी जो हम आज कर रहे है। ठीक उसी तरह जैसे हमने अपने पूर्वजों के श्रम का आनंद लिया, बाबू ने कहा।■

Rotary PEOPLE OF ACTION

मैसुरू में महिलाओं का कौशल विकास

जयश्री

सविता मैसूरु में अपनी खुद की सिलाई की दुकान शुरू करने के लिए पूरी तरह से तैयार है। ''मैंने दो पाठ्यक्रमों - सिलाई और ब्यूटीशियन - को मात्र ₹1,000 में पूर्ण किया। अन्यथा मुझे किसी और जगह पर सिलाई के कोर्स के लिए ₹15,000 और ब्यूटीशियन के कोर्स के लिए ₹20,000 देने पड़ते।'' रश्मि, एक अन्य लाभार्थी अब कंप्यूटर-प्रेमी है। ''मैं मेल भेज सकती हूं, इंटरनेट ब्राउज़ कर सकती हूँ और पत्र टाइप कर सकती हूँ,'' वह कहती है।

महिलाएं मैसूरु में पॉल हैरिस वोकेशनल इंस्टीट्यूट में फ्रॉक डिज़ाइन करना सीखती हुई।

मैसूरु में लगभग 1,500 वंचित महिलाएं अब सिलाई घर, ब्यूटी पार्लर और कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र जैसे सूक्ष्म उद्योग चला रही है; पिछले 17 वर्षों से रोटरी क्लब मैसूर वेस्ट, रो ई मंडल 3181 द्वारा चलाए जा रहे व्यावसायिक प्रशिक्षण परियोजना की बदौलत 500 और लोग इसी तरह के कार्यालयों में कार्यरत है या अंशकालिक नौकरी करते है।

क्लब के सचिव डी के दिनेश कुमार कहते है, ''महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें स्थायी आजीविका प्रदान करने के लिए हमारी एक स्पष्ट नीति है और हमारी परियोजनाएं उनमें आत्मविश्वास पैदा करने पर केंद्रित है। इनमें से कई प्रशिक्षित महिलाओं ने स्वयं सहायता समूह भी बनाए है।''

एक पेपर बैग बनाने की क्लास।

क्लब ने मैसूरु के एक आवासीय इलाके, दत्तागल्ली में पॉल हैरिस वोकेशनल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट की स्थापना की है जो सिलाई, फैशन डिजाइनिंग, कढ़ाई, ब्यूटीशियन, पेपर बैग बनाने, बुनियादी कंप्यूटर संचालन और अंग्रेजी बोलने की शिक्षा प्रदान करता है। प्रत्येक पाठ्यक्रम की अवधि छह माह है। ''पहले हम नि:शुल्क प्रशिक्षण दे रहे थे, लेकिन छोड़कर जाने वालों की संख्या अधिक थी। लोगों को इन पाठ्यक्रमों के मूल्य का एहसास नहीं हुआ। इसलिए अब हम एक कोर्स

के लिए ₹1,000 का शुल्क लेते है'', वह कहते है। प्रत्येक बैच में 30 महिलाएं है।

क्लब छात्रों का एक डेटाबेस रखता है और उनके प्लेसमेंट में मदद करता है या उनका अपना व्यवसाय स्थापित करने में बैंकों से ऋण उपलब्ध करवाता है। रोटेरियन आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं के लिए सिलाई मशीने भी प्रायोजित करते है। विपणन में अनुस्थापन कार्यक्रम भी उन महिलाओं को दिया जाता है जिनकी अपना उद्यम शुरू करने की योजना है।

संस्थान का मासिक खर्च ₹2 लाख है। ''हमें फीस के रूप में ₹60,000 मिलते है और शेष राशि हमारे सदस्यों और अन्य परोपकारी लोगों के उदार योगदान से प्राप्त होती है।''

ब्यूटीशियन कोर्स के हिस्से के रूप में महिलाएं हेयर स्टाइल सीखती हुई।

पाठ्यक्रम के सफल समापन पर छात्रों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया जाता है। यह एक उत्सव का कार्यक्रम है जहाँ रोटरी वेस्ट के इनर व्हील क्लब के सदस्य रंगोली, फैशन परेड और पाक कला प्रतियोगिताओं का आयोजन करते है और प्रशिक्षार्थी अन्य विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते है।■

नव-गठित अखिल महिला क्लब ने सेवा परियोजनाएं शुरू की

टीम रोटरी न्यूज़

एक अखिल महिला क्लब, रोटरी क्लब शिवकाशी डायमंड्स, रो ई मंडल 3212, का गठन किया गया और नवंबर में डीजी पीएनबी मुरुगादोस द्वारा स्थापित किया गया। ''हमने अब तक 11 सेवा परियोजनाएं लागू की है'', चार्टर अध्यक्ष आर सेल्वारानी ने कहा।

इस नए क्लब ने सीएसआई ज्ञान पैकियम प्राइमरी स्कूल को ₹30,000 की लागत वाला एक कंप्यूटर सिस्टम दान किया जिससे कक्षा 1-5 में पढ़ने वाले 36 विद्यार्थियों को लाभ प्राप्त होगा। पंचायत संघ प्राथमिक विद्यालय, कुमारपुरम, में स्थापित एक वाटर प्युरीफायर (आरओ) इकाई स्थापित

DG PNB मुरुगादॉस स्कूल प्रधानाध्यापक को एक आरओ यूनिट देते हुए। चित्र में रोटरी क्लब शिवकाशी डायमंड्स की चार्टर अध्यक्ष एम जोथिलक्ष्मी (दाएं) और एस योगाचित्रा, अध्यक्ष, मंडल परियोजनाएँ भी चित्र में शामिल हैं।

की गई जिससे 60 विद्यार्थियों को सुरक्षित पेयजल प्राप्त होगा। अन्य परियोजनाओं में ₹6,000 की लागत से स्थानीय ट्रैफिक पुलिस को 10 ट्रैफिक बैटन का दान, VSKD स्कूल, शिवकाशी में 5वीं कक्षा में अध्ययनरत एक जरूरतमंद छात्र पी रिथिस को ₹3,000 की नकद सहायता, और 40 से अधिक बार रक्तदान करने के लिए एक सामाजिक कार्यकर्ता, रोटेरियन वेलमुरुगन को सम्मानित करना शामिल है।■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी क्लब बोलपुर शांतिनिकेतन ने खोला वयस्क साक्षरता केंद्र

वी मुत्तुकुमारण

चूंकि रोटरी भारत का लक्ष्य 2025 तक भारत को पूर्णतः साक्षर बनाना है, इसलिए रोटरी क्लब बोलपुर शांतिनिकेतन, रो ई मंडल 3240, ने पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले के सेहलाई और बिद्याधरपुर गाँवों में दो वयस्क साक्षरता केंद्र खोले है। ''हमने एक वर्ष में 100 वयस्क निरक्षरों को साक्षर बनाने का लक्ष्य रखा है, जिसमें ज्यादातर महिलाएं है'', क्लब अध्यक्ष डॉ विश्वदेव चटर्जी कहते है।

जब डॉ चटर्जी अध्यक्ष-निर्वाचित बने तब उन्होंने साक्षरता केंद्र खोलने का यह सपना देखा और उचित स्थानों के चयन के लिए गांवों का दौरा करना शुरू किया। दो चुने गए गांवों, सेहलाई और बिद्याधरपुर में लगभग समान लिंगानुपात है और 60 प्रतिशत से अधिक आदिवासी जनसंख्या है। ''दोनों गांवों की लगभग 90 प्रतिशत आबादी एससी/एसटी वर्ग की है जो गरीब और अनपढ़ है एवं कृषि मजदूरी पर निर्भर है, जिससे वर्ष के अधिकांश समय में आय उपार्जन करना मुश्किल होता है'', चटर्जी ने कहा।

लॉकडाउन और महामारी के डर के बावजूद, उन्होंने कस्बा ग्राम पंचायत के अंतर्गत आने वाले गांवों का दौरा किया ताकि पंचायत प्रधान, ग्राम संसद प्रतिनिधियों और अन्य नेताओं के साथ बातचीत की जा सकें। ''जब हमने साक्षरता केंद्र का विचार रखा तो इसे उत्साह के साथ स्वीकार किया गया। ग्रामीण पढ़ना-लिखना एवं अपने बच्चों की तरह ही गणित करना सीखने के लिए उत्सुक थे'', उन्होंने आगे कहा।

जहाँ सेहलई का केंद्र एक प्राथमिक विद्यालय का एक खुला बरामदा है, वहीं बिद्याधरपुर में कक्षाएं एक फार्म हाउस की खुली जगह में आयोजित की जाती है और बारिश के दौरान, इस केंद्र को एक घर में स्थानांतरित कर दिया जाएगा।

नए RCC

जुलाई में दोनों गांवों में रोटरी सामुदायिक निकाय खोले गए ताकि स्वयंसेवक महिलाओं को घरों से ला सकें और वयस्कों के लिए साक्षरता कक्षाएं आयोजित कर सकें। शुरुआत में शिक्षार्थियों को क्लब द्वारा साक्षरता किटें प्रदान की

एक गांव में महिला छात्रों के साथ एक RCC सदस्य।

गाँव के एक स्कूल में महिलाएँ लिकना-पढ़ना सीखती हुई।

गई जिसमें एक स्लेट और चाक शामिल है। ''संबंधित आरसीसीयों के दो स्नातक छात्रों को प्रशिक्षक बनाया गया। धीरे-धीरे, इनर व्हील क्लब शांतिनिकेतन और अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (AIWC) के सदस्यों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया'', उन्होंने कहा। AIWC-दिल्ली कार्यालय के माध्यम से, क्लब का साक्षरता कार्यक्रम UNISCO तक पहुंचा जिसने 8 सितंबर को विश्व साक्षरता दिवस पर इसे संदर्भित किया।

वयस्क शिक्षार्थियों ने केंद्रों में आने के प्रथम तीन महीनों के भीतर बंगाली अक्षर लिखने, और बुनियादी गणित करने में बढ़िया प्रगति दिखाई। अपनी यात्रा के दौरान, डीजी सुभाशीष चटर्जी एक वयस्क शिक्षार्थी को साफ-सुथरे और स्पष्ट शब्दों में अपना नाम लिखते देखकर खुश और आश्चर्यचकित थे। चटर्जी ने कहा, ''मुझे उम्मीद है कि कुछ महीनों में गांव की महिलाएं RILM के मानदंडों के अनुसार पूरी तरह से साक्षर हो जाएंगी, जिनके कर्मचारियों को नव-साक्षरों का मूल्यांकन करने के लिए आमंत्रित किया जाता है।'' ■

रोटरी क्लब ईलाहबाद मिडटाउन पालतू जानवरों की देखभाल करता है

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी फॉर एथिकल ट्रीटमेंट फॉर एनिमल्स (RETA) का उदय तब हुआ जब रोटरी क्लब ईलाहाबाद मिडटाउन, रो ई मंडल 3120 ने, एक पशु कल्याण संगठन PAWCO के साथ साझेदारी की ताकि पालतू जानवरों को बचाकर और उन्हें पनाह देकर उनकी पीड़ा को कम करने का एक सामान्य दृष्टिकोण स्थापित किया जा सके। क्लब की अध्यक्ष डॉ दिव्या बर्तरिया और परियोजना अध्यक्ष गीतिका अग्रवाल ने परियोजना के पहले चरण में 150 किलोग्राम अनाज, दलिया, राजमा, कुत्ते के भोजन, कंबल और अन्य आवश्यक चीजों का दान किया।

डॉ दिव्या के अनुसार, ''हमारा अगला ध्यान पशु जन्म नियंत्रण पर होगा क्योंकि PAWCO पहले ही मंडल में 100 से अधिक नसबंदी पूर्ण कर चुका है। आवारा कुत्तों की आबादी नियंत्रित करने का यह एकमात्र मानवीय तरीका है।'' PAWCO एक पशु धर्मार्थ सोसायटी है जिसका गठन अद्वैत मोहन और समर रहमान

रोटरी क्लब ईलाहाबाद मिडटाउन की अध्यक्ष डॉ दिव्या बर्तरिया (चरम दाएं) क्लब के सदस्यों के साथ PAWCO, एक पशु कल्याण संगठन को कुत्ते के लिए आनाज दान किया।

द्वारा 2017 में एक टीकाकरण शिविर में संयोगवश हुई मुलाकात के दौरान किया गया था। अब तक यह NGO 500 से अधिक बीमार जानवरों का इलाज कर चुका है, 20 से अधिक देसी कुत्तों को गोद ले चुका है, 123 नसबंदियाँ कर चुका है, 30 स्थायी आश्रय स्थलों और चौबीसों घंटे चलने वाली हेल्पलाइन स्थापित कर चुका है। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रो ई मंडल 3190 द्वारा 40 बूथों में 25,000 लोगों की जांच

टीम रोटरी न्यूज़

बाएं से: पलानी लोगनथन, रोटरी बैंगलोर मिडटाउन के अध्यक्ष, रवि नेदुंगडी, एस जयरामन, निदेशक-रोग निवारण, डीजी बी एल नागेंद्र प्रसाद और मर्सी बूथ में मर्सी मिशन के मोहम्मद उम्मेर।

जहाँ कर्नाटक में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और निजी अस्पताल कोविड रोगियों का इलाज करने में व्यस्त है वहीं डीजी नागेंद्र प्रसाद, रो ई निदेशक 3190 की, एस जयरामन, मंडल निदेशक, रोग निवारण, और डॉ. सुमुख, निदेशक, प्रोजेक्ट पाज़िटिव हेल्थ, के परामर्श से नो योर नंबर्स - स्टॉप एनसीडी परियोजना के अंतर्गत गैर-संचारी रोगों के लिए 25,000 नागरिकों की जांच करने की योजना है।

शुरूआत में 40 मर्सी बूथों की सेवाओं का लाभ उठाने का निर्णय लिया गया - झुग्गी निवासियों के लिए एक गैर सरकारी संगठन के गठबंधन द्वारा चलाए जा रहे फीवर क्लीनिक्स जहाँ तापमान, ऑक्सीजन संतृप्ति और बीपी की जांच की जाती है और यदि आवश्यक हो तो मरीजों को कोविड परीक्षण के लिए भेजा जाता है।

रोटरी बैंगलोर मिडटाउन अपने अध्यक्ष रवि नेदुंगडी के नेतृत्व में प्रमुख क्लब बन गया और जल्द ही 15 और क्लब इससे जुड़ गए। मरीजों की जांच के लिए हर मर्सी बूथ को स्क्रीनिंग किट के चालीस सेट जिसमें ग्लूकोमीटर, 500 स्ट्रिप्स, लैंसेट, अल्कोहल स्वैब, एक डिजिटल बीपी मीटर, वज़न नापने का एक डिजिटल स्केल, ऊंचाई मापने के लिए एक स्टैचर मीटर और रोटरी के लोगो वाले 500 हेल्थ कार्ड दिए गए थे। प्रत्येक बूथ को समुदाय में से ही चुने गए चार स्वास्थ्य कर्मचारियों द्वारा संचालित किया जाता है और इन उपकरणों का उपयोग करने के लिए उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है।

इन 40 बूथों पर 9 नवंबर से जांच शुरू हुई और 40 साल की उम्र से ऊपर के जिन लोगों में मोटापा, अस्थमा, मधुमेह और वंशानुगत कोई बीमारियाँ थी उन्हें प्राथमिकता दी गई। कई रोटेरियन भी स्क्रीनिंग प्रक्रिया में स्वयंसेवक है। डॉ सुमुख ने रोटेरियन और जनता को मधुमेह पर उपयोगी जानकारी प्रदान करने हेतु एक वेबिनार आयोजित किया। क्लीनिक पर आने वाले लोगों को मधुमेह और उच्च रक्तचाप पर अंग्रेजी और कन्नड़ में पैम्फलेट वितरित किए गए।

''रोटरी मिडटाउन की एन्स ने तीन महीनों के लिए 500 वरिष्ठ नागरिकों को मधुमेह और बीपी की दवाएं प्रदान करने हेतु धन एकत्रित किया। रोटरी ब्रिगेड के अध्यक्ष अश्वनी किंजर ने फीवर क्लीनिक्स पर जरूरतमंद लोगों को नि:शुल्क दवाएं देने की व्यवस्था भी की'', जयरामन ने कहा।

15 नवंबर तक, 6,000 लोगों की जांच की जा चुकी है। ''पिछले साल हमने 5,000 लोगों की जांच की थी'', उन्होंने कहा।■

District Wise TRF Contributions as on November 2020

(in US Dollars)

District Number	Annual Fund	PolioPlus	Endowment Funds	Other Funds	Total Contributions	EREY Donors (in numbers)	EREY %
India							
2981	23,438	2,206	5,000	0	30,644	129	2.6
2982	11,156	11,894	20,770	43,060	86,881	51	1.7
3000	16,286	12,764	10	10,800	39,859	36	0.7
3011	(6,826)	7,645	40,450	176,584	217,854	60	1.7
3012	10,606	2,357	0	8,532	21,495	46	1.3
3020	56,198	32,056	5,000	2,726	95,980	130	3.2
3030	9,889	2,284	0	128,275	140,448	47	0.9
3040	3,159	98	0	50	3,307	15	0.7
3053	9,733	404	0	60,668	70,804	27	1.0
3054	69,683	1,617	0	96,779	168,079	253	4.2
3060	33,758	(411)	27,141	57,727	118,215	619	14.2
3070	6,843	100	0	22,596	29,538	60	1.9
3080	17,953	11,908	0	0	29,861	69	2.1
3090	17,978	500	0	(736)	17,742	38	1.7
3100	13,857	252	0	4,224	18,333	17	0.8
3110	11,626	0	0	0	11,626	28	0.8
3120	1,055	1,769	0	(1,769)	1,055	3	0.1
3131	44,536	22,622	109,000	278,823	454,981	250	4.9
3132	7,453	2,042	0	3,801	13,297	32	1.0
3141	235,065	36,008	40,865	682,417	994,355	435	8.2
3142	109,624	6,923	101	4,693	121,342	312	9.7
3150	22,886	1,838	47,667	23,374	95,764	305	9.2
3160	7,949	5,811	16	0	13,775	29	1.2
3170	10,145	16,649	2,253	112,431	141,479	54	1.0
3181	13,425	2,027	0	7,050	22,501	48	1.4
3182	21,812	4,054	0	7,265	33,131	41	1.3
3190	50,631	17,449	25,000	112,219	205,299	356	7.1
3201	20,101	18,330	0	128,172	166,604	246	4.4
3202	27,110	15,762	8,468	20,272	71,613	97	1.8
3211	1,137	3,414	0	70,927	75,478	10	0.2
3212	14,566	22,351	14	76,733	113,664	17	0.4
3231	(386)	245	0	(212)	(354)	3	0.1
3232	13,226	28,409	2,000	197,280	240,916	97	1.7
3240	41,699	15,347	0	43,955	101,001	118	3.9
3250	7,944	703	0	93	8,741	118	3.2
3261	10,578	1,108	0	2,833	14,520	24	0.9
3262	8,709	2,099	0	0	10,808	29	0.8
3291	9,384	1,467	0	50,950	61,802	30	0.8
India Total	**983,986**	**312,103**	**333,757**	**2,432,592**	**4,062,438**	**4,279**	**2.9**
3220 **Sri Lanka**	58,491	16,930	1,000	15,015	91,436	139	7.3
3271 **Pakistan**	1,006	1,035	0	70,091	72,132	0	0.0
3272 **Pakistan**	18,593	9,890	0	1,063	29,546	93	5.6
3281 **Bangladesh**	69,485	3,980	29,000	136,397	238,862	327	4.6
3282 **Bangladesh**	31,611	4,195	0	7,770	43,576	46	1.1
3292 **Nepal**	80,451	8,563	0	155,123	244,138	1119	22.6
South Asia Total	**1,243,623**	**356,696**	**363,757**	**2,818,051**	**4,782,127**	**6,003**	**3.5**
World Total	**40,560,901**	**10,051,004**	**11,030,042**	**12,299,694**	**73,941,642**		

Source: RI South Asia Office

संगीत और माधुर्य

मोहम्मद रफ़ी
एक पूर्ण गायक

एस आर मधु

क्या कोई अकेला गीत फ़िल्मी गीतों से भरी दुनिया में महानतम सिद्ध हो सकता है? हाँ वो गीत है – *मन तड़पत हरि दर्शन को आज,* गायक मोहम्मद रफी की तड़पती आवाज़, शकील बदायुनी के दिल चीर देने वाले बोल और नौशाद के स्वर्णिम संगीत से सजा, 1952 की फिल्म बैजू बावरा का ये भजन जिसमें आवाज, अलफ़ाज़ और मिसाल का अद्भुत तालमेल है, बॉलीवुड के इस सर्वश्रेष्ठ भजन की रचना तीन मुस्लिम कलाकारों ने की है!

इस फ़िल्म का अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रफी का एक और यादगार गीत है। भक्ति से ओतप्रोत, *ओ दुनिया के रखवाले,* गीत को जिस अधिकार और ताक़त के साथ गाया, जिसमें गीत के अंतिम शब्द *रखवाले* को दोहराने के साथ साथ आवाज ऊपर बढ़ती जाती है, जिस का समापन आरोह के उत्कर्ष पर होता है!

बैजू बावरा से पहले ही रफी का करियर ऊंचाइयां छूने लगा था। 1950 और 1960 के दशक पर उनका एकछत्र राज था। जावेद अख्तर कहते हैं, ''उन्होंने पार्श्व गायन को एक

नया आयाम दिया।'' 1990 के दशक में एक रेडियो साक्षात्कार में नौशाद से पूछा गया था: यदि आपको अपने जीवन के सर्वश्रेष्ठ संगीत की रचना करनी पड़े, तो आप क्या करेंगे? उसने जवाब दिया: ''मैं अल्लाह से गुजारिश करूंगा कि रफी को एक घंटे के लिए वापस भेज दे।'' मन्ना डे ने रफ़ी को अपनेआप में एक संस्थान, *घराने* का दर्जा दिया है।

बॉलीवुड संगीत का बेहद सम्मानित नाम रफी सोने का मानक क्यों कहलाते थे? निश्चित ही इसका पहला कारण तो उनकी आवाज है - अद्भुत पकड़, अभिव्यंजना और आवाज़ में कमाल का विस्तार। संगीतकार प्यारेलाल ने कहा था, ''रफी की आवाज का कोई सानी नहीं था।'' वो बखूबी जानते थे कि कितना ज़ोर देना, है कहाँ देना है कहाँ रुकना है। उनकी दिलकश आवाज़ में एक अलग तरह की लोच और पाकीजगी थी, जो सीधे उन्हें कलाकार से जोड़ देती थी जिस के ज़रिये, बॉलीवुड के नायकों के लिए अपनी प्रेमिकाओं को रिझाने के लिए, कई तरह की अभिव्यक्तियों विनती, लुभाना, कल्पना करना, प्रशंसा करना, जश्न मनाना, तड़पना, अफ़सोस, तकलीफ, के लिए उनकी आवाज़ बिलकुल सटीक बैठती थी। लेकिन रफ़ी *जंगली, जानवर ,बद्तमीज़, लोफर, ब्लफ़मास्टर* फिल्मों में भी आलिशान तरीके से छा गए ।

रफी की अपील की एक और ख़ास वजह, उनमें किसी भी कलाकार के अनुरूप अपनी आवाज़ को ढाल लेने की क्षमता थी, जब वो दिलीप, शम्मी कपूर, ऋषि कपूर या जॉनी वॉकर या जिस भी किरदार के लिए गाते थे मानो ऐसा लगता था कि वो उसी कलाकार की आवाज हो। एसपीबी ने बताया कि वो अपनी आवाज नहीं बदलते थे, लेकिन उसकी शैली या अंदाज़ बदल देते थे।

बॉक्सर मुहम्मद अली के साथ।

रफी का सफरनामा

महान गायक मोहम्मद रफ़ी का जन्म अमृतसर के पास कोटला सुल्तान सिंह गाँव में 2 दिसंबर, 1924 को हुआ था। रफ़ी के पिता हाजी अली एक रसोइए थे - उनकी पाक कला की मांग सामाजिक और धार्मिक आयोजनों में बहुत अधिक थीं। 1926 में, अली के 10 सदस्यों का परिवार लाहौर चला गया, जहाँ हाजी अली ने एक ढाबा शुरू किया और रफी के भाई मोहम्मद दीन ने एक नाई की दुकान खोल ली।

बचपन में, वो एक फ़कीर के गायन से काफी प्रभावित हुए और अपने भाई की नाई के दुकान पर आकर अक्सर वही गीत गाया करते। उनकी आवाज़ सुनकर उनके भाई का दोस्त हमीद रफ़ी से इतना प्रभावित हुआ कि रफ़ी को प्रोत्साहित कर उसे सही मुकाम पर पहुंचाना अपना ध्येय बना लिया।

13 साल की उम्र में रफी ने एक समारोह में शिरकत की थी, पावर ब्रेकडाउन के कारण स्टेज पर बिजली ना होने की वजह से सितारा शख्सियत के एल सहगल ने गाने से मना कर दिया, जब उन्हें स्टेज पर आने में देर हो रही थी तो 13-वर्षीय मोहम्मद रफी को गाने का मौक़ा दिया गया, जहां रफ़ी ने बिना माइक के गाना शुरू कर दिया, दर्शक उनकी सूफी आवाज के माधुर्य और उसके नियंत्रण पर आश्चर्य चकित रह गए। संगीतकार श्याम सुंदर वहीं मौजूद थे; उन्होंने रफी और हमीद को बंबई आ कर मिलने के लिए कहा।

1944 में हमीद और रफ़ी (तब 20 साल के) बॉम्बे आ गए। उन्होंने भिंडी बाजार में एक छोटा सा फ्लैट किराये पर लिया और एक के बाद एक संगीतकारों के दरवाजे खटखटाने में अपना समय बिताया। वो कठिन समय था। जब बस या ट्रेन टिकट के लिए पैसे नहीं होते थे तो दोनों रेलवे पटरी के साथ साथ चलते हुए पैदल घर आते थे। दिन भर में भुना हुआ चना ही उनका एकमात्र भोजन था।

श्याम सुंदर की मदद से, लखनऊ में रफी और हमीद किसी तरह नौशाद के वालिद से मिले और प्रसिद्ध संगीतकार के लिए एक-पंक्ति का सिफ़ारिशी पत्र लेने में कामयाब रहे। जिसमें

भारत की पूर्व प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी के साथ।

लिखा था कि ''नौशाद, इस लड़के में काबलियत हो तो मौका ज़रूर देना।'' बस, वही एक लाइन बॉलीवुड का पासपोर्ट बन गई।

लेकिन कामयाबी की मंज़िल अभी दूर थी और प्रगति की रफ़्तार धीमी। एक बार की बात है, भीड़ भरे इलाके बांद्रा में रहने वाले रफी सुबह 4.30 बजे मरीन ड्राइव जाकर रियाज कर रहे थे जहां पार्श्व गायिका सुरैया ने उनकी आवाज़ सुनी और मंत्रमुग्ध हो गई, और रियाज़ के लिए अपने घर के एक कमरे में रहने का प्रस्ताव दिया।

रफी का पहला सुपर हिट था नूरजहाँ के साथ एक युगल गीत - *यहां बदला वफ़ा का* (फिल्म *जुगनू,* 1947)। 1948 में, गांधीजी की हत्या के बाद रफ़ी द्वारा गाया गया अमर गीत सुनो *सुनो ए दुनिया वालों बापू की ये अमर कहानी* आया। (गीत राजिंदर कृष्ण, संगीत हुस्नलाल भगतराम का।) पंडित नेहरू ने रफी को अपने निवास पर गीत गाने के लिए आमंत्रित किया और 1948 में, स्वतंत्रता दिवस पर प्रधान मंत्री ने रफी को उनके गीत के लिए पदक से अलंकृत किया। अगले वर्ष, *सुहानी रात ढल चुकी* (*दुलारी,* 1949), रोमांटिक तड़प का एक यादगार गीत, जिसने सभी को मोहित कर दिया।

1950 और 1960 के दशक के दौरान रफ़ी की प्रसिद्धि आसमान की बुलंदी छू गई। कई हिट फिल्मों में से *दीदार* (1951) एक वो फिल्म थी जिसमें दिलीप कुमार का करिश्मा, नौशाद की प्रतिभा और रफी का जादू एक साथ सर चढ़ कर बोला था। इस फिल्म से *मेरी कहानी भूलने वाले* और *हुए हम जिनके लिए बदनाम* दिल को रुला देने वाली बंदिशे थीं। और 1952 में *बैजू बावरा* के बाद तो रफ़ी बॉलीवुड के बेताज़ बादशाह बन गए। वह रेस का वो घोड़ा था जिसने कभी भी अपनी गति कम नहीं होने दी। मुकेश ने एक बार उन्हें परिहास में उलाहना दिया था ''आप कभी बीमार क्यों नहीं पड़ते, ताकि दूसरों को भी मौका मिल सके।''

बॉलीवुड के शीर्ष 100 अभिनेताओं, गीतकारों और संगीतकारों की सफलता के पीछे रफी की विलक्षण प्रतिभा के योगदान पर एक पूरी किताब लिखी जा सकती है पर अभी मैं सिर्फ एक अभिनेता तक ही सीमित रहना चाहूंगा।

रफ़ी के तीन गीतों की बदौलत शम्मी कपूर को *तुम सा नहीं देखा* (1957) में अपना पहला हिट देने से पहले 17 फ्लॉप फिल्मों का सामना करना पड़ा था। यदि रफ़ी की ऊंची और तेज़ आवाज़ मंत्रमुग्ध कर देती थी, तो शम्मी की ऊर्जा और जीवन शक्ति संक्रामक थी। *जंगली* फिल्म में, रफी की जादुई आवाज के माध्यम से शम्मी ने सायरा बानू के साथ दो विपरीत स्तरों पर गीत गा कर - हाई पिच पर चाहे कोई मुख्य जंगली कहे, याहू! और वो मधुर गीत *एहसान तेरा होगा मुझ पर* के साथ, युवा भारत को अपने जादू से झकझोर डाला था। रफी ने शम्मी कपूर के लिए 190 गाने गाए।

रफ़ी ने अपने करियर में 5,063 गाने गाए, जिनमें 4,225 हिंदी फ़िल्मी गाने शामिल हैं। उन्हें मिले सम्मानों में प्रमुख हैं 1967 में पद्मश्री, 1977 में राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ गायक और छह फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार। ये पुरूस्कार उन्हें *चौदहवीं का चांद, तेरी प्यारी प्यारी सूरत को, चाहूंगा मैं तुझे सांझ सवेरे, बहारों फूल बरसाओ, दिल के झरोखे में, क्या हुआ तेरा वादा* गीतों के लिए मिले थे।

2001 में, हीरो होंडा और स्टारडस्ट पत्रिका द्वारा रफी को 'मिलेनियम का सर्वश्रेष्ठ गायक' घोषित किया गया था।

रफी के करियर को एकमात्र झटका 1970 के दशक की शुरुआत में लगा था, जब किशोर कुमार ने उन्हें बॉलीवुड गायक के शीर्ष से अपदस्थ कर दिया था। राजेश खन्ना बॉलीवुड पर छा गया था इसलिए अधिकांश निर्माता और संगीतकारों ने उनके पसंदीदा गायक, किशोर कुमार की ओर रुख कर लिया था। दशक के उत्तरार्ध में रफी नेअपना खोया हुआ पद पुनः

प्राप्त कर लिया, लेकिन 1980 में दिल का दौरा पड़ने से उनका आकस्मिक निधन हो गया।

रफ़ी के मेरे कुछ पसंदीदा गीत

रोमांटिक गाने

- चौदहवीं का चाँद हो (1960 संगीत रवि)
- अभी ना जाओ छोड़ कर (1962 हम दोनों, जयदेव)
- मेरे महबूब तुझे (1963, मेरे मेहबूब नौशाद)

चिंतनशील गाने

- जिन्हें नाज़ है हिन्द पर वो कहाँ हैं (1957 एस डी बर्मन, प्यासा)
- मैं ज़िंदगी का साथ निभाता चला गया (1961 हम दोनों जयदेव)
- मन रे तू काहे ना धीर धरे (1961 चित्रलेखा, रोशन)

ग़मगीन नग्मे :

- टूटे हुए ख़्वाबों ने (1958 मधुमती, सलिल चौधरी)
- देखी ज़माने की यारी (1959कागज़ के फूल, एस डी बर्मन)
- दिन ढल जाए (1965गाइड, एस डी बर्मन)

रफ़ी के कुछ किस्से

- रफी को ओ पी नय्यर की तेज़,दिलकश, चटपटी धुनें पसंद थी, जिसे वो पूरे जोश के साथ गाया करते थे। रफ़ी कभी-कभी कहते थे *यूं तो हम ने लाख संगीतकार देखे हैं, ओपी नैय्यर सा नहीं देखा।* लेकिन 1966 में दोनों के बीच दरार आ गई। शंकर-जयकिशन फिल्म की रिकॉर्डिंग में हुई देरी की वजह से रफ़ी *सावन की घटा* फिल्म की रिकॉर्डिंग में देर से पहुंचे थे। इसलिए देरी से पहुँचने पर नाराज़ होने के बजाये देरी के कारण की वजह से नैय्यर नाराज हो गए। उन्होंने रिकॉर्डिंग रद्द कर दी और कहा कि उन्हें रफी की कोई ज़रुरत नहीं है। तीन साल तक उन्होंने साथ में काम नहीं किया, फिर एक दिन रफी ने नय्यर को बुलाया और दोनों ने मिल कर काम करना शुरू कर दिया।
- एसडी बर्मन और रफी की जोड़ी का जादू सालों तक कई फिल्मों में चला। 1967 में मुंबई के षणमुखानंद हॉल में वो एसडी बर्मन नाइट थी, जिसने लता और रफी का मेल फिर से करा दिया था, चार साल तक दोनों दिग्गज अलग रहे थे। उस लाइव म्यूजिक शो का मंच संचालन नरगिस और मदन मोहन कर रहे थे। उन्होंने घोषणा की, अब आपके सामने एक महान आश्चर्य घटित होने वाला है इसके साथ ही लता और रफी ने विपरीत दिशाओं से मंच में प्रवेश किया, हजारों तालियों की गड़गड़ाहट के बीच।
- 1973 में संगीतकार ओमी (सोनिक-ओमी जोड़ी के) ने फिल्म *धर्मा* के लिए रफी और आशा के साथ कव्वाली रिकॉर्ड की थी। ओमी चाहते थे कि गीत को एक बार फिर से रिकॉर्ड किया जाए और इसे ले कर रफी बहुत परेशान थे। लेकिन हुआ यूँ कि अगली

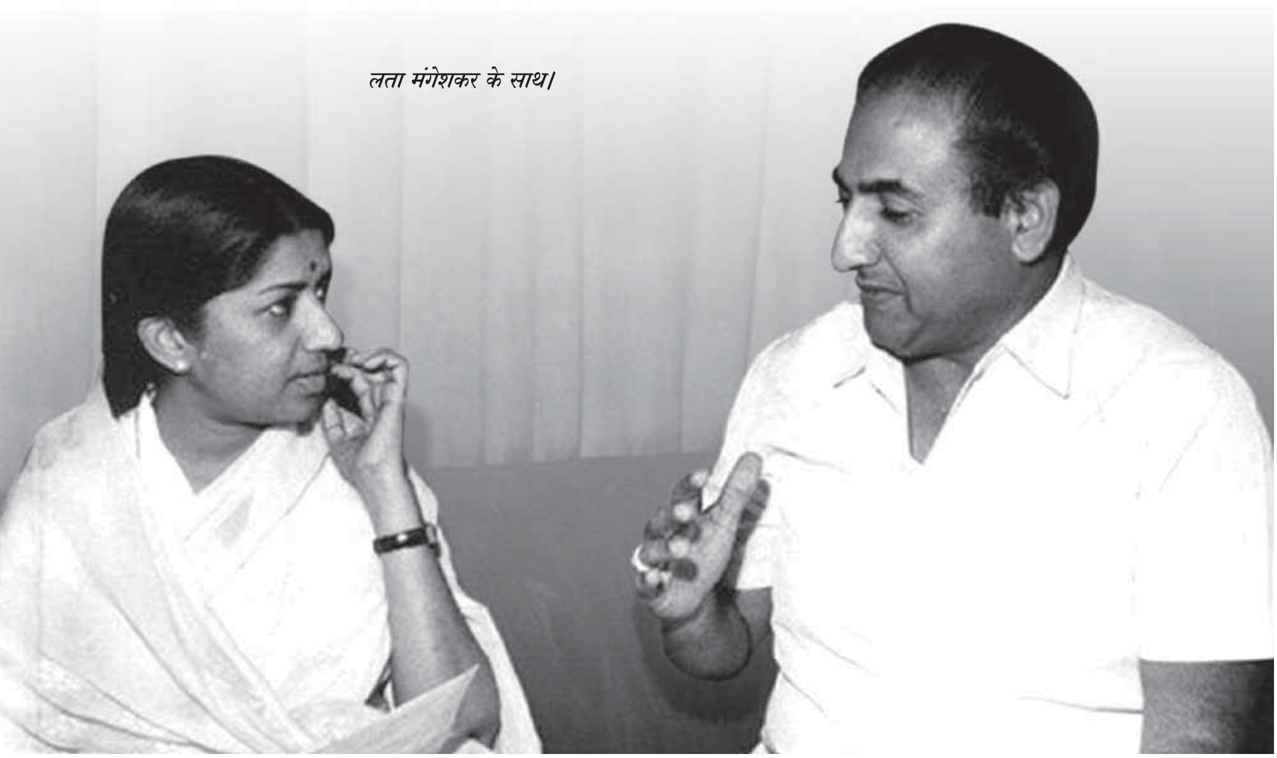

लता मंगेशकर के साथ।

सुबह रफी अमेरिका में निर्मित बड़े स्पीकर्स के साथ ओमी के घर पहुँच गए और ओमी से पिछली रात रिकॉर्ड की गई कव्वाली को बड़े स्पीकर्स पर सुनने के लिए कहा। नतीजा : दुबारा कोई रिकॉर्डिंग नहीं हुई। ''ये स्पीकर आपके लिए हैं'', रफी ने कहा। गाने के लिए उनकी फीस ₹3,000 थी और जबकि रफ़ी ने ओमी को ₹20,000 के स्पीकर्स उपहार में दे दिए! ऐसे थे रफ़ी, ओमी ने बताया।

लाइव शो - भारत और विदेश में

रफ़ी में कोई भी ऐब नहीं था; प्रशंसकों का हुजूम ही उनका नशा था! उनके लाइव शो का सिलसिला 1960 में पूर्वी अफ्रीका के दौरे से शुरू हुआ था।

1962 में भारत-चीन सीमा पर भारत की सीमा सुरक्षा बल के जवानों का मनोरंजन करने के अनुरोध पर उन्होंने तुरंत हामी भर दी। इस आयोजन में दिलीप कुमार भी उनके साथ थे। दिलीप का कहना है कि शो से एक दिन पहले, कड़ाके की सर्दी की वजह से हुए गले में संक्रमण के कारण रफी की आवाज गायब हो गई, वो ठीक से बोल भी नहीं पा रहे थे। दिलीप कुमार ने रफ़ी को अदरक और शहद पीने का नुस्खा दिया और यह काम कर गया! शो की सुबह तक तो रफ़ी का गला बिलकुल ठीक हो गया था। उस शो को अपार सफलता मिली थी।

भारत के पूर्व प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के साथ।

1977 का किस्सा है। शशि कपूर ने पृथ्वी थिएटर दुबारा शुरू किया था। उन्होंने अपने पिता पृथ्वीराज कपूर की स्मृति में पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी शहर में लगातार दो शाम संगीत कार्यक्रमों का आयोजन किया था। पहली शाम एक शानदार कार्यक्रम में भारी हंगामे के बीच रफी ने प्रस्तुति दी थी। इसमें फ़िल्मी सितारे अमिताभ बच्चन, रेखा, रणधीर कपूर और शबाना आज़मी ने भी शिरकत की थी।

अगली शाम सुलक्षणा पंडित और उनकी टीम की प्रस्तुति थी। उसी सुबह रफी हवाई अड्डे के लिए रवाना हुए, तभी आयोजकों के सर पर गाज गिरी कि सुलक्षणा नहीं आ सकेगी। घबराहट में आयोजकों के हाथ पैर फूल गए क्योंकि सभी टिकट बिक चुके थे। अमिताभ तुरंत हवाई अड्डे पहुंचे और वहां विमान में मौजूद रफी को रूकने के लिए मना लिया। दूसरे दिन भी रफ़ी ने भरपूर मनोरंजन किया, लेकिन श्रोताओं का मन नहीं भरा था।

व्यक्तिगत जीवन

रफ़ी के चार बेटे और तीन बेटियाँ हुईं। पर एक बेटा ही ज़िंदा है, शाहिद जो मुंबई में एक गारमेंट का व्यापार करता है और रफी विला में रहता है। घर का एक कमरा रफ़ी संग्रहालय

किशोर कुमार के साथ।

में परिवर्तित कर दिया गया है, जिसमें रफ़ी की किताबें, तस्वीरें और अन्य यादगार चीजें हैं।

रफी नहीं चाहते थे कि उनके बच्चे गायकी में उतरें या फिल्म उद्योग का हिस्सा बनें। इसके बजाये वो चाहते थे कि उनके बच्चे व्यापार करें। उन्होंने अपने चारों बेटों को लंदन भेजा था।

व्यक्तिगत रूप से वह सादगी पसन्द और संकोची इंसान थे - वह नशे से परहेज करते थे और पार्टी या समारोह में कम ही आते जाते थे। हाँ, भोजन ज़रूर उनकी कमजोरी थी। वह मिठाई के ज़बरदस्त शौकीन थे, और पत्नी बिल्किज़ को उनका ख्याल रखते हुए अक्सर टोकना पड़ता था क्योंकि उन्हें मधुमेह रोग था। वह आमतौर पर बिल्किज़ द्वारा बनाई गई विशेष चाय अपने साथ ले जाते थे - बादाम, लौंग और इलायची के साथ उबला दूध।

कैरम, बैडमिंटन और पतंगबाजी उनके पसंदीदा खेल थे। मोहम्मद अली के प्रशंसक, 1979 में जब मल्टी-सिटी कॉन्सर्ट टूर के दौरान कई शहरों में अपने कार्यक्रम करते हुए वह अमेरिका के केंटकी शहर पहुंचे तो रफ़ी ने उस प्रसिद्ध मुक्केबाज से मिलने की इच्छा जाहिर की। महान मुक्केबाज को जब ये मालूम पड़ा कि भारत का एक मशहूर गायक उनसे मिलना चाहता है तो रफ़ी से मिलने अली उनके होटल गए। अली के सुझाव पर ही एक दूसरे को घूँसा दिखाते हुए गायक और मुक्केबाज की फोटो खींची गईं। रफी को आकर्षक घड़ियों और स्टाइलिश कारों का शौक था। लंदन में खरीदी नीली ऑडी उनकी पसंदीदा कार थी।

मुहम्मद रफ़ी विशाल और उदार हृदय व्यक्ति थे। कोई भी उनके पास से ख़ाली हाथ नहीं जाता था। एक दोस्त को याद है कि एक दिन जब किसी भिखारी ने उनसे पैसे मांगे, तो रफी ने जेब में रखे सारे पैसे भिखारी को दे दिए। ''देने से पहले आपने पैसे नहीं गिनते दोस्त ने पूछा।'' उन्होंने कहा, ''मुझे देने से पहले जब ईश्वर ही नहीं गिनता तो भला देने से पहले गिनने वाला मैं कौन होता हूँ।''

अशोक कुमार के साथ।

30 जुलाई 1980 को, रफ़ी को दिल का गंभीर दौरा पड़ा था, 10.25 बजे उनका निधन हो गया। कहते हैं कि रफी के लिए उस दिन आसमान भी रोया था और काफी तेज़ बारिश हो रही थी पर इसके बावजूद, मुंबई की सड़कों पर बांद्रा से सांताक्रूज कब्रिस्तान तक, उनके जनाजे में शरीक होने के लिए हजारों प्रशंसकों का हुजूम उमड़ पड़ा था, बालकनियों से फूलों की बारिश हो रही थी।

इंग्लैंड के बर्मिंघम में रफी का स्मारक बनाया गया है। अहमदाबाद में एक प्रशंसक ने अपने घर में उनके लिए एक मंदिर-संग्रहालय बनाया है। जावेद अख्तर कहते हैं, ''रफी तो अपने करोड़ों प्रशंसकों के दिल में प्रतिष्ठापित हैं।''

संपादक की पसंद

- चौदहवीं का चाँद हो (1960 संगीत रवि)
- अभी ना जाओ छोड़ कर (1962 हम दोनों, जयदेव)
- मेरे महबूब तुझे (1963, नौशाद)
- मैं ज़िंदगी का साथ
- बहारों फूल बरसाओ
- मेरे मेहबूब तुझे मेरी मुहब्बत की कसम
- खोया खोया चाँद

लेखक वरिष्ठ पत्रकार और रोटरी क्लब मद्रास साउथ के सदस्य हैं।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

आपके गवर्नरों से मिलिए

वी मुत्तुकुमारण

अखिल महिला क्लब, सदस्यता अवरोधन पर ध्यान

हरीश कुमार गौर

मानव संसाधन परामर्श, रोटरी क्लब भिवाड़ी, रो ई मंडल 3053

दूसरे वर्ष के लिए अपने कार्यकाल के बढ़ जाने पर, हरीश गौर कहते है, कोविड संबंधित मुद्दों के कारण, मैं सदस्यों को रोके रखने और एक उन्मुखीकरण के बाद उचित रोटेरियनों को शामिल करने हेतु विशेष प्रयास करने के लिए उत्सुक हूं ताकि वे क्लबों को न छोड़ें।'' वह सदस्यता में 10 प्रतिशत की वृद्धि को लेकर आशावान है जो अभी 64 क्लबों में 2,800 पर है। यह मंडल राजस्थान में मौजूदा सात क्लबों की संख्या में एक और अखिल महिला क्लब को शामिल करेगा और ''हमने उन महिला सदस्यों में 2-3 प्रतिशत की वृद्धि निर्धारित की है जो हमारी कुल संख्या में 16 प्रतिशत हिस्सेदारी रखती है।''

वर्ष की शुरुआत से ही रोटरेक्ट क्लब 30 से 64 के आँकड़े को छूने को लेकर तैयार है और ''यह मेरी इच्छा है कि मंडल में प्रत्येक क्लब कम से कम एक रोटरेक्ट क्लब को प्रायोजित करे।'' वर्ष की शुरुआत में रोटरेकटरों की लगभग 900 की संख्या को वह वर्ष के अंत तक 1,500 तक ले जाने पर भी काम कर रहे है। गौर द्वारा ग्वालियर के पास स्थित एक गांव में एक मेगा वाटर डैम (वैश्विक अनुदान: 70,000 डॉलर) का उद्घाटन किया गया जो सिंचाई को बढ़ाएगा और 25 गांवों की पानी की अन्य जरूरतों को पूरा करेगा। हमने भूजल को बनाए रखने के लिए इसके किनारों पर 1,000 से अधिक पौधे लगाए है। इस बांध में मछली पालन भी किया जाता है, वह कहते है।

गौर सीएसआर निधि से 28 हैप्पी स्कूल करेंगे, ज्यादातर राजस्थान में, जिसके लिए दो वैश्विक अनुदान (155,000 डॉलर) अनुमोदन की प्रक्रिया में है। वैश्विक अनुदान परियोजना (62,000 डॉलर) के तहत अजमेर के सरकारी अस्पताल में ओटी उपकरण स्थापित किए जा रहे है और हमें दिसंबर-अंत तक काम पूरा होने की उम्मीद है।

रोटरी क्लब बीकानेर ने वैश्विक अनुदान (20,000 डॉलर), DDF (20,000 डॉलर), नकद योगदान (42,000 डॉलर) और निर्देशित उपहार (30,400 डॉलर) के मिश्रण के साथ 110,400 डॉलर की परियोजना लागत से छह मशीनों के साथ डऊउङ डागा रोटरी डायलिसिस सेंटर खोला है। हमने सरकारी अस्पतालों को 20 वेंटिलेटर वितरित किए जिसके लिए 32,000 डॉलर एक वैश्विक अनुदान से और शेष राशि दान के माध्यम से प्राप्त हुई। वह ढठ्रू के लिए 300,000 डॉलर इकट्ठा करेंगे। एक सांस्कृतिक गैर सरकारी संगठन के सदस्य के रूप में, मुझे मेरे दोस्तों द्वारा रोटरी में लाया गया और मैं 2006 में रोटरी क्लब भिवाड़ी का सदस्य बना।

"हम भौतिक बैठकों को फिर से शुरू करना चाहते है"

दिनेश चंद्र शुक्ला

चार्टर्ड अकाउन्टन्ट, रोटरी क्लब कानपुर वेस्ट, रो ई मंडल 3110

कोविड ने रो ई मंडल 3110 में सदस्यता वृद्धि और सामुदायिक परियोजनाओं में अनिश्चितता की विस्तारित अवधि को प्रेरित किया है, दिनेश शुक्ला कहते है। "हम केवल ऑनलाइन बैठकें और कार्यक्रम आयोजित करने में सक्षम है, लेकिन सदस्य दो तरफा वार्तालाप चाहते है न कि सिर्फ एकतरफा सम्प्रेषण और इसलिए, ऐसे वेबिनार में दिलचस्पी कम होने लगी है", वह कहते है। दूसरी बात यह है कि मध्य यूपी में आर्थिक गतिविधियों पर बड़ी मार पड़ी है और मध्यम वर्ग के पेशेवर, व्यापार और व्यापारी जुड़ने और विकास में नई जान डालने हेतु भौतिक बैठकें और आमने-सामने की बातचीत की प्रतीक्षा में है। "लेकिन मुझे 300 नए सदस्यों को शामिल करके अगले साल जून तक सदस्यता संख्या को 4,200 तक ले जाने की उम्मीद है। और महामारी के थमने के बाद हम भौतिक बैठकों को फिर से शुरू करने की उम्मीद कर रहे है।"

मंडल में महिलाओं की सदस्यता 15 प्रतिशत थी। "क्लबों में अधिक महिलाओं को शामिल करना मुश्किल है क्योंकि उनमें से अधिकांश गृहिणी है न कि उद्यमी।" चूंकि अधिकांश कॉलेज और स्कूलों को बंद कर दिया गया है, "हम इस कोविड काल में केवल 200-230 नए रोटरेक्टरों को जोड़ने और केवल कुछ ही रोटरेक्ट क्लबों का गठन करने का लक्ष्य बना रहे है।" शुक्ला कानपुर के सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में 10 मशीनों के साथ एक डायलिसिस सेंटर का उद्घाटन करेंगे (वैश्विक अनुदान: करीब ₹75 लाख)।

वह TRF को देने के लिए 100,000 डॉलर इकट्ठा करेंगे। "मैं कानपुर, आगरा, अलीगढ़ और काशीपुर (उत्तराखंड) में वैश्विक अनुदान, डीडीएफ और निजी योगदानों के मिश्रण के माध्यम से लगभग 50 हैप्पी स्कूल परियोजनाएं करूंगा।" एक चार्टर्ड अकाउंटेंट बनने के बाद, वह 1987 में "अपने दोस्तों के दबाव में आकर रोटरी क्लब कानपुर गंगाघाट से जुड़े जिन्होंने मुझे जान-पहचान बढ़ाने के लिए सामाजिक क्लबों से जुड़ने के लिए कहा था।" बहुत जल्द, वह एक रोटेरियन बनने के बाद रोटरी क्लब कानपुर वेस्ट में स्थानांतरित हो गए।

जाम्बिया में एक चिकित्सीय मिशन भेजने की योजना

हरीश मोटवानी

फार्मा वितरण, रोटरी क्लब बीड मिडटाउन, रो ई मंडल 3132

सदस्यता अवरोधन ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में से एक है, और इस पर मैं कोविड चुनौतियों को देखते हुए काम कर रहा हूं। "लेकिन मैं कम से कम 600 नए सदस्यों को जोड़ने को लेकर आश्वस्त हूँ ताकि रोटरी वर्ष के अंत तक सदस्यता 4,000 के आँकड़े को छू ले, जिससे 20 प्रतिशत की वृद्धि हो", हरीश मोटवानी कहते है। वर्तमान में, मंडल में 88 क्लबों में लगभग 3,400 रोटेरियन है। वह कम से कम 100 महिला सदस्यों को शामिल करने को लेकर उत्सुक है जिससे उनकी संख्या में जून 2021 तक 10.8 से लेकर 13.8 प्रतिशत तक की बढ़ोत्तरी होगी।

रोटरेक्ट को बढ़ावा देना उनके दिल के करीब है क्योंकि वह 18 नए क्लब खोलेंगे और मंडल में रोटरेक्ट क्लबों की संख्या को 50 तक ले जाएंगे और रोटरेक्टरों की संख्या को "लगभग दोगुना करते हुए उसे 1,600 तक ले जाएंगे। मैं 100 नए इंटरेक्ट क्लब खोलने का भी लक्ष्य बना रहा हूं", जिसमें से अब तक 18 क्लब पहले ही गठित किए जा चुके है। यह मंडल 100 गाँवों को गोद लेगा ताकि इन्हें विशाल नेत्र शिविरों के माध्यम से नेत्रहीन मुक्त किया जा सके जिसमें रोटेरियन डॉक्टरों की मदद से और स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों के साथ जुड़कर मुफ्त सर्जरी की जाएगी।

अहमदनगर में मैक केयर अस्पताल में एक डायलिसिस केंद्र (चार मशीनें) खोला जाएगा (वैश्विक अनुदान: 48,000 डॉलर)। "हमारे पास जालना और अहमदनगर में दो कोविड देखभाल केंद्र है, घटते मामलों के चलते बाद वाले को बंद कर दिया गया है। लेकिन जालना केंद्र अभी भी सक्रिय है।" टीआरएफ को देने के लिए उनका लक्ष्य 180,000 डॉलर का है।

यह मंडल अप्रैल के बाद रांची के पास एक सुदूर गांव या जम्मू में एक सर्जिकल शिविर आयोजित करेगा। "हम मई-जून तक 20 डॉक्टरों और पांच स्वयंसेवकों के साथ जाम्बिया में एक मेडिकल मिशन भेजने हेतु बातचीत कर रहे है", मोटवानी कहते है। वह स्थानीय रोटेरियनों द्वारा चलाए जा रहे पोलियोप्लस अभियान से प्रेरित थे जिसके कारण वह 1997-98 में रोटरी क्लब बीड मिडटाउन से जुड़े। "मेरे भाई, एक वरिष्ठ रोटेरियन, मेरे गुरु है और निर्णय लेने में मेरा मार्गदर्शन करते है", वह कहते है।

विशाल वैश्विक अनुदान परियोजनाओं के मध्य कोविड देखभाल केंद्र

संग्राम विष्णु पाटील

इंजीनियरिंग निर्यात, रोटरी क्लब कोल्हापुर मिडटाउन, रो ई मंडल 3170

कोल्हापुर में पांच कोविड देखभाल केंद्रों की स्थापना करने के साथ ही 4 करोड़ की लागत वाली अनेक कोविड संबंधित वैश्विक अनुदान परियोजनाएं कार्यान्वित की जा रही है। इस शहर के सभी 14 क्लब 84,000 डॉलर की कुल लागत वाली इस भव्य परियोजना के लिए एक साथ आए है। प्रत्येक केंद्र आईसीयू बेड और कोविड उपचार के लिए अन्य उपकरणों से भरे हुए है, संग्राम पाटिल कहते है। पाटिल कम से कम 10 हैप्पी स्कूलों परियोजनाओं को लागू करने के इच्छुक है जो ज्यादातर कोल्हापुर के इचलकरंजी कस्बे में की जाएंगी। *होप एक्सप्रेस,* कैंसर का पता लगाने वाली एक बस, स्तन, ग्रीवा, मौखिक और फेफड़ों के कैंसर के लिए ग्रामीणों की जांच करने हेतु दूरस्थ क्षेत्रों में शिविर आयोजित करेगी। यह परियोजना कोल्हापुर कैंसर केंद्र के साथ संयुक्त रूप से की जा रही है।

पाटिल अपने कार्यकाल के दौरान पूर्व की 6,000 की सदस्यता में 700 नए सदस्यों को जोड़कर उसे एक बेहतर संख्या तक ले जाने की उम्मीद कर रहे है। मैं 133 की मौजूदा संख्या में सात नए क्लब शामिल करूंगा। वह अगले साल जून तक 30 नए रोटरेक्ट क्लबों का गठन करके इसकी संख्या को 95 तक ले जाएंगे, जबकि रोटरेक्टरों की संख्या 2,000 से कम से कम 2,700 तक बढ़ने के लिए तैयार है। टीआरएफ को देने हेतु उन्हें 1 मिलियन डॉलर इकट्ठा करने की उम्मीद है। पाटिल लेवल-2 से लेवल-3 के मुख्य दानकर्ता बनने जा रहे है। निस्वार्थ सेवा के अपने पारिवारिक मूल्य को आगे बढ़ाते हुए, मैं अपनी माँ से प्रेरित था जिनके उपदेश ने मुझे प्रभावित किया और मैं 1993-94 में रोटरी क्लब गोकुल शिरगाँव से जुड़ा, उन्होंने आगे कहा।

चिकित्सीय अनुदान, हैप्पी स्कूल शीर्ष प्राथमिकता

करुणेश के श्रीवास्तव

अस्पताल सेवा, रोटरी क्लब बाराबंकी, रो ई मंडल 3120

उनका प्राथमिक उद्देश्य सदस्यों को रोके रखना और जून तक मंडल की सदस्यता को 4,000 तक ले जाने के लिए 500 नए रोटेरियनों को शामिल करना है। करुणेश के श्रीवास्तव कहते है, ''मेरी 7-8 क्लबों को शुरू करने की योजना है और मैं पहले ही दो अखिल महिला क्लबों की स्थापना कर चुका हूँ और जल्द ही एक अन्य क्लब भी स्थापित हो जाएगा।'' मंडल में 450 रोटरेक्टरों के साथ 49 रोटरेक्ट क्लब है और यह आंकड़ा जून 2021 तक 1,000 को छू लेगा।

छब्बीस हैप्पी स्कूल (वैश्विक अनुदान: 120,000 डॉलर, दो सीएसआर अनुदान: 100,000 डॉलर) गोरखपुर में लागू किए जा रहे है।

टीआरएफ के लिए उनका लक्ष्य 150,000 डॉलर का है। सीएसआर निधियों के माध्यम से एकत्रित किए गए 100,000 डॉलर के चिकित्सा उपकरणों को गोरखनाथ ट्रस्ट अस्पताल को दान किया गया, जबकि 300,000 डॉलर के वैश्विक अनुदान के तहत कैंसर उपचार उपकरण खरीदे गए। मोतियाबिंद सर्जरी और अन्य 10,000 नेत्र सर्जरियों की भी योजना बनाई जा रही है।

रोटरी क्लब रेनुकूट डायलिसिस मशीनों को स्थापित करने के लिए 100,000 डॉलर की एक वैश्विक अनुदान परियोजना कर रहा है, जबकि रोटरी क्लब मिर्जापुर एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से आईसीयू के लिए कोविड उपकरण एवं मोतियाबिंद सर्जरी के लिए उपकरण प्रदान करेगा। रोटरी कलब गोरखपुर कोविड परीक्षण उपकरण (वैश्विक अनुदान: 100,000 डॉलर) दान करेगा और रोटरी क्लब वाराणसी सनराइज मदर एंड चाइल्ड अस्पताल में कुल 150,000 डॉलर की वैश्विक अनुदान परियोजना कर रहा है। 11 क्लबों द्वारा 20 व्यावसायिक केंद्रों को सिलाई मशीनें प्रदान की जा रही है। श्रीवस्ताव को 2006 में पीडीजी आलोक मारवाहा द्वारा रोटरी क्लब बाराबंकी में शामिल किया गया था क्योंकि ''मैं दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने के लिए रोटरी की गतिविधियों से प्रभावित था।''

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

स्कूलों में थ-ड्क लक्ष्य चुनौती

जून 2020 में न्यासियों की बैठक में न्यासी मंडल ने स्कूलों में WASH (WinS) संचालन समिति के सुझाव को स्वीकारा और कोविड महामारी के कारण उत्पन्न हुई प्रतिकूल स्थिति को देखते हुए एक साल के लिए WinS कार्यक्रम के विस्तार को अनुमोदित किया। जहां पायलट की अब जून 2021 में समाप्त होने की उम्मीद है, 20 फरवरी, 2021 तक सभी मान्यता आवेदन टीआरएफ को प्रस्तुत किए जाएं, ताकि जून 2021 से पहले न्यासियों को कार्यक्रम मूल्यांकन एवं प्रस्तुति के लिए पर्याप्त समय मिल सके।

हम मंडल नेताओं से अनुरोध करते है कि वे अपने प्रयासों के लिए TRF से मान्यता प्राप्त करने हेतु 20 फरवरी, 2021 से पहले अपने आवेदन पत्र प्रस्तुत करने के लिए क्लबों/रोटेरियनों को प्रोत्साहित करें।

आगे के स्पष्टीकरण और जानकारी के लिए SAO पर *reeti.mondal@rotary.org* पर संपर्क करें।

ऑनलाइन योगदान - याद रखने योग्य बिन्दु

- डेबिट कार्ड विकल्प - *www.rotary.org* या *www.rotary@foundationindia.org* के माध्यम से ऑनलाइन योगदान करते समय, भुगतान करने के लिए सदस्य 'क्रेडिट कार्ड' वाले लिंक का उपयोग करके भी क्रेडिट कार्ड या डेबिट कार्ड का उपयोग कर सकते है।
- गैर-रोटेरियन सदस्य द्वारा योगदान - जब आपके क्लब/मंडल के किसी गैर-रोटेरियन सदस्य द्वारा ऑनलाइन योगदान दिया जाता है, तो उनसे अनुरोध करें कि वे क्लब के विवरण के साथ ऑनलाइन पुष्टि संख्या को risao.rotary.org के साथ साझा करें ताकि इस योगदान को संबंधित क्लब के साथ अंकित किया जा सके।

कोविड काल में सार्वजनिक छवि

इस अनोखे समय के दौरान व्यस्तता के स्तरों को डिजिटल रूप से ऊँचा बनाए रखने के लिए यहाँ कुछ सुझाव दिए गए है:

- दूरस्थ शिक्षण और रो ई के ऑनलाइन टूल और संसाधनों तक पहुँचने हेतु लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए समय निकालें
- वॉइस और विज़ुअल आइडेंटिटी गाइडलाइंस (*My Rotary* में ब्रांड सेंटर में उपलब्ध) में वर्णित रोटरी ब्रांडिंग गाइड का उपयोग करके सुनिश्चित करें कि आपकी क्लब वेबसाइट अप-टू-डेट हो।
- फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम या लिंक्डइन जैसे किसी भी एक प्राथमिक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का चयन करें और इसे नियमित रूप से अपडेट करें।
- आभासी तकनीक के माध्यम से जनता को बताएं कि आपका क्लब क्या कर रहा है।
- सक्रिय रूप से सेवा करने वाले अपने सदस्यों की तस्वीरें लेने की कोशिश करें, या तो मास्क के बिना उनके घरों में या मास्क के साथ बाहर समुदाय में।
- आप फेसबुक लाइव, यूट्यूब लाइव या पेरिस्कोप जैसे उपकरणों का उपयोग करके अपनी सेवा गतिविधियों को लाइव स्ट्रीम भी कर सकते है। अपने लाइव-स्ट्रीम किए गए ईवेंट रिकॉर्ड करें और उन्हें अपने क्लब के सोशल मीडिया चैनलों और वेबसाइट पर पोस्ट करें।
- आपके समुदाय में आपके क्लब को प्रत्यक्ष रखने के लिए सदस्यों और जनता दोनों के साथ निरंतर संचार आवश्यक है। आभासी बैठकों के स्क्रीन शॉट लेकर उसे डिजिटल चैनलों पर पोस्ट करें। क्लब बुलेटिन और समाचार पत्र पोस्ट करें, भले ही आप व्यक्तिगत रूप से बैठक न कर रहे हो।
- सबसे महत्वपूर्ण बात, सामाजिक और डिजिटल चैनलों पर सेवा परियोजनाओं को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करें।■

आतुस गाँव में एक स्वास्थ्य शिविर

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब आगरा ताज सिटी, रो ई मंडल 3110, ने रैनबो अस्पताल और मयंक एजेंसी के साथ साहचर्य में आगरा से 15 किमी दूर स्थित आतुस गाँव में एक चिकित्सीय शिविर आयोजित किया। महिलाओं और बच्चों सहित 300 से अधिक ग्रामीण इससे लाभान्वित हुए। उन्हें रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली दवाइयाँ भी प्रदान की गई। चूंकि अधिकांश आगंतुक कोविड से संबंधित अधिक जानकारी चाहते थे, इसलिए डॉक्टरों ने इस विषय पर एक जागरूकता सत्र आयोजित किया। अधिक चिकित्सीय जांच की आवश्यकता वाले मरीजों को आगरा के अस्पतालों में रेफर किया गया। ■

Wordsworld

New year, old experiences

Sandhya Rao

History is a spinning wheel, the future lies ever-present in the past.

When *Schindler's List* the film was released, in 1993, it created a sensation. What many don't know is that the manner in which this true story was unearthed by a writer in Australia is even more sensational. Thomas Keneally then went on to publish the book, *Schindler's Ark*, in 1992. I was reminded of Oskar Schindler by the book I am currently reading: *The Last Train to London* by Meg Waite Clayton, published in September 2019. To quote from the book's blurb, it is: '…set in the pre-World War II era, based on the true story of the Kindertransport rescue of ten thousand children from Nazi-occupied Europe — and of one brave woman who helped them escape.'

This woman is Truus (Geertruida) Wijsmuller, a Dutchwoman, who dares to go into Germany over and over again, crossing its tightly secured borders to smuggle children out even as countries across Europe pull down their shutters, refusing to take in refugees desperate to escape the Nazi occupation. When the British government — alone among many countries — decides to open its doors to take in child refugees, Tante Truus — Aunty Truus — steadfastly remains true to her efforts to save as many children as she can despite the huge dangers her mission involves.

Clayton's story about this extraordinary woman and her even more extraordinary efforts is marvellously told. It's not just an account of the rescue missions, amazing in themselves. Woven into its fabric is a parallel story, that of young Stephan Neumann, whose father is a chocolatier proudly carrying on the family tradition. His mother is sick, dying in fact, his little brother Walter's best friend is a stuffed toy called Peter Rabbit, and he himself is a budding playwright, admirer of Stefan Zweig, among the most famous Austrian writers of his time. His family is Jewish, cultured and rich, a fact he's forced to come to terms with only when the Anschluss, the takeover of Austria by Hitler, becomes real. Apart from the danger his family is put into, Stephan experiences being 'distanced' from his best friend, Zofie-Helene, a mathematics genius whose mother is editor of an anti-Nazi newspaper.

Be warned: it's a slow read because the fine details take time and attention to comprehend, the nuances to absorb, and you begin to realise things you may not have in all your years of reading Jewish writers and writings about the Holocaust. Your heart is in your mouth when, on numerous occasions, Truus is called upon to negotiate tricky situations when crossing the border, or rather, borders, because there's the border out of Germany and there's the border into the Netherlands, where she lives and where she must first take the children. When she somehow manages to get visas for the children and the party of two adults and 30 children are ready to board the train, she finds a baby thrust into her arms. 'Take her,' the desperate mother tells Truus. When Nazi soldiers search her boot for contraband, live and otherwise, she must maintain a calm exterior while inside she is trembling like jelly because three children, little sisters, are hidden beneath her skirt and the floorboard of the car. On occasion she notices just how young these soldiers are, children themselves, almost innocent in their loyalty to the cause of the Third Reich. It is heartrending when Stephan discovers that Dieter, a friend who played so many roles in his plays, turns against him and dons the Nazi uniform without a second's thought.

He then accompanies soldiers into the Neumann household to destroy it in a show of strength. Dieter feels guilty but his loyalty to Hitler overrides everything and even as he expresses concern for Stephan's mother, he is desperate to catch Stephan who has disappeared. You see the tragedy, the injustice, the cruelty, the pathos, the exploitation. Everywhere you see dualities.

The idea of contradictions is brilliantly delineated in the style of writing and the language itself, and seems to bounce off the characters of Zofie and Stephan, so different from each other yet not apart. You not only find yourself drawn to the story, you stop every now and then to marvel at the images, especially the paradox of the real and the unreal, as in theatre, or the taste of chocolates, or watching a Jewish children's home burning in the snow. Tante Truus saves countless children; she herself is childless, having miscarried many times. All this surfaces delicately, like froth that leaves traces on the lips after they have smacked on a much-relished milkshake.

How did the author chance upon this story? From her own child! Her son was a member of a theatre group; its director had wanted his kids to write a play about the Kindertransport effort since few people seemed to know about it. She noticed how silent her son had become after he had interviewed some people who had been so transported. She writes how the 'book was inspired by and is meant to honour Truus Wijsmuller-Meijer and the children she rescued, as well as the many people who made the Kindertransports possible. I have done my best to remain true in spirit to the facts of the Anschluss, Kristallnacht, and the shockingly rapid change in Vienna society in the few months between the two, including the role of the then-young and ambitious Adolf Eichmann, and the British and Truus's efforts to bring about the first Kindertransport from Austria. But as this is fiction rather than a history, I have taken smaller liberties in the interest of story.'

It is true, though, that most of the rescued children never saw their parents again. *The Guardian* of November 6, 2018, has an article by Stephen Moss with a photograph of Jewish children arriving in London in 1938. The article speaks of an exhibition opening at the Jewish Museum in London that featured the stories of six children who had come like this to the UK from Germany. 'I visited each one of them [then in their 80s and 90s] in their homes and heard their remarkable, moving, often tragic testimonies,' writes Moss. 'Some never saw their parents again; all suffered the pain of separation; some were so traumatised they couldn't speak of what had happened to them for decades afterwards — not even to their children. But in each the light of defiance, humour and commitment to life shines through. And each now goes into schools to talk to young people about what they and their parents suffered, testifying both as an act of remembrance towards their parents but also as a warning to the next generation that intolerance, hatred and scapegoating of minorities are ever-present threats.'

Truus Wijsmuller-Meijer in 1965.

We know this better than ever today: that intolerance, hatred and scapegoating of minorities are ever-present threats. That even as many cried 'never again' after the holocaust years, we see history repeating itself in Kosovo, Bosnia, Chechnya, Sudan, Sri Lanka, Kashmir, Nagaland, Syria, Columbia…. In practically every part of the world we see people turning against people simply because they can. History and records tell us that the mass extermination of Jews was the result of a carefully planned policy; orchestrated anti-Jewish violence was part of what was called 'the Final Solution'. We know, too, that history is an ever-spinning wheel.

That's why it is important to read books such as *The Last Train To London* — to read and remember the past, so that we can imagine a future for our children. So that children will never need to be separated from their parents again, even in the name of mercy. ■

वेट ट्रेनिंग महिलाओं में मांसपेशियों का निर्माण करती है

शीला नंबीयार

महिलाओं को अपने स्वास्थ्य और सेहत पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। अपनी खुद की तन्दुरस्ती और स्वास्थ्य की उपेक्षा उनके जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित कर अनावश्यक ही जटिलताओं को जन्म देती है। वर्षों तक वजन का लगातार बढ़ना भी कई समस्याओं में से एक है।

कितनी बार हमने अपने आप को तसल्ली दी है कि उम्र के साथ वजन का बढ़ना सामान्य बात है? कितनी बार लोगों ने हमें बताया है कि कई प्रकार के गैर-संचारी रोग (जैसे मधुमेह, उच्च रक्तचाप, अवसाद, हृदय रोग) बढ़ती उम्र का हिस्सा हैं इसलिए स्थायी रूप से गोलियों, औषधि और प्रक्रियाओं के साथ इनके इलाज की आवश्यकता होती है। कितनी बार हमें बताया गया और हमने मान भी लिया है कि किसी पुरानी बीमारी का कारण अक्सर मवंशानुगतफ होता है और यह होना लाज़मी है क्योंकि ये बीमारी हमारे माता-पिता को भी थी?

इन सभी बीमारियों को मसामान्यीकृतफ कर इन के आगे समर्पण कर स्वीकार कर लिया है। लेकिन मुझे संशय है कि इस समर्पण का कारण यह है कि हम वास्तव में अपने स्वास्थ्य पाठ्यक्रम के बारे में या तो जानते नहीं या उसे बदलना नहीं चाहते हैं। महिलाएं अपनी (दुरस्ती) फिटनेस की उपेक्षा करती हैं। उनके साथ हमेशा कुछ ना कुछ ऐसा होता है जो उनके स्वयं की सेहत से अधिक महत्वपूर्ण होता है जैसे परिवार, करियर, सामाजिक कार्य इत्यादि। कभी-कभी अधिक वजन या विभिन्न डी - जेनरेटिव बीमारियों के कारण अस्वस्थ रहने की स्थिति में यह सहज पलायन की रणनीति बन जाती है। यह सामान्य बात नहीं है और इसे स्वीकार्य नहीं होना चाहिए।

अभी सिर्फ फिटनेस और वजन की बात करें, (स्वास्थ्य के और भी पहलू हैं जिन पर मैं चर्चा नहीं कर रहा), जैसा कि हम जानते हैं, 35 के बाद प्रति वर्ष हमारा वज़न 1 पौण्ड बढ़ता है और ½ पौण्ड मसल्स नष्ट हो जाती हैं (यदि आप पहले शारीरिक गतिविधि, व्यायाम इत्यादि नहीं करते थे)। इन संख्याओं पर मत जाइये पर आपको 60 वर्ष की आयु तक आपके शरीर की गुणवत्ता के बारे में (वसा के अनुपात में मांसपेशियों की मात्रा की) जानकारी तो होगी। अगर यह जान लें कि मांसपेशियों का कम होना और वसा का बढ़ना शरीर की कार्यक्षमता को किस प्रकार प्रभावित कर सकता है, सिर्फ दिखने में ही नहीं, तो संभवतः ये आपको जगाने और शरीर पर ध्यान देने में मदद कर सके।

मांसपेशियों का काम गति देना या हरकत करना है। अतिरिक्त शारीरिक क्षमता के अलावा पर्याप्त मांसपेशियां अतिरिक्त वजन को नियंत्रित रखने में भी सहायक है। मांसपेशियां स्वस्थ हों तो आपका शरीर मजबूत बना रहता है, आप अपने रोजमर्रा के काम आसानी से कर पाते हैं। यदि मांसपेशियों की क्षमता और उनका वज़न कम हो जाता है तो रोज़मर्रा के काम नहीं किए जा सकते। वसा का संचय केवल उसके दिखने से सम्बंधित नहीं है। यह दिन-प्रतिदिन के कार्यों में भी बाधा डालता है, सूजन और विषाक्त पदार्थों के भंडारण का भी कार्य करता है। अतिरिक्त वजन हड्डियों के जोड़ों और रीढ़ पर बहुत दबाव डालता है, क्योंकि वहां मजबूत मांसपेशियां नहीं होतीं। यह दिल और फेफड़ों पर भी दबाव बनाता है, और यही वजह है कि अधिक वजन वाले व्यक्ति सीढ़ियां चढ़ते

समय या कोई भी काम करते समय सांस लेने में तकलीफ महसूस करते हैं क्योंकि दिल और फेफड़ों को ज़्यादा मेहनत करनी पड़ती है।

शरीर का अतिरिक्त वजन उठाने में अक्षम और अस्वस्थ मांसपेशियों से मदद नहीं मिलने की वजह से दिल तेजी से और कभी-कभी अनियमित रूप से भी धड़कने लगता है। सांस की तकलीफ श्वसन तंत्र की उस अवस्था का परिणाम है जिसमें तंत्र, मांसपेशियों द्वारा माँगी गई अतिरिक्त ऑक्सीजन की पूर्ती करने की कोशिश करता है। मांसपेशियों तक आवश्यक मात्रा में ऑक्सीजन नहीं पहुँचने के कारण शुरु में थकान, खिंचाव और दर्द होता है क्योंकि वे ऑक्सीजन के बिना ही काम करने की कोशिश करते हैं।

एक बार जब आप व्यायाम करना शुरू कर देते हैं, तो आप बेहतर मूड में रहते हैं, दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों या करियर में बिना तनाव के अधिक कुशलता से कार्य करते हैं।

ऐसा नहीं है कि इसमें सुधार नहीं हो सकता। ठीक होने की सम्भावना हमेशा रहती है, अत्यंत गंभीर मामलों में भी। मानव शरीर के भीतर पुनर्वास की अपार क्षमता है जो इसे इतना खास बनाती है। जितनी जल्दि हम ये प्रक्रिया को शुरू कर देंगे, यह उतनी ही सरल और सहज होगी, परिणाम भी उतने ही बेहतर होंगे। फिटनेस प्रोग्राम शुरू करने के लिए हर उम्र सही उम्र है। अध्ययन से पता चला है कि 90 की उम्र में भी शक्तिवर्धन के लिए वजन उठाने के साथ कुछ हृदय सम्बन्धी व्यायाम फायदेमंद रहते है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, स्वस्थ रहने के लिए हमें नियमित रूप से केवल 30 मिनट व्यायाम (पैदल चलना, दौड़ना, साइकिल चलाना, एरोबिक्स इत्यादि) करने की आवश्यकता है। उन्होंने मांसपेशियों के नए ऊतकों के निर्माण, उन का सामर्थ्य और शक्ति बढ़ाने के लिए सप्ताह में दो बार वेट ट्रेनिंग भी शामिल किया है, जो फिटनेस का महत्वपूर्ण पहलू है।

मांसपेशियां बाहरी तनाव को प्रतिक्रया देती हैं या मप्रतिरोधफ जैसा कि भार प्रशिक्षण (वेट ट्रेनिंग) में कहा जाता है बशर्ते तनाव उचित दिशा में हो और आवश्यक गहनता लिए हो, यह बताना बहुत ज़रूरी है, वरना संभव है कि कोई 70 साल की महिला को उसके घर के फर्नीचर को इधर से उधर सरका कर व्यायाम करने की सलाह दे दे। इसलिए क्या और कितना व्यायाम किया जाना चाहिए यह महिला की उम्र, लिंग, शारीरिक अवस्था, लक्ष्य, स्वास्थ्य के इतिहास और उसकी सक्रियता के स्तर पर निर्भर करता है और इसे ध्यान में रखते हुए ही प्रशिक्षण का निर्णय किया जाना चाहिए।

अमूमन सभी महिलाओं को अपनी मांसपेशियाँ और ताक़त बढ़ाने के लिए वेट ट्रेनिंग करनी चाहिए। 30 के बाद तो ये और भी प्रासंगिक हो जाता है जब मसल मास (मांसपेशियों का वज़न) कम होने लगता है और महिलाओं में जोड़ों के दर्द (ऑस्टियोपोरोसिस) की संभावना बढ़ जाती है। मांसपेशियां मजबूत रहने से शरीर के जॉइंट्स यानी हड्डियों के जोड़ भी अच्छी हालत में रहते हैं। वेट ट्रेनिंग मांसपेशियों का क्षय और ऑस्टियोपोरोसिस की रोकथाम करता है।

जब कोई व्यक्ति महिला से भार प्रशिक्षण (वेट ट्रेनिंग) की बात करता है, तो उसे झटका भले ना लगे या महिला रोष प्रकट ना करे तो भी सामने वाले को थोड़ा भय तो रहता ही है। सच तो यह है, जितना लगता है यह उतना भयावह नहीं है। कम वजन के साथ एक छोटी शुरुआत की जा सकती है या अपने शरीर के वज़न के अनुसार, फिर धीरे धीरे वजन बढ़ाकर मांसपेशियों को चुनौती दे सकते हैं। जैसे-जैसे ताक़त और आत्मविश्वास बढ़ता जाता है, व्यक्ति को अपने भीतर शारीरिक स्फूर्ति की अनुभूति होने लगती है। सीढ़ियां चढ़ने, उतरने, फर्श पर नीचे बैठ कर उठने या फर्श पर बैठने जैसे कार्य आसानी से होने लगते हैं।

थॉमस अल्वा एडिसन ने एक बार कहा था - अगर हम उन सब चीजों को कर लें जिसे करने में हम सक्षम हैं, तो हम स्वयं आश्चर्य चकित रह जाएंगे। हमारी शारीरिक क्षमता के बारे में भी यही सच है। अगर कोई असफल होने से नहीं डरता और उसे उचित पेशेवर मार्गदर्शन मिलता रहे, तब तक वह किसी भी उम्र में फिटनेस के तीन मुख्य आयाम - सहनशक्ति, ताक़त और लचीलेपन के क्षेत्र में अपनी प्रगति देख सकता है। नियमित व्यायाम से वज़न स्वतः ही कम होता है, और यह इसका एकमात्र लाभ नहीं है ।

एक बार ये निश्चित कर लें, आपका स्वास्थ्य और तंदुरस्ती महत्वपूर्ण है। फिटनेस का परिचय इतनी सकारात्मक ऊर्जा पैदा करता है कि यह आपके जीवन के हर क्षेत्र में घुस जाता है। एक दिन में कम से कम एक घंटा, या आधा घंटा अपने लिए ज़रूर निकालिये। छोटी शुरुआत करें और अपने स्वास्थ्य में सुधार करते हुए आंतरिक प्रगति करें, शारीरिक और भावनात्मक दोनों। आप देखेंगे कि एक बार जब आप व्यायाम करना शुरू कर देते हैं, तो आप बेहतर मूड में रहते हैं, दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों या करियर में बिना तनाव के अधिक कुशलता से कार्य करते हैं।

इसका ताल्लुक जीवन की गुणवत्ता से है महज लम्बी उम्र से नहीं।

लेखिका एक जीवन शैली चिकित्सक है।
sheela.nambiar@gmail.com
www.drsheelanambiar.com

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब चिदंबरम सेंट्रल - रो ई मंडल 2981

कोविड मरीजों को स्थानांतरित करने के लिए कुड्डालोर जिला कलेक्टर चंद्रशेखर सकामुरी को चार एंबुलेंस सौंपी गई। शेमफोर्ड फ्यूचरिस्टिक स्कूल के साथ साझेदारी में ₹6 लाख की लागत से वाहनों का प्रबंध किया गया।

रोटरी क्लब दिल्ली मंथन - रो ई मंडल 3011

क्रिसमस जूता दान के अंतर्गत 300 से अधिक जोड़े जूते एकत्र किए जाये जिनका पुनर्नवीनीकरण किया जायेगा वंचित लोगों में बाँट दिया जायेगा।

रोटरी क्लब सलेम साउथ - रो ई मंडल 2982

SKS अस्पताल के सहयोग से बोधि मारम वृद्धाश्रम में एक एनसीडी शिविर आयोजित किया गया। लगभग 75 लोगों की बीमारियों की जांच की गई और उन्हें दवाएं दी गई।

रोटरी क्लब मनमाड - रो ई मंडल 3030

क्लब के सदस्यों ने विसापुर में एक जिला परिषद स्कूल में पौधे लगाए, और उन प्रजातियों की रक्षा के लिए ट्री गार्ड वितरित किए।

रोटरी क्लब गंदारवाकोट्टई - रो ई मंडल 3000

पुलिस से अनुरोध करने के बाद दीवाली की पूर्व संध्या पर भीड़ का प्रबंधन करने हेतु स्थानीय व्यापार मंडल के सहयोग से गांधी प्रतिमा के पास दो वॉच टॉवर लगाए गए।

रोटरी क्लब देवास - रो ई मंडल 3040

उन रोगियों की नि:शुल्क मोतियाबिंद सर्जरी की गई, जो उपचार का खर्च नहीं उठा सकते।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब अलवर - रो ई मंडल 3053

पक्षियों को पुरजन विहार गार्डन में पानी की व्यवस्था के साथ उचित ऊंचाईयों पर पिंजरों में रखा गया ताकि वे सुरक्षित महसूस कर सकें। पक्षी संरक्षण अभियान को और अधिक विस्तारित किया जाएगा।

रोटरी क्लब श्रीगंगानगर ईस्ट - रो ई मंडल 3090

डीजी विजय अरोड़ा ने पांच सरकारी स्कूलों को ₹2.5 लाख की लागत से 75 बेंच सौंपीं। यह फर्नीचर पीडीजी संजय गुप्ता द्वारा अपने दिवंगत माता-पिता की याद में प्रायोजित किया गया।

रोटरी क्लब वापी - रो ई मंडल 3060

एक रक्तदान वैन - ब्लडमोबाइल - को क्लब द्वारा हरी झंडी दिखाई गई। यह वाहन रक्त एकत्रित करने के लिए दूरदराज के क्षेत्रों का दौरा करेगा।

रोटरी क्लब बरेली मेट्रो - रो ई मंडल 3110

अपनी कोविड-राहत परियोजनाओं के अंतर्गत क्लब के अध्यक्ष अश्वनी सक्सेना द्वारा जरूरतमंद लोगों को लगभग 500 फेस मास्क वितरित किए गए।

रोटरी क्लब जम्मू त्रिकुटा - रो ई मंडल 3070

झुग्गी के बच्चों द्वारा ग्लोबल हैंडवाशिंग डे को चिह्नित करने का संकल्प लिया गया। उनके लिए एंड पोलियो पर एक जागरूकता सत्र भी आयोजित किया गया।

रोटरी क्लब ओमेरगा - रो ई मंडल 3132

घर के बने व्यंजनों के साथ एक कोविड भोजन स्टाल की स्थापना की गई ताकि एक वंचित मां को अपने स्वयं का उद्यम शुरू करने में मदद मिल सके।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब निज़ामाबाद - रो ई मंडल 3150

क्लब की सामुदायिक विकास पहल के तहत जरूरतमन्द महिलाओं को दो सिलाई मशीनें दान की गई ताकि वे एक अच्छी आय अर्जित कर सकें।

रोटरी क्लब कुंडापुरा रिवरसाइड - रो ई मंडल 3182

मंडल परियोजना 'सड़कों को सुरक्षित बनाएं' के अंतर्गत NH-66 पर मोटर चालकों को जागरूक करने के लिए एक सार्वजनिक छवि विज्ञापन बोर्ड लगाया गया। पीडीजी अभिनंदन शेट्टी ने होर्डिंग का उद्घाटन किया।

रोटरी क्लब भालकी फोर्ट - रो ई मंडल 3160

क्लब के सदस्यों ने अर्धविकसित घरों में रहने वाले डोंबरी समुदाय के 300 जरूरतमंद परिवारों को ऊनी कंबल और वस्त्र दान किए।

रोटरी क्लब मद्दूर - रो ई मंडल 3190

छोटे किसानों को स्थायी आजीविका प्रदान करने के लिए मंडल की एक परियोजना, *कल्पवृक्ष* योजना के तहत किसानों को नारियल के पौधे दिए गए।

रोटरी क्लब रामतीर्थ - रो ई मंडल 3170

विधायक आनंद न्यामगौड़ा की मौजूदगी में एक एंड पोलियो साइकिल और बाइक रैली आयोजित की गई। रैली में लगभग 25 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

रोटरी क्लब कोचीन ईस्ट - रो ई मंडल 3201

प्रोजेक्ट *विद्या दान* के तहत नोचिमा गांव के 15 बच्चों को 1 लाख की लागत से कंप्यूटर टैबलेट वितरित किए गए।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब चेरथला ग्रीन सिटी - रो ई मंडल 3211

विश्व मधुमेह दिवस को चिह्नित करने के लिए रोटरी हॉल में एक चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया और मरीजों को एक डॉक्टर द्वारा एक अतिथि व्याख्यान दिया गया।

रोटरी क्लब चेन्नई मित्रा - रो ई मंडल 3232

क्लब की सामुदायिक स्वास्थ्य पहल के अंतर्गत वरिष्ठ नागरिकों के लाभ के लिए कक्कुम करंगल नामक एक वृद्धाश्रम में एक नेत्र शिविर आयोजित किया गया।

रोटरी क्लब तिरुनेलवेली - रो ई मंडल 3212

दिवाली की पूर्व संध्या पर, रोटेरियन सेंथिल कुमार द्वारा पलायमकोट्टई के एक अनाथालय, उधवुम उळ्ळांगल वल्लार इलम के रहवासियों के लिए ₹18,000 मूल्य के पटाखे, दोपहर का भोजन और ड्रेस सामग्री प्रायोजित की गई।

रोटरी क्लब बरहमपुर - रो ई मंडल 3262

दूरस्थ क्षेत्रों, झुग्गी बस्तियों और आवासीय कॉलोनियों में कोविड जैसी महामारी में क्या करें और क्या न करें की जानकारी वाले पोस्टर और ऑडियो संदेश के साथ जागरूकता पैदा करने के लिए एक तीन-पहिया वाहन का उपयोग किया गया।

रोटरी क्लब पर्णमबुत - रो ई मंडल 3231

पीडीजी के जवारीलाल जैन और अन्य रोटेरियनों की मौजूदगी में श्रम और वक्फ नीलोफर कफील के लिए राज्य मंत्री द्वारा 50 लाभार्थियों को चावल के पैकेट वितरित किए गए।

रोटरी क्लब कलकत्ता मैग्नम - रो ई मंडल 3291

टीकाकरण का संदेश फैलाने के लिए ऑटो पर फिट किए गए स्पीकर से निगम वार्ड में पोलियो प्रतिरक्षण अभियान चलाया गया।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित

Rotary District : 2982

Rotary Opens Opportunities

TEAM ACHIEVERS Rotary

VARNAJAALAM

ROTARY DISTRICT CONFERENCE 2020-2021

ROTARY DISTRICT - 2982

★ MAY 1 & 2 - 2021 ★

IDA SCUDDER AUDITORIUM
(NEAR TO VELAMMAL MEDICAL COLLEGE)
ANUPPANDADI, MADURAI - TUTICORIN RING ROAD
MADURAI

K.S.VENKATESAN
Dist.Governor 20-21
98432 36679

V.SIVAKUMAR
Dist.Conference Chairman
99949 69012

On the racks

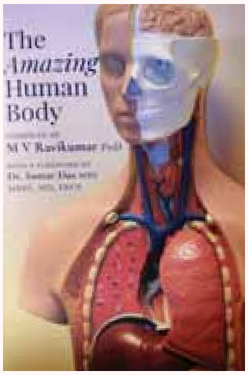

The amazing human body

Author : **MV Ravikumar**
Publisher : **Kaveri Trust**
Pages : **76; ₹99**

A compilation of interesting facts about the various organs and systems of the human body. Written in simple English, the book talks about things that go on in our bodies, that we have no idea about as we go on about our day. Be it your new found high in the morning or how many times your heart beats a day. It's easy to forget how amazing the internal organs, eyes, or even the basic building blocks of life are. This book works as a gentle reminder on how fascinating each part of our body can be.

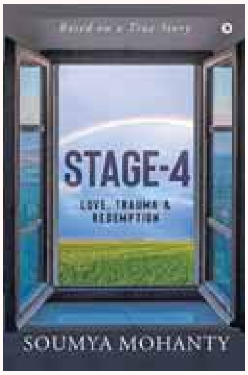

Stage - 4: Love, Trauma & Redemption

Author : **Soumya Mohanty**
Publisher : **Notion Press**
Pages : **278; ₹320**

Rupa, a simple, beautiful girl in love with the author, is diagnosed with stage-four cancer. Everything comes to a standstill for the couple as they begin to fight the cancer. Written in an autobiographical mode, the book talks about love, life and what it takes to move on. The author talks about the struggle of a couple while dealing with an exhausting routine and doing everything it takes to save the love of your life. We follow the couple through their visits to the doctors, to temples and the partner waiting outside the ICU with hope and despair at the same time.

Hamnet

Author : **Maggie O'Farrell**
Publisher : **Tinder Press**
Pages : **372; ₹999**

Hamnet is an imaginative take on Shakespeare's love life ,Agnes, the early days of their marriage, and the death of one of his children due to the bubonic plague. This is the story of Agnes and the emotional and psychological challenges of bereavement she faces. The book takes us back and forth from 1580 to 1599, the time where Shakespeare wrote his play *Hamlet*. At its heart, this is a story about grief and how a mother finds her way around it. Interestingly not once does the author call the playwright by his name in this book. The story includes magical beliefs, myths and superstitions of the time.

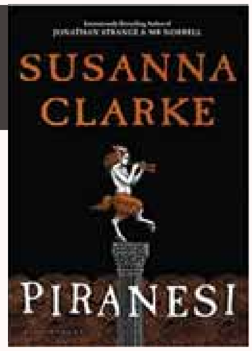

Piranesi

Author : **Susanna Clarke**
Publisher : **Bloomsbury**
Pages : **245; ₹570**

Piranesi is alone and has no great memories, but curiously is content inside his big house, which has endless halls and countless rooms. The house and the world are one and the same for him. While birds have built an entire town for themselves in the house's upper halls, stormy tides flow through its lower levels. He wanders the empty halls and courtyards, documenting everything in his journal with satisfaction. He sustains himself with catching fish for food and burning dried seaweed during the winters. There is one other person — a man called The Other who visits Piranesi and needs his help to unravel a secret knowledge, revealing terrifying truths and a world beyond the labyrinth house.

Compiled by Kiran Zehra

मजबूत विचारों की अनुपस्थिति मुझे महिलाओं के मध्य लोकप्रिय बनाती है!

LBW

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

बाकी सभी लोगों की तरह मैंने भी इतने सालों में कई दोस्त बनाए है, लेकिन अब उनमें से कुछ ही बचे है, अगर आप जानना चाहते है तो कुल 27। ये बचे हुए दोस्त पांच व्यापक श्रेणियों में आते है: अर्थशास्त्री, पत्रकार, लेखाकार, नौकरशाह और इतिहासकार। अजीब बात है कि कोई भी इंजीनियर और डॉक्टर मेरा दोस्त नहीं है। मैं ऐसे कुछ लोग को जानता हूँ लेकिन उन्हें दोस्त नहीं कहा जा सकता। जैसा कि उम्मीद की जा सकती है, मेरे दोस्तों में से अधिकांश पुरुष है, लेकिन पांच महिलाएं भी है। वे टिके हुए है क्योंकि वे चीजों को अलग ढंग से देखते है। उदाहरण के लिए, पुरुषों के लिए उनका अहंकार पहले आता है लेकिन महिलाएं इसे अंत में देखती है। वे इसके बजाय सामान्य ज्ञान को महत्व देते है। लेकिन लिंग भेद एक तरफ कर दे तो, यह देखना बहुत दिलचस्प होता है कि उनका पेशेवर प्रशिक्षण निर्धारित करता है कि कैसे ये मित्र - पुरुष और महिलाएं - चीजों को देखते है।

अर्थशास्त्री हर चीज़ को दक्षता के दृष्टिकोण से देखते है। वे पूछते रहते है कि क्या चीजों को करने का कोई बेहतर तरीका है। पत्रकार हर चीज़ को एक संभावित कहानी के रूप में देखते है। इसका मतलब है कि वे आमतौर पर उबाऊ नजर आते है। लेखाकार अधिक डेटा के लिए पूछते रहते है। यह चिड़चिड़ा हो सकता है क्योंकि अक्सर वे किसी चर्चा में शामिल होने से इनकार करते है। इतिहासकार मानते है कि तकनीक को छोड़कर दुनिया में कुछ भी नया नहीं है। विषय के आधार पर वे ऋग वेद से शुरुआत करते है। लेकिन जो नौकरशाह है वे हर किसी को चिढ़ दिलाते है क्योंकि वे सिद्धांत के पहलू पर असहमत होते है। आप इतिहास, अर्थशास्त्र, विज्ञान, प्रौद्योगिकी या डेटा के आधार पर उनके साथ किसी भी बिंदु पर बहस नहीं कर सकते। उन्हें जल्दी बुरा भी लग जाता है। और उनके अनुसार, एक पत्रकार के रूप में, मैं सिर्फ एक सरदर्द हूं।

पिछले सात महीनों से ज्यादातर चर्चा कोरोना वायरस को लेकर हो रही है। जिन विभिन्न तरीकों से इस समस्या को समझा गया उनका निरीक्षण करना आकर्षक है। इतिहासकार समय की शुरुआत से ही सभी महामारियों के बारे में बात करते है और कहते है कि यह सब मौके की बात है। अर्थशास्त्री अनुसंधान, उत्पादन, मूल्य निर्धारण और वितरण की लागतों पर चर्चा करते है। लेखाकार बस असंतोष के साथ देखते है क्योंकि उनके पास कोई डेटा नहीं होता जिसके अनुसार वे बात करें। पत्रकार असत्यापित और सत्यापित न की जा सकने वाली अफवाहों पर गप मारते है और नौकरशाह यह कहते रहते है कि नियम इस चीज़ की या उस चीज़ की अनुमति कैसे नहीं देते।

पुरुषों के लिए उनका अहंकार पहले आता है लेकिन महिलाएं इसे अंत में देखती है। वे इसके बजाय सामान्य ज्ञान को महत्व देते है।

पहले कुछ हफ्तों तक सभी ने इस बारे में बात की कि भारत में कितने लोग मरेंगे। फिर, जब मृत्यु दर गिरने लगी, तो इस बात पर चर्चा होने लगी कि कितने लोग संक्रमित होंगे। फिर जैसे ही टीके के विकास की खबरें आई, तो इस बात पर चर्चा होने लगी यह टीका इस साल या अगले साल तक उपलब्ध होगा कि नहीं। और अब चर्चा इस बात पर है कि हमें कब तक इंतजार करना होगा। इस सब में, पत्रकार के बाद नौकरशाह ही सबसे अधिक खीज दिलाते है, क्योंकि दोनों के पास ही कहने के लिए कुछ उपयोगी नहीं होता है। इतिहासकारों ने टीके के इतिहास और अर्थशास्त्रियों ने घर से काम करने पर अपने विचारों से सभी को प्रसन्न किया। लेखाकार चुपचाप आश्चर्यचकित होकर बेशक सिर्फ यह सोच रहे होंगे कि वे कैसे इन बेवकूफ लोगों के मित्र हो सकते है।

मेरी समस्या यह रही है कि मैं सब कुछ हूं और मैं आमतौर पर हर किसी की हर बात से सहमत होता हूं। तो दूसरे सोचते है कि मैं बहुत बुद्धिमान हूं। सच्चाई यह है कि मैं एक मजबूत दृष्टिकोण रखने की परवाह नहीं करता। साथ ही, कोई व्यक्ति कितनी बुरी तरह से संक्रमित होता है, यह भाग्य की बात है। उदाहरण के लिए, तीन करीबी रिश्तेदार संक्रमित हो गए। दो 90 वर्ष से अधिक के थे और ठीक है। एक सिर्फ 60 वर्ष के थे और उनकी मृत्यु हो गई। मुझे लगता है कि चूंकि यह एक वायरस है, इसलिए यह कभी न कभी उन सभी को संक्रमित करेगा जो मास्क, सैनिटाइज़र और भीड़ से बचने की सावधानी नहीं बरतते। यह सामान्य ज्ञान की बात है और इसने मुझे महिलाओं के मध्य अधिक लोकप्रिय बना दिया। चूंकि मैं अपने 70वें वर्ष के करीब हूं, मेरे लिए मजबूत विचार न रखने पर भी यह कोई बुरा प्रतिफल नहीं है। ■

संक्षेप में

बैग में दिल

दो बच्चों की मां, सलवा हुसैन (39) का बेहद अनोखा जीवनरक्षक ऑपरेशन किया गया और उसके सीने में पावर प्लास्टिक चेम्बर्स लगा दिए जिन से 2 पाईप बाहर

निकलते हैं और बाहर पम्प से जुड़े होते हैं। अब वह अपना दिल अपने शरीर में नहीं बल्कि बैग में रखती है। लगभग 7 किलो के बैग में पंप, मोटर और बैटरियां रहती हैं। दरअसल, बैटरियों के ज़रिये चलने वाली मोटर से यह पंप उन चैम्बर्स को हवा देता है। इस हवा से चैम्बर्स दिल की तरह काम करते हैं जिससे पूरे शरीर में रक्त का संचार होता है। उनकी देखभाल के लिए चौबीस घंटे एक व्यक्ति का निकट रहना आवश्यक है क्योंकि जब बैटरी ख़त्म हो जाती है तो बैक-अप मशीन से जोड़ने के लिए उसके पास केवल 90 सेकंड का समय होता है।

वैज्ञानिकों ने गले में नए अंग की खोज की

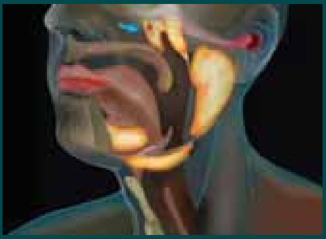

Livescience की एक रिपोर्ट के अनुसार, नीदरलैंड्स के वैज्ञानिकों ने प्रोस्टेट कैंसर पर शोध करते हुए अचानक से मानव शरीर में एक नए अंग की खोज कर ली है। गले के ऊपरी हिस्से में ग्रन्थियों का एक समूह है जिसके बारे में अभी तक मालूम नहीं था। वैज्ञानिकों ने शरीर में इस नए अंग को ट्यूबरियल लार ग्रंथियों (Tubarial salivary glands) का नाम दिया है। नीदरलैंड कैंसर इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं ने कम से कम 100 रोगियों पर अध्ययन करने के बाद इन ग्रंथियों की पुष्टि की है। कैंसर के इलाज के लिए इस खोज को महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि कैंसर का इलाज करते समय सिर और गले की रेडियो थेरेपी के दौरान डॉक्टर लार ग्रंथियों को विकिरण से बचाने की कोशिश करते हैं क्योंकि इन ग्रंथियों को नुकसान पहुँचने से जीवन की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।

दुनिया का सबसे वीरान घर

एक सफेद घर की तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट किए जाने के बाद वायरल हो गई हैं। इस तस्वीर में समुद्र के बीचों बीच एक द्वीप पर हरियाली से आच्छादित सुरम्य द्वीप पर एक खूबसूरत घर बना हुआ है। चारों तरफ नीले समुद्र से घिरे टापू पर बने छोटे से सफ़ेद वीरान घर ने रहस्यमय धारणाओं को जन्म दिया है। इस वीरान घर को अंतर्मुखी व्यक्ति के सपनों का घर भी कहा जाता है।

खिलौना क्लिनिक

अगर आपके बच्चे की पसंदीदा गुड़िया का एक पैर टूट जाता है या खो जाता है तो आप क्या करते हैं? यदि आप जापान में हैं तो अब आप इसे खिलौना क्लिनिक ले जा सकते हैं। टोक्यो स्थित यह क्लिनिक स्टफ्ड टॉयज खिलौनों को उनका मूल गौरव बहाल करने में पारंगत है। खिलौनों की मरम्मत लगभग 10 दिनों में 10,000 से 500,000 येन (₹7,000 - ₹3.56 लाख) में हो जाती है। ठीक हो जाने के बाद, घर लौटने की प्रतीक्षा कर रहे खिलौना रोगियों की तस्वीर क्लिनिक की वेबसाइट पर पोस्ट कर दी जाती है।

SRK के दिल्ली स्थित घर पर ठहरें

अब आप भी गौरी और शाहरुख खान के दिल्ली स्थित घर में रात गुजारने का मौका जीत सकते हैं। आपको बस इतना करना है कि Airbnb पर एक आवेदन पत्र भरना है और 100 से कम शब्दों में बताना है कि खुली बाँहों से स्वागत ओपन आर्म वेलकम की सटीक परिभाषा क्या है, जो अभिनेता के परिचित हस्ताक्षर पोज़ 'ओपन आर्म्स पोज़' से मेल रखती हो। इस घर को गौरी ने डिजाइन किया है जो खान दंपत्ति की जीवन यात्रा को दर्शाता है और उनके द्वारा दुनिया भर से संग्रहित की गई यादगार निशानियों और व्यक्तिगत उपहारों से भरा है। मेहमानों को शाहरुख खान के पसंदीदा स्वादिष्ट व्यंजन परोसे जायेंगे और वे शाहरुख खान की चुनिंदा फिल्मों का आनंद भी उठा सकेंगे और इन बहुमूल्य क्षणों की यादगार स्वरुप परिवार की ओर से एक व्यक्तिगत उपहार भी दिया जाएगा।

किरण ज़ेहरा द्वारा संकलित; एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा।

Regn. No. TN/CCN/359/2021-2023
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/21-23
Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹35
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on 1st of every month

Community Farming
A New Way to Grow Together

One Acre Plots
₹50/-
— PER SQ.FT. —

IDEAL FOR
Cashew Nuts
Teak
Sandalwood
Drumsticks

SAMRUDDHI FARMS - PALI

A Community Farming Initiative

Great location, Great investment opportunity.

Come join us & be a part of an agricultural society that we co-develop together!

Samruddhi Farms is spread over upwards of 300 acres of pristine agricultural land and overlooks the town of Pali, Raigadh area. Merely 100km from Mumbai, we offer you a plethora of professionally managed grow options.

- Individual plot holders will be provided membership by share certificates and possession letters and are transferable.
- The land here is perfectly suited for farming.
- Professional experts will ensure that all aspects of farming are managed & operated seamlessly. The managing committee of the society will oversee the operations.
- Build your own farm house
- Society may promote agro tourism by creating an experience of authentic contact with rural life.
- Generate TAX-FREE agricultural income.

LATIM LIFESTYLE & RESORTS LTD.
201, 2nd Floor, Navkar Plaza, Bajaj Road, Vile Parle (West),
Mumbai - 400056.
Mobile : 9820110539 / 9820772246

Scan
QR Code
for Direction